आषाढ़ शुक्ल - 7 ■ संवत 2081 ■ वर्ष - 11 ■ अंक - 344 ■ पृष्ठ - 8 ■ रु. 5/- चेन्नई » शनिवार » 13-07-2024 ■ www.dakshinbharat.com ■ Email : chennai@dakshinbharat.com

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

தக்ஷின் பாரத் ராஷ்ட்ரமத் | தினசரி ஹிந்தி நாளிதழ் | चेन्नई और बेंगलूरु से एक साथ प्रकाशित

5 भाजपा अलग सोच वाली पार्टी, इसे कांग्रेस की गलतियों से बचना चाहिए : गडकरी

6 रूस और ऑस्ट्रिया की यात्राओं से भारत की नई उड़ान

7 प्रचंड विश्वासमत हासिल करने में विफल, ओली बनेंगे नेपाल के नए प्रधानमंत्री

फर्स्ट टेक

आयुष्मान भारत योजना में 34.7 करोड़ कार्ड बने

नई दिल्ली/वार्ता। आयुष्मान भारत योजना में 34.7 करोड़ आयुष्मान कार्ड बनाए गए हैं और 7.35 करोड़ से अधिक अस्पताल में भर्ती हुए हैं, जिनके लिए एक लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि का भुगतान किया गया है। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जगत प्रकाश नड्डा ने शुक्रवार को राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (एनएचए) के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (पीएमजेएवाई) और आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) की समीक्षा की। बैठक में बताया गया कि आयुष्मान भारत योजना ने 34.7 करोड़ आयुष्मान कार्ड जारी किए गए हैं और 7.35 करोड़ लोग अस्पताल में भर्ती हुए हैं। इनके लिए एक लाख करोड़ रुपए से अधिक का भुगतान किया गया है। एनएचए की मुख्य कार्यकारी अधिकारी दीप्ति गौर मुखर्जी ने केंद्रीय मंत्री के समक्ष योजनाओं की मुख्य विशेषताओं, वर्तमान स्थिति और उनके संचालन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत प्रस्तुति दी।

दिल्ली के रेस्तरां में हत्या मामला : हमलावरों की पुलिस मुठभेड़ में मौत

नई दिल्ली/भाषा। हरियाणा पुलिस और दिल्ली अपराध शाखा ने शुक्रवार को एक संयुक्त अभियान में सोनीपत में तीन बदमाशों को मार गिराया। पिछले महीने पश्चिमी दिल्ली के एक रेस्तरां में एक व्यक्ति की हत्या में कथित तौर पर शामिल दो बदमाश भी मारे गए अपराधियों में शामिल हैं। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि मृतकों की पहचान आशीष उर्फ लालू, सन्नी खरार और विक्की रिधाना के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि तीनों हिमांशु भाऊ गिरोह के सदस्य थे। एक अधिकारी ने बताया कि मुठभेड़ सोनीपत के खरखौदा इलाके में हुई।

उत्तरी नाइजीरिया में एक स्कूल ढहने से कई छात्रों की मौत

अबुजा/एपी। उत्तर-मध्य नाइजीरिया में शुक्रवार को सुबह की कक्षाओं के दौरान दो मंजिला स्कूल ढहने से कई छात्रों की मौत हो गई। नाइजीरिया की राष्ट्रीय आपातकालीन प्रबंधन एजेंसी ने यह जानकारी दी। स्कूल ढहने से लगभग 120 छात्र एवं शिक्षक फंस गए और मलबे में दबे लोगों की तलाश शुरू कर दी गई है। एक स्थानीय टेलीविजन स्टेशन ने 12 लोगों की मौत की सूचना दी है। अधिकारियों ने 'सेंट्स अकादमी कॉलेज' में हुई इस घटना में मारे गए छात्रों और शिक्षकों के संख्या की पुष्टि नहीं की है।

13-07-2024 सूर्यास्त 6:39 बजे | 14-07-2024 सूर्योदय 5:49 बजे

BSE	NSE
80,519.34 (+622.00)	24,502.15 (+186.20)

सोना	चांदी
7,606 रु. (24 कैरेट) प्रति ग्राम	99,300 रु. प्रति किलो

मिशन मंडेला
दक्षिण भारत राष्ट्रमत
दक्षिण भारत का लोकप्रिय हिन्दी दैनिक
epaper.dakshinbharat.com

कैलाश मण्डेला, मो. 9828233434

न्यायिक पारदर्शिता

न्यायिक घेरे के भीतर,
यदि न्यायालय होगा।
तब ही सही फैसले लेना,
सचमुच तय होगा।
हो सकता ना कोई निरंकुश,
सत्य विजय होगा।
ऐसा लोकतंत्र दुनिया में,
कभी न क्षय होगा।।

'सतत और निर्बाध प्रगति कर रहा भारत'

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मुंबई/भाषा। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शुक्रवार को कहा कि अगले पांच साल में भारत का विकास गुरुत्वाकर्षण बल को चुनौती देने वाले रॉकेट की तरह होगा। उन्होंने देश की अर्थव्यवस्था में तेजी से हो रही वृद्धि का श्रेय वर्तमान पारदर्शी व जवाबदेह तंत्र को दिया।

भारत की उन्नति को सतत और निर्बाध बताते हुए उन्होंने कहा कि दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था पिछले एक दशक में ऐसी स्थिति में पहुंच गई है, जहां वैश्विक संस्थाएं अब उसे सलाह देने के बजाय उससे सलाह मांग रही हैं।

यहां नरसी मोनजी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (एनएमआईएमएस) विश्वविद्यालय में व्याख्यान देते हुए धनखड़ ने कहा कि भारत को वैश्विक संस्थानों से प्रशंसा मिल रही है। उन्होंने कहा कि समानता सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा सबसे प्रभावशाली परिवर्तनकारी तंत्र है। उन्होंने जोर देकर कहा, पहले भारत को सोता हुआ विशाल देश माना जाता था, लेकिन अब ऐसा नहीं है। हम आगे बढ़ रहे हैं, हम सतत एवं निर्बाध प्रगति कर रहे हैं, और (हमें) वैश्विक संस्थानों से सराहना मिल रही है।

देश के भविष्य की उज्ज्वल तस्वीर पेश करते हुए धनखड़ ने कहा कि अगले पांच वर्षों में भारत का विकास गुरुत्वाकर्षण बल को चुनौती देने वाले रॉकेट की तरह होगा।

उपराष्ट्रपति ने जोर देकर कहा कि भारत उस स्तर पर पहुंच गया है जहां वैश्विक संस्थाएं, जो कभी उसे सलाह देने का प्रयास करती थीं, अब उससे सुझाव मांग रही हैं।

अंबानी परिवार

एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति मुकेश अंबानी के बेटे अनंत अंबानी और दवा जगत के दिग्गज उद्योगपति वीरेन मर्चेंट की बेटी राधिका मर्चेंट शुक्रवार को एक भव्य समारोह में परिणय सूत्र में बंध गए। इस विवाह समारोह में नेताओं के साथ ही हिंदी एवं दक्षिण भारतीय सिनेमा जगत व हॉलीवुड की हस्तियों और देश के लगभग सभी शीर्ष क्रिकेटर शामिल हुए। विवाह समारोह में पहुंचे अंबानी परिवार की सामूहिक तस्वीर।

नेपाल में भूस्खलन की चपेट में आई दो बसें नदी में बहीं

सात भारतीयों समेत 60 से अधिक यात्री लापता

काठमांडू/भाषा। नेपाल में शुक्रवार तड़के भूस्खलन की चपेट में आई दो बसों के उफनाई नदी में बहने से उनमें सवार 60 से अधिक यात्रियों के लापता होने की खबर है। लापता यात्रियों में सात भारतीय नागरिक भी शामिल बताए जा रहे हैं। समाचार पोर्टल 'माईरिपब्लिका' की खबर के मुताबिक, 65 यात्रियों को ले जा रही दो बसें चितवन जिले के सिमलताल इलाके में नारायणघाट-मुगलिंग मार्ग पर भूस्खलन की चपेट में आने के बाद उफनाई त्रिशूली नदी में बह गईं। चितवन के मुख्य जिला अधिकारी इंद्र देव यादव ने इस हादसे की पुष्टि की। यादव ने बताया कि बीरगंज से काठमांडू जा रही एंजेल बस और राजधानी से गौर के लिए रवाना हुई गणपति डीलक्स तड़के साढ़े तीन बजे भूस्खलन की चपेट में आ गई। पुलिस के अनुसार, एंजेल बस में 24 जबकि गणपति डिलक्स में 41 यात्री सवार थे। 'द काठमांडू पोस्ट' की खबर के मुताबिक, गणपति डीलक्स में सवार तीन यात्री बस से कूद गए, जिससे वे मलबे के साथ बहने से बच गए।

केजरीवाल को मिली अंतरिम जमानत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को कथित आबकारी नीति घोटाले से जुड़े धनशोधन मामले में शुक्रवार को अंतरिम जमानत दे दी।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के मामले में जमानत मिलने के बाद भी मुख्यमंत्री केजरीवाल अभी जेल में ही रहेंगे, क्योंकि केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने कथित आबकारी नीति घोटाले से संबंधित भ्रष्टाचार के एक मामले में उन्हें गिरफ्तार किया था।

शीर्ष अदालत ने कहा कि यह निर्णय केजरीवाल को करना है कि वह मुख्यमंत्री पद पर बने रहेंगे या नहीं।

न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता की पीठ ने कहा, ''हम इस तथ्य से अवगत हैं कि अरविंद केजरीवाल निर्वाचित नेता हैं।'' पीठ ने यह भी कहा कि केजरीवाल 90 दिनों से अधिक समय से कारावास में हैं।

पीठ ने ईडी मामले में उनकी गिरफ्तारी की वैधता से संबंधित प्रश्नों को वृहद पीठ के पास भेज दिया। अदालत ने कहा कि चूंकि मामला जीवन के अधिकार से संबंधित है और गिरफ्तारी का मुद्दा बड़ी पीठ को सौंप दिया गया है इसलिए केजरीवाल को अंतरिम जमानत पर रिहा किया जाए।

शीर्ष अदालत ने ईडी की शक्ति,धन शोधन निवारण अधिनियम की धारा 19 के तहत गिरफ्तारी की आवश्यकता और ईडी द्वारा गिरफ्तारी की नीति से संबंधित तीन प्रश्न तैयार किए हैं।(पीठ ने कहा कि केजरीवाल को 10 मई के आदेश की शर्तों के अनुसार अंतरिम जमानत पर रिहा किया जाएगा।

आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री

जगन मोहन रेड्डी और दो आईपीएस के खिलाफ हत्या के प्रयास का मामला दर्ज

गुंटूर (आंध्र प्रदेश)/भाषा। आंध्र प्रदेश पुलिस ने तेलुगू देशम पार्टी (तेदेपा) के एक विधायक की शिकायत पर पूर्व मुख्यमंत्री वाई एस जगन मोहन रेड्डी, भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएएस) के दो वरिष्ठ अधिकारियों और दो सेवानिवृत्त अधिकारियों के खिलाफ ''हत्या के प्रयास'' का मामला दर्ज किया है। एक पुलिस अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

इस संबंध में उंडी विधानसभा क्षेत्र से सत्तारूढ़ पार्टी के विधायक के. रघुराम कृष्ण राजू ने शिकायत दर्ज कराई थी। राजू 2019 से 2024 के बीच वाईएसआरसीपी के लोकसभा सदस्य थे, लेकिन शुरुआती दौर में ही रेड्डी से उनका अलगाव हो गया था।

अधिकारी ने बताया कि पुलिस ने पूर्व मुख्यमंत्री रेड्डी के अलावा वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी पी.वी. सुनील कुमार और पी.एस.आर. सीतारमणजनेयुलु तथा सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी आर. विजय पॉल और गुंटूर सरकारी अस्पताल की पूर्व अधीक्षक जी प्रभावती के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

आपातकाल की याद में

25 जून को 'संविधान हत्या दिवस' के रूप में मनाएगी सरकार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

25 जून 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने तानाशाही मानसिकता का खुला प्रदर्शन करते हुए देश में आपातकाल लागू करके भारत के लोकतंत्र की आत्मा का गला घोंट दिया। लाखों लोगों को बिना किसी गलती के सलाखों के पीछे डाल दिया गया और मीडिया की आवाज को दबा दिया गया।

नई दिल्ली/भाषा। सरकार ने आपातकाल की अवधि के दौरान अमानवीय पीड़ा झेलने वालों के व्यापक योगदान को याद करने के लिये 25 जून को 'संविधान हत्या दिवस' के रूप में मनाने का फैसला किया है। इसी दिन 1975 में आपातकाल की घोषणा की गई थी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को यह घोषणा की। उन्होंने यह भी कहा कि 'संविधान हत्या दिवस' मनाने से प्रत्येक भारतीय में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और लोकतंत्र की रक्षा की अमर ज्वाला को प्रज्वलित रखने में मदद मिलेगी, जिससे कांग्रेस जैसी तानाशाही ताकतों को उन भयावहताओं को दोहराने से रोका जा सकेगा।

केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा शुक्रवार को जारी एक राजपत्र अधिसूचना में कहा गया है कि 25 जून 1975 को आपातकाल की घोषणा की गई थी, जिसके बाद तत्कालीन सरकार द्वारा सत्ता का घोर दुरुपयोग किया गया और भारत के लोगों पर ज्यादतियां और अत्याचार किए गए।

इसमें कहा गया है कि भारत के लोगों को संविधान और इसके लचीले लोकतंत्र की शक्ति पर अटूट विश्वास है।

अधिसूचना में कहा गया, इसलिए, भारत सरकार 25 जून को 'संविधान हत्या दिवस' के रूप में घोषित करती है, ताकि आपातकाल के दौरान सत्ता के घोर दुरुपयोग के खिलाफ लड़ने वाले सभी लोगों को श्रद्धांजलि दी जा सके और भारत के लोगों को भविष्य में किसी भी तरह से सत्ता के ऐसे घोर दुरुपयोग का समर्थन न करने के लिए पुनः प्रतिबद्ध किया जा सके।

ईडी ने कर्नाटक के पूर्व मंत्री नागेंद्र को धनशोधन मामले में गिरफ्तार किया

बेंगलूरु/भाषा। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कर्नाटक महर्षि वाल्मीकि अनुसूचित जनजाति विकास निगम लिमिटेड में कथित अनियमितताओं से जुड़े धन शोधन मामले की जांच के सिलसिले में राज्य के पूर्व मंत्री और कांग्रेस नेता बी नागेंद्र को शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया। सूत्रों ने यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया कि विधायक को रात करीब साढ़े दस बजे एजेंसी के दफ्तर में हिरासत में लिया गया। उनसे 13 घंटे से अधिक समय तक पूछताछ की गई। उन्हें सुबह उनके आवास से ईडी कार्यालय ले जाया गया था। नागेंद्र को शनिवार को विशेष धन शोधन रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) अदालत में पेश किए जाने की उम्मीद है जहां ईडी पूछताछ के लिए उनकी हिरासत मांगेगी। एजेंसी ने इस मामले में बृहस्पतिवार को कर्नाटक समेत चार राज्यों में छापेमारी की थी और अब तक करीब 50 लाख रुपये नकद और कुछ दस्तावेज जब्त किए हैं।

प्रधानमंत्री ने आर्थिक, सामाजिक विकास के इंजन के रूप में 'बिम्सटेक' की भूमिका पर जोर दिया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को सात देशों के समूह बिम्सटेक के प्रति भारत की प्रतिबद्धता दोहराई और आर्थिक एवं सामाजिक विकास के इंजन के रूप में इसकी भूमिका पर जोर दिया। बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल (बिम्सटेक) के सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों ने दिल्ली में अपने सम्मेलन के दूसरे और अंतिम दिन मोदी से संयुक्त रूप से मुलाकात की। भारत के अलावा बिम्सटेक में श्रीलंका, बांग्लादेश, म्यांमा, थाईलैंड, नेपाल और भूटान शामिल हैं।

मोदी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर कहा, बिम्सटेक विदेश मंत्रियों से मिलकर खुशी हुई। संपर्क (कनेक्टिविटी) , ऊर्जा, व्यापार, स्वास्थ्य, कृषि, विज्ञान, सुरक्षा और लोगों के बीच आदान-प्रदान सहित क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की। सफल शिखर सम्मेलन के लिए थाईलैंड को पूरा समर्थन दिया।

प्रधानमंत्री कार्यालय द्वारा जारी एक बयान के मुताबिक, मोदी ने एक शांतिपूर्ण, समृद्ध, हर स्थिति के अनुकूल और सुरक्षित बिम्सटेक क्षेत्र के लिए भारत की प्रतिबद्धता की पुष्टि की तथा भारत की 'पड़ोसी प्रथम' और 'पूर्व की ओर देखो' नीतियों के साथ-साथ क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास के संदर्भ में 'सागर' दृष्टिकोण में इसके महत्व पर प्रकाश डाला।

इसमें कहा गया, प्रधानमंत्री ने मंत्रियों के समूह के साथ संपर्क, ऊर्जा, व्यापार, स्वास्थ्य, कृषि, विज्ञान, सुरक्षा और लोगों के बीच आदान-प्रदान सहित विभिन्न क्षेत्रों में आपसी सहयोग को और मजबूत करने पर सार्थक चर्चा की।

जलवायु परिवर्तन रोधी उपायों का इस्तेमाल मनमाने व्यापार प्रतिबंधों के लिए नहीं होना चाहिए : बिरला

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने पर्यावरण संरक्षण के साथ ही विकासशील देशों की जरूरतों का उल्लेख करते हुए शुक्रवार कहा कि जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए किए जा रहे उपायों का इस्तेमाल मनमाने व्यापार प्रतिबंधों के लिए नहीं होना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि सीमित संसाधन होने के बावजूद भारत पर्यावरण को बचाने की दिशा में लगातार ठोस कदम उठा रहा है।

लोकसभा सचिवालय की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार, बिरला ने रूस के सेंट पीटर्सबर्ग में 10वें ब्रिक्स संसदीय मंच में ''बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली के विखंडन को रोकने और वैश्विक संकट के परिणामों से संबंधित चुनौतियों से निपटने में संसदों की भूमिका'' विषय पर पूर्ण सत्र को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संबंधी कार्रवाईयों के रूप में उचित ठहराए जाने वाले एकतरफा उपायों से व्यापार प्रभावित हो रहा है, विश्व व्यापार संगठन के नियमों का उल्लंघन हो रहा है और अंतरराष्ट्रीय कानून, समानता और यूएनएफसीसीसी (संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन) कमजोर हो रहे हैं। बिरला ने इस बात पर जोर दिया कि जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए पर्याप्त संसाधन आवश्यक होते हैं, लेकिन विकासशील देशों को अपने विकास के लिए इनकी जरूरत होती है।

उन्होंने कहा कि इस संबंध में भारत अनुकूलन को प्राथमिकता दे रहा है और अपने एनडीसी (राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान) के लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है ।

बिरला ने लोकतांत्रिक संस्थाओं के बीच आपसी समझ को बढ़ावा देने और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने पर जोर देते हुए कहा कि संसद वित्तीय और आर्थिक संप्रभुता की रक्षा के लिए कानून बनाने और अंतरराष्ट्रीय सिफारिशों के क्रियान्वयन का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इस संबंध में भारत के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय संसद विश्व व्यापार संगठन के तहत एक नियम-आधारित, भेदभाव रहित, मुक्त, निष्पक्ष, समावेशी, न्यायसंगत और पारदर्शी बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली का समर्थन करती है और अंतर-संसदीय गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेती है। उन्होंने इस बात को भी दोहराया कि भारत की संसद अन्य देशों के सांसदों के साथ गहन संवाद के लिए प्रतिबद्ध है।

मालीवाल से मारपीट मामला :

बिभव को जमानत देने से इन्कार

नई दिल्ली/भाषा। दिल्ली उच्च न्यायालय ने आम आदमी पार्टी (आप) की राज्यसभा सदस्य स्वाती मालीवाल से मारपीट करने के मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के सहयोगी बिभव कुमार को शुक्रवार को जमानत देने से मना कर दिया। न्यायमूर्ति अनूप कुमार मेंदीरत्ता ने कुमार की जमानत अर्जी खारिज करते हुए कहा कि वह 'काफी प्रभावी' व्यक्ति हैं और उन्हें राहत देने के लिए कोई उचित आधार नहीं बनता। न्यायाधीश ने कहा कि इस आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता है कि याचिकाकर्ता को जमानत पर रिहा करने से वह गवाहों को प्रभावित कर सकता या सबूतों से छेड़छाड़ कर सकता है। अदालत ने कहा कि आरोपों की प्रकृति और गवाहों को प्रभावित करने की आशंका को देखते हुए इस स्तर पर याचिकाकर्ता को जमानत पर रिहा करने का कोई आधार नहीं बनता।

असम में नहीं सुधरे हालात, बाढ़ से लगभग 14 लाख लोग प्रभावित

गुवाहाटी/भाषा। असम में बाढ़ के कारण उत्पन्न स्थिति फिलहाल सुधरती नजर नहीं आ रही है जिसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि शुक्रवार तक राज्य के 26 जिलों के लगभग 14 लाख लोग प्रभावित हैं। एक आधिकारिक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई। इसमें कहा गया है कि ब्रह्मपुत्र सहित कई प्रमुख नदियां राज्य के विभिन्न हिस्सों में खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। इस वर्ष बाढ़, तूफान और आकाशीय बिजली गिरने की घटनाओं में जान गंवाने वालों की संख्या 99 तक पहुंच गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि 26 जिलों के 83 राजस्व सर्किल और 2,545 गांवों में 13,99,948 लोग प्रभावित हैं। बाढ़ के कारण प्रभावित जिलों में कछार, बारपेटा, कामरूप, नगांव, धुबरी, विश्वनाथ, गोलाघाट, ग्वालपाडा, हैलाकांडी, शिवसागर, डिब्रूगढ़, मोरीगांव, तिनसुकिया, नलबाड़ी, धेमाजी, दक्षिण सलमारा, लखीमपुर, करीमगंज, चराईदेव, बोंगाईगांव, कोकराझार, दरांग, जोरहाट, कामरूप मेट्रोपॉलिटन, माजुली और चिरांग शामिल हैं।

सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाना सर्वोच्च प्राथमिकता : विष्णु देव साय

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

रायपुर/भाषा। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने शुक्रवार को कहा कि सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

अधिकारियों ने बताया कि मुख्यमंत्री ने आज अपने आवास से 15 नए 'इंटरसेप्टर' वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया जो यातायात नियमों का पालन सुनिश्चित करेंगे और उल्लंघनकर्ताओं को पकड़ने में मदद करेंगे। साय ने इस अवसर पर कहा, ''सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। तंत्र को 'हाईटेक' कर हम इस दिशा में काम कर रहे हैं।'' उन्होंने कहा, '' यातायात नियमों का पालन करना सुरक्षित यात्रा की गारंटी देता है और इससे अन्य वाहन चालकों में भी सुरक्षा का भाव पैदा होता है। बढ़ते सड़क हादसों को देखते हुए हमें यातायात नियमों का पालन करने के लिए अधिक सचेत और गंभीर होने की आवश्यकता है। नियमों का पालन कर हम न केवल अपने बल्कि सहयात्रियों के अधिकारों का भी सम्मान करते हैं।''

मुख्यमंत्री ने सड़क सुरक्षा को सामूहिक जिम्मेदारी बताते हुए कहा ,''हर वर्ष हजारों लोग सड़क हादसों में अपनी जान गंवाते हैं और कई लोगों में स्थायी दिव्यांगता आ जाती है। इस समस्या का समाधान समाज के सभी वर्गों के सहयोग से हो सकता है। यातायात नियमों का पालन कर वाहन चालक न केवल अपना और अपने परिवार बल्कि सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करता है।'' साय ने कहा कि नए 'इंटरसेप्टर' वाहनों से नियमों का पालन न करने वालों पर निगरानी रखी जाएगी। उन्होंने कहा,'' हमारा उद्देश्य चालान वसूलना नहीं बल्कि लोगों को नियमों का पालन करने के लिए जागरूक एवं सचेत करना है।'' अधिकारियों ने बताया कि छत्तीसगढ़ में सड़क दुर्घटनाओं के प्रभावी नियंत्रण के लिए सर्वसुविधायुक्त 'इंटरसेप्टर' वाहनों की आवश्यकता महसूस की जा रही थी, जिससे अत्याधिक तेज गति, नशे में वाहन चलाने, निर्धारित मापदंड से अधिक चकाचौंध वाले हेड लाइट्स लगाने, वाहन में लगे ध्वनि यंत्रों की तेज आवाज को मापने तथा वाहनों के शीशे में निर्धारित मापदंड से अधिक गहरी काली फिल्म लगाने के सिलसिले में वाहन चालकों के विरुद्ध कार्यवाही की जा सके।

देश का विदेशी मुद्रा भंडार 5.16 अरब डॉलर बढ़कर 657.16 अरब डॉलर पर

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मुंबई/भाषा। देश का विदेशी मुद्रा भंडार पांच जुलाई को समाप्त सप्ताह में 5.16 अरब डॉलर उछलकर 657.16 अरब डॉलर हो गया। भारतीय रिजर्व बैंक ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

इससे पिछले सप्ताह में कुल मुद्रा भंडार 1.71 अरब डॉलर घटकर 651.99 अरब डॉलर रहा था। इस वर्ष सात जून को विदेशी मुद्रा भंडार 655.82 अरब डॉलर के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया था।

रिजर्व बैंक के आंकड़ों के मुताबिक पांच जुलाई को समाप्त सप्ताह में मुद्रा भंडार का अहम हिस्सा मानी जाने वाली विदेशी मुद्रा आस्तियां 4.23 अरब डॉलर बढ़कर 577.11 अरब डॉलर हो गयी।

डॉलर के संदर्भ में उल्लेखित विदेशी मुद्रा आस्तियों में विदेशी मुद्रा भंडार में रखे गए यूरो, पाउंड और येन जैसी गैर-अमेरिकी मुद्राओं की घट-बढ़ का प्रभाव शामिल होता है।

रिजर्व बैंक ने कहा कि समीक्षाधीन सप्ताह के दौरान स्वर्ण आरक्षित भंडार का मूल्य 90.4 करोड़ डॉलर बढ़कर 57.43 अरब डॉलर रहा।

विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) 2.1 करोड़ डॉलर बढ़कर 18.04 अरब डॉलर हो गया।

रिजर्व बैंक ने कहा कि आलोच्य सप्ताह में अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष (आईएमएफ) के पास भारत की आरक्षित जमा 40 लाख डॉलर बढ़कर 4.58 अरब डॉलर हो गयी।

सियाम ने ईवी के लिए रियायतें, वाहनों को कबाड़ में बदलने को अतिरिक्त प्रोत्साहन मांगा

नई दिल्ली/भाषा। वाहन उद्योग संगठन सियाम ने शुक्रवार को इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) को बढ़ावा देने के लिए रियायतें मांगी। उद्योग निकाय ने साथ ही कहा कि सरकार को आगामी आम बजट में वाहनों को कबाड़ में बदलने के लिए अतिरिक्त प्रोत्साहनों की घोषणा करनी चाहिए। सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (सियाम) ने पूंजीगत व्यय के लिए अधिक आवंटन के साथ वृद्धि को बढ़ावा देने वाले बजट पर जोर दिया। सियाम के अध्यक्ष विनोद अग्रवाल ने यहां संवाददाताओं से कहा, ''हमें उम्मीद है कि सरकार को फेम 3 जैसी नीति लानी चाहिए... पीएलआई जैसी अच्छी योजनाएं पहले से ही लागू हैं, जिनके जारी रहने का हमें भरोसा है।'' अगर फेम 3 (इलेक्ट्रिक वाहनों को तेजी से अपनाना और उनका विनिर्माण) योजना शुरू की जाती है, तो इससे इलेक्ट्रिक दोपहिया और तिपहिया वाहनों के साथ ही सार्वजनिक बसों को वित्तीय प्रोत्साहन मिलने की उम्मीद है। फेम 3 योजना, इलेक्ट्रिक गतिशीलता संवर्धन योजना (ईएमपीएस) की जगह लेगी, जिसे फेम 2 योजना के खत्म होने पर पेश किया गया था।

महाराष्ट्र विधान परिषद चुनाव के लिए मतदान समाप्त, सभी 274 विधायकों ने वोट डाले

मुंबई/भाषा। महाराष्ट्र विधान परिषद की 11 सीट के लिए द्विवार्षिक चुनाव के लिए शुक्रवार को विधान भवन परिसर में मतदान संपन्न हो गया। अधिकारियों ने बताया कि मतदान सुबह नौ बजे से शाम चार बजे तक हुआ। उन्होंने बताया कि शाम को मतगणना की जाएगी। विधान परिषद की 11 सीट पर हो रहे चुनाव के लिए कुल 12 उम्मीदवार मैदान में हैं।

राज्य की 288 सदस्यीय विधानसभा इन चुनावों के लिए निर्वाचक मंडल है। वर्तमान में इसमें संख्या बल 274 है। अधिकारियों के अनुसार सभी 274 विधायकों ने अपने वोट डाले। शिवसेना के संजय गायकवाड़ गुप्त मतदान प्रणाली के माध्यम से सबसे पहले वोट डालने वाले विधायक थे।

विधान परिषद के 11 सदस्यों का कार्यकाल 27 जुलाई को खत्म होने जा रहा है। भाजपा 103 सदस्यों के साथ विधानसभा में सबसे बड़ी पार्टी है, इसके बाद शिवसेना (38), राकांपा (42), कांग्रेस (37), शिवसेना (यूबीटी) 15 और राकांपा (शरदचंद्र पवार) के सदस्यों की 10 है।

भाजपा ने चुनाव मैदान में पांच उम्मीदवार उतारे हैं, जबकि महायुति के उसके गठबंधन सहयोगियों शिवसेना और राकांपा ने दो-दो उम्मीदवार खड़े किए हैं।

कांग्रेस और शिवसेना (यूबीटी) ने एक-एक उम्मीदवार मैदान में उतारा है, जबकि महा विकास आघाडी (एमवीए) की उनकी सहयोगी राकांपा (शरदचंद्र पवार) पीजेंट्स एंड वर्कर्स पार्टी (पीडब्ल्यूपी) के उम्मीदवार का समर्थन कर रही है।

सरकार और प्रशासन में 'गंदगी' दूर करने के लिए मुख्यमंत्री स्वच्छता अभियान चलाएं : शर्मा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

भोपाल/भाषा। वरिष्ठ भाजपा नेता रघुनंदन शर्मा ने मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव से आग्रह किया कि वह अपनी सरकार और राज्य प्रशासन में स्वच्छता अभियान चलाएं ताकि वहां मौजूद गंदगी को हटाया जा सके जो दिखाई नहीं देती। पूर्व राज्यसभा सदस्य शर्मा स्थानीय झील के जीर्णोद्धार के अवसर पर कार्यक्रम में बोल रहे थे। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भी मौजूद थे।

उन्होंने कहा, आपने एक छोटी सी झील की सफाई का अभियान शुरू किया है। आपको सरकार और प्रशासन में एक बड़ा स्वच्छता अभियान चलाना होगा क्योंकि वहां बहुत गंदगी है। वह गंदगी दिखाई नहीं देती क्योंकि वह नीचे छिपी होती है। मुझे विश्वास है कि आप अपनी अपार ऊर्जा और दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ इसे साफ करने में सक्षम हैं। बाद में पत्रकारों से बात करते हुए शर्मा ने कहा कि सरकार में कुछ लोग अपने निहित स्वार्थों के लिए अपनी पसंद के पदों पर बैठे हैं और अपने घरों को भर रहे हैं और लोगों को परेशान करते हुए सेवाएं प्राप्त कर रहे हैं। शर्मा ने दावा किया, मैंने (शासन में स्वच्छता अभियान का) एक प्रतीकात्मक अनुरोध किया है क्योंकि बिचौलियों और एजेंटों सहित कई बाहरी तत्व सत्ता में शामिल हैं। वे ही गंदगी हैं और उन्हें बाहर करने की जरूरत है। राजनीति के कारण ऐसे तत्वों को आश्रय दिया जाता है और वे सक्रिय हैं। शर्मा ने कहा कि लोगों के कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए ऐसी सभी बाधाओं को दूर करना मुख्यमंत्री की जिम्मेदारी है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री यादव ने झील के संरक्षण और सफाई के लिए किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की और कहा कि लगाए गए फव्वारे इसे सुंदर बनाते हैं और यह भी सुनिश्चित करते हैं कि पानी को ऑक्सीजन मिले।

सब्जियों की बढ़ती कीमतों ने जून में खुदरा महंगाई को 5.08 प्रतिशत पर पहुंचाया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। सब्जियों और अन्य खाद्य उत्पादों की कीमतें बढ़ने से जून में खुदरा मुद्रास्फीति बढ़कर चार महीने के उच्चतम स्तर 5.08 प्रतिशत पर पहुंच गई। शुक्रवार को जारी आधिकारिक आंकड़ों में यह जानकारी दी गई। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) पर आधारित खुदरा मुद्रास्फीति जनवरी से ही घट रही थी लेकिन जून का महीना एक बार फिर इसमें तेजी लेकर आया।

मई 2024 में खुदरा मुद्रास्फीति 4.8 प्रतिशत पर थी जबकि जून 2023 में यह 4.87 प्रतिशत रही थी। खुदरा महंगाई का पिछला उच्च स्तर फरवरी में 5.09 प्रतिशत रहा था। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) की तरफ से जारी आंकड़ों के मुताबिक खाद्य समूह में शामिल उत्पादों की महंगाई दर जून में बढ़कर 9.36 प्रतिशत पर पहुंच गई। मई में खाद्य मुद्रास्फीति 8.69 प्रतिशत थी। भीषण गर्मी से प्रभावित रहे जून के महीने में सब्जियों की कीमतें सालाना आधार पर सबसे अधिक 29.32 प्रतिशत बढ़ गईं। उसके बाद 'दालें और उत्पाद' में मुद्रास्फीति 16.07 प्रतिशत रही।

जून में 'अनाज और उत्पाद' के अलावा फलों के दाम भी एक साल पहले की समान अवधि की तुलना में महंगे बिके। एनएसओ के आंकड़ों से पता चलता है कि जून में ग्रामीण क्षेत्रों में खुदरा मुद्रास्फीति 5.66 प्रतिशत रही जबकि शहरी भारत में महंगाई दर 4.39 प्रतिशत रही।

रेटिंग एजेंसी इक्रा की मुख्य अर्थशास्त्री अदिति नायर ने खुदरा मुद्रास्फीति के इन आंकड़ों पर टिप्पणी करते हुए कहा कि जून में मुख्य रूप से खाद्य और पेय पदार्थों की कीमतों में आठ प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी के कारण खुदरा मुद्रास्फीति बढ़ी। इस दौरान सब्जियों की कीमतों में तेजी से उछाल दर्ज की गई। हालांकि नायर ने कहा कि खाद्य और पेय पदार्थों को छोड़कर अन्य सभी उप-समूहों में मुद्रास्फीति जून में चार प्रतिशत से से नीचे ही रही। उन्होंने कहा, यदि मानसून के बाकी वक्त में बारिश सामान्य रहती है और वर्षा वितरण भी अनुकूल रहता है तो खाद्य मुद्रास्फीति का दृष्टिकोण निश्चित रूप से अनुकूल हो जाता है। वैश्विक या घरेलू स्तर पर कोई अन्य झटका नहीं लगने पर हम अक्टूबर 2024 में नीतिगत रुख में बदलाव और दिसंबर 2024 एवं फरवरी 2025 में 0.25 प्रतिशत की कटौती की संभावना से इनकार नहीं कर रहे हैं। एनएसओ के मुताबिक, जून में सबसे अधिक मुद्रास्फीति ओडिशा (7.22%) और सबसे कम दिल्ली (2.18%) में रही। एनएसओ साप्ताहिक आधार पर सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के 1,114 शहरी बाजारों और 1,181 गांवों से आंकड़े जुटाता है।

खरीफ फसलों का बीमा 31 जुलाई तक करवा सकेंगे किसानः अधिकारी

जयपुर/भाषा। किसान प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत खरीफ फसलों का बीमा 31 जुलाई तक करवा सकेंगे। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। इसके अनुसार राज्य सरकार ने खरीफ 2024 की फसलों का बीमा कराने को लेकर दिशा-निर्देश जारी किए हैं। किसान फसल खराब से होने वाले नुकसान से बचाव के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत बीमा करवा सकेंगे। इसके तहत फसलवार बीमा की प्रीमियम राशि भी घोषित कर दी गई है। कृषि आयुक्त कन्हैया लाल स्वामी ने बयान में कहा कि राज्य सरकार द्वारा खरीफ फसलों के लिए बीमा अधिसूचना जारी कर दी गई है। इसके अन्तर्गत अधिसूचित फसलें बाजरा, ज्वार, मक्का, मूंग, मोंठ, ग्वार, चंवला, उड़द, अरहर, सोयाबीन, तिल, धान, कपास और मूंगफली है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किसान, खरीफ फसलों का बीमा 31 जुलाई तक करा सकते हैं।

आग लगने के बाद गुजरात का स्कूल बंद, अभिभावकों ने प्रबंधन पर घटना छिपाने का आरोप लगाया

अहमदाबाद/भाषा। गुजरात में अहमदाबाद के अधिकारियों ने एक निजी स्कूल को उसका परिसर बंद करने का आदेश दिया और जांच शुरू की है। इसके पहले बच्चों के माता-पिता ने आरोप लगाया था कि प्रबंधन ने अपने परिसर में लगी आग को 'मॉक ड्रिल' बताकर छिपाने की कोशिश की थी। स्कूल प्रशासन ने दावा किया है कि बृहस्पतिवार को लगी आग मामूली थी और पांच मिनट में उस पर काबू पा लिया गया, लेकिन अभिभावकों ने आरोप लगाया कि जब उन्होंने अपने बच्चों की परेशानी के बारे में जानने के बाद पूछताछ की तो प्रबंधन ने इसे 'मॉक ड्रिल' बताया। बोपल इलाके के 'शांति एशियाटिक स्कूल' में अभिभावकों के विरोध प्रदर्शन की जानकारी मिलने पर जिला शिक्षा अधिकारी (ग्रामीण) कृपा झा मौके पर पहुंचीं और अभिभावकों के आरोपों की जांच के आदेश दिए। झा ने कहा, ''प्रथम दृष्टया हमने पाया कि स्कूल की तरफ से लापरवाही बरती गई है। हम घटना की विस्तृत जांच करने के साथ ही सुरक्षा ऑडिट भी करेंगे ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि इमारत बच्चों के लिए सुरक्षित है।

ममता बनर्जी ने उद्धव के बाद मुंबई दौरे के दौरान शरद पवार से मुलाकात की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मुंबई/भाषा। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शुक्रवार को राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (सपा) के अध्यक्ष शरद पवार से मुलाकात की।

लोकसभा चुनाव के नतीजे घोषित होने के एक महीने से भी अधिक समय बाद यह बनर्जी की पहली मुंबई यात्रा है। तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख बनर्जी ने पवार से दक्षिण मुंबई में उनके आवास 'सिल्वर ओक' में मुलाकात की।

मुंबई के एक दिवसीय दौरे पर आईं बनर्जी ने इससे पहले शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे से बांद्रा में उनके आवास ''मातोश्री'' में मुलाकात की। तृणमूल कांग्रेस, राकांपा (सपा) और शिवसेना (यूबीटी) विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन के घटक हैं।

चार जून को आए लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद बनर्जी का यह पहला मुंबई दौरा है। महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ महायुति को झटका देते हुए विपक्षी महा विकास आघाडी (एमवीए) ने 48 लोकसभा सीट में से 30 पर जीत हासिल की। महायुति में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), शिवसेना और राकांपा शामिल हैं।

स्टार्टअप, ग्रामीण उद्यमों के वित्त पोषण के लिए 750 करोड़ रुपए का कृषि कोष शुरू

नई दिल्ली/भाषा। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) ने शुक्रवार को कहा कि उसकी अनुषंगी इकाई ने स्टार्टअप और ग्रामीण उद्यमों के लिए 750 करोड़ रुपये का कृषि कोष शुरू किया है। नाबार्ड की सहायक कंपनी नैबवेंचर्स ने 'एग्री-श्योर' नामक कोष की घोषणा की है। इसमें 750 करोड़ रु. का प्रारंभिक कोष है। इसमें नाबार्ड और कृषि मंत्रालय से 250-250 करोड़ रुपये और अन्य संस्थानों से 250 करोड़ रुपये मिले हैं। नाबार्ड ने बयान में कहा कि कोष का उद्देश्य कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में नवीन, प्रौद्योगिकी-संचालित, उच्च जोखिम और उच्च प्रभाव वाली गतिविधियों में निवेश को बढ़ावा देना है।

एलएलबी छात्रों के लिए मनुस्मृति शुरू करने का प्रस्ताव उचित नहीं: दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) के कुलपति योगेश सिंह ने शुक्रवार को कहा कि एलएलबी छात्रों के लिए मनुस्मृति शुरू करने का प्रस्ताव खारिज कर दिया गया क्योंकि यह उचित नहीं पाया गया। उन्होंने कहा कि ऐसे अन्य ग्रंथ भी हैं जिनका इस्तेमाल भारतीय ज्ञान पढ़ाने के लिए किया जा सकता है। सिंह ने 'पीटीआई-भाषा' के साथ एक साक्षात्कार में कहा कि शुक्रवार को अकादमिक परिषद की बैठक के एजेंडे की 'पूर्व स्क्रीनिंग' के दौरान प्रस्ताव को रद्द करने के लिए उन्होंने अपनी आपातकालीन शक्तियों का इस्तेमाल किया।

कुलपति ने एलएलबी छात्रों को मनुस्मृति पढ़ाने के प्रस्ताव को बृहस्पतिवार को वापस ले लिया और स्पष्ट किया कि शिक्षकों के एक वर्ग द्वारा इस पर आपत्ति जताए जाने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा ऐसा कोई पाठ नहीं पढ़ाया जाएगा। न्यायशास्त्र के पाठ्यक्रम में प्रस्तावित परिवर्तन एलएलबी के सेमेस्टर एक और छह से संबंधित हैं। संशोधनों के अनुसार, छात्रों के लिए दो पाठ्यपुस्तकों- जी.एन. झा द्वारा लिखित 'मनुस्मृति : मेधातिथिभाष्यसमेता' और टी. कृष्णस्वामी अय्यर द्वारा लिखी 'कमेंट्री आफ मनुस्मृति- स्मृतिचंद्रिका' पाठ्यक्रम में शामिल करने का प्रस्ताव था। सिंह की अध्यक्षता वाली समिति ने निर्णय लिया कि विधि संकाय द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव विचार-विमर्श के लिए उपयुक्त नहीं है, तथा इसे डीयू की निर्णय लेने वाली सर्वोच्च संस्था अकादमिक परिषद के समक्ष रखे जाने से पहले ही खारिज कर दिया गया। सिंह ने 'पीटीआई-भाषा' से कहा, ''जब यह प्रस्ताव मेरी अध्यक्षता वाली समिति के समक्ष रखा गया तो हमने इसे उचित नहीं पाया और इसे खारिज कर दिया। भारतीय ज्ञान सिखाने के लिए कई अन्य ग्रंथ हैं और हमें किसी एक ग्रंथ पर निर्भर नहीं रहना चाहिए।''

इस प्रस्ताव की शिक्षकों के एक वर्ग ने कड़ी आलोचना की, जिनका कहना था कि मनुस्मृति महिलाओं और हाशिए के समुदायों के अधिकारों के प्रति ''प्रतिगामी'' है तथा प्रगतिशील शिक्षा प्रणाली के विरुद्ध है। वामदल संबद्ध ऑल इंडिया स्टूडेंट एसोसिएशन (आइसा) के कई छात्रों ने अस्वीकृत प्रस्ताव के खिलाफ कुलपति कार्यालय के बाहर प्रदर्शन किया और इसे विवि के ''भगवाकरण'' की ओर एक कदम बताया।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
बेंगलूरु क्लासीफाइड
नाम परिवर्तन
CHANGE OF NAME
I P.LAKSHMI(Existing Name of as per change of NOK Service Document) legally wedded spouse of No.17006101H,NK(VM), P.DINASEKHAR, residing at D. No.7-16, Venkatrapuram (V). Polavaram (P), Puthalpattu (M) Chittoor Dist, AP,517124 have changed my name from P.LAKSHMI to GORJALA LAKSHMI(Proposed New Name of Spouse) vide Affidavit Dated 14/02/2024 at Sub Court, Puttur AP.

सत्य की जीत, भाजपा की साजिशों की हारः ईडी मामले में केजरीवाल को अंतरिम जमानत मिलने पर आप

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। आम आदमी पार्टी (आप) ने कथित आबकारी नीति घोटाले से जुड़े प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के धनशोधन मामले में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को अंतरिम जमानत देने के उच्चतम न्यायालय के आदेश को शुक्रवार को सत्य की जीत और उनके खिलाफ भाजपा की साजिश की हार बताया।

हालांकि, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने कहा कि उच्चतम न्यायालय का आदेश आम आदमी पार्टी (आप) की जीत नहीं है, क्योंकि आदलत ने आबकारी नीति मामले में केजरीवाल के दोषी होने को लेकर अपनी 'मुहर' लगा दी है। 'आप' के राष्ट्रीय संयोजक केजरीवाल जमानत मिलने के बावजूद अभी जेल में ही रहेंगे, क्योंकि केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने बाद में उन्हें कथित शराब घोटाले से जुड़े भ्रष्टाचार मामले में गिरफ्तार कर लिया था। 'आप' नेता आतिशी, सौरभ भारश्रे और संदीप पाठक ने एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में शीर्ष अदालत के फैसले को ''ऐतिहासिक'' और ''सच की जीत'' करार दिया। इससे पहले, 'आप' ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर ''सत्यमेव जयते'' लिखा। केजरीवाल को पिछले महीने आबकारी नीति से जुड़े धनशोधन मामले में राउज एवेन्यू अदालत ने जमानत दे दी थी, लेकिन दिल्ली उच्च न्यायालय ने इस आदेश पर रोक लगा दी थी।

आतिशी ने दावा किया कि राउज एवेन्यू अदालत और उच्चतम न्यायालय के फैसले साबित करते हैं कि केजरीवाल की गिरफ्तारी और पिछले दो सालों से तथाकथित शराब घोटाले के नाम पर आप नेताओं और मंत्रियों को प्रताड़ित करना भाजपा द्वारा रची गई साजिश है। उन्होंने आरोप लगाया, भाजपा ने यह पूरी साजिश दिल्ली की आम आदमी पार्टी सरकार के काम को रोकने के लिए रची है। इसीलिए उसने बिना किसी सबूत के मुख्यमंत्री को झूठे मामले में जेल में डाल दिया। दिल्ली की कैबिनेट मंत्री आतिशी ने कहा कि केजरीवाल को जमानत देते हुए निचली अदालत ने कहा था कि ईडी के पास उनके खिलाफ कोई सबूत नहीं है और एजेंसी मामले में पक्षपातपूर्ण रवैया अपना रही है। आतिशी ने दावा किया, ''आज उच्चतम न्यायालय ने निचली अदालत के फैसले पर मुहर लगाते हुए ईडी मामले में केजरीवाल को जमानत दे दी।

तमिलनाडु : अदालत ने पूर्व मंत्री सेंथिल बालाजी की हिरासत अवधि बढ़ाई

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां की एक सत्र अदालत ने तमिलनाडु के पूर्व मंत्री वी.सेंथिल बालाजी की न्यायिक हिरासत शुक्रवार को 16 जुलाई तक बढ़ा दी। उन्हें धनशोधन के मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने पिछले साल 14 जून को गिरफ्तार किया था। प्रधान सत्र न्यायाधीश एस.अली के समक्ष अभियोजन पक्ष ने सेंथिल को केंद्रीय पुझल कारागार से वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिये पेश किया। अदालत ने इसके बाद उनकी न्यायिक हिरासत 16 जुलाई तक के लिए बढ़ा दी। अदालत ने इसी के साथ बालाजी द्वारा दाखिल वह याचिका भी खारिज कर दी, जिसमें मौजूदा सुनवाई को रोकने और मामले को स्थगित कर किसी अन्य दिन सुनवाई करने का अनुरोध किया गया था।

बालाजी को ईडी ने नौकरी बदले नकदी घोटाले से जुड़े धन शोधन मामले में गिरफ्तार किया था, जब वह पिछली एआईएडीएमके सरकार के दौरान परिवहन मंत्री थे।

गिरफ्तारी के कुछ समय बाद ही उन्होंने निजी अस्पताल में बाईपास सर्जरी कराई। इसके बाद ईडी ने उन्हें हिरासत में लेकर पूछताछ की। अदालत ने बाद में बालाजी को न्यायिक हिरासत में भेज दिया। अदालत समय-समय पर उनकी हिरासत अवधि बढ़ाती रही है। बालाजी ने कई बार जमानत अर्जी दाखिल की, लेकिन अदालतों ने उनकी याचिकाओं को खारिज कर दिया।

विझिंजम बंदरगाह पर पहुंचा पहला मालवाहक जहाज, संचालन हुआ शुरू : मुख्यमंत्री विजयन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

तिरुवनंतपुरम। केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने शुक्रवार को कहा कि विझिंजम बंदरगाह पर पहले मालवाहक जहाज का आगमन सिर्फ एक परीक्षण था। उन्होंने कहा कि इस जहाज के यहां पहुंचने के साथ ही इस अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह का संचालन शुरू हो गया। मुख्यमंत्री ने यहां बंदरगाह पर आयोजित एक समारोह में 300 मीटर लंबे चीनी जहाज 'सैन फर्नांडो' का औपचारिक रूप से स्वागत किया।

इस अवसर पर केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी एवं जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल, केरल विधानसभा अध्यक्ष एएन शमसीर, राज्य सरकार के कई मंत्री, संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) विधायक एम विन्सेंट और स्पेशल इकोनॉमिक जोन लिमिटेड (एपीएसईजेड) के प्रबंध निदेशक करण अडाणी भी मौजूद थे। मालवाहक जहाज बृहस्पतिवार को बंदरगाह पर पहुंचा था। भारत के इस सबसे बड़े बंदरगाह को 8,867 करोड़ रुपये की लागत से अडाणी पोर्ट्स और एपीएसईजेड द्वारा बनाया जा रहा है। विजयन ने एक सभा को संबोधित करते हुए कहा कि विझिंजम इंटरनेशनल सीपोर्ट लिमिटेड (वीआईएसएल) निर्धारित समय से 17 साल पहले यानी 2028 तक पूर्ण रूप से बन कर तैयार हो जाएगा। बंदरगाह पर 300 मीटर लंबे मालवाहक जहाज को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग पहुंचे थे। उन्होंने कहा कि शुरुआत में कल्पना की गई थी कि 2045 तक बंदरगाह के दूसरे, तीसरे और चौथे चरण पूरे हो जाएंगे और यह पूरी तरह सुसज्जित बंदरगाह बन जाएगा। उन्होंने हालांकि कहा कि 10 हजार करोड़ रुपये के निवेश से यह बंदरगाह 2028 तक पूर्ण रूप से विकसित हो जाएगा। निवेश के लिए जल्द ही एक समझौते पर हस्ताक्षर किए जाएंगे। आधुनिक उपकरणों व उन्नत तकनीक और आईटी प्रणालियों से लैस विझिंजम बंदरगाह भारत का पहला अर्ध-स्वचालित बंदरगाह बन जाएगा।

इस बंदरगाह के सितंबर या अक्टूबर 2024 में पूरी तरह से चालू होने की उम्मीद है। यह बंदरगाह 2019 में शुरू होना था लेकिन परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण, विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं और कोविड-19 वैश्विक महामारी के कारण संचालन शुरू होने में देरी हुई।

कन्नड़ अभिनेत्री और टीवी प्रस्तोता अपर्णा वास्तारे का निधन

बेंगलूरु। कन्नड़ सिनेमा जगत की मशहूर अभिनेत्री, टीवी प्रस्तोता और पूर्व रेडियो जॉकी अपर्णा वास्तारे का बृहस्पतिवार रात निधन हो गया। वह 57 साल की थीं। उनके करीबी सूत्रों ने यह जानकारी दी। उनके पति नागराज वास्तारे ने बताया कि अपर्णा पिछले दो साल से फेफड़ों के कैंसर से जूझ रही थीं। अपर्णा वास्तारे को डीडी चंदना पर प्रस्तुतकर्ता और कई सरकारी कार्यक्रमों तथा आयोजनों की मेजबानी के लिए जाना जाता था। कन्नड़ में उत्तम उच्चारण शैली के कारण उनके कई प्रशंसक थे। अपर्णा ने 1998 में दिवाली समारोह के दौरान लगातार आठ घंटे तक कार्यक्रम प्रस्तुत करके एक रिकार्ड बनाया था।

अपर्णा वास्तारे ने 1984 में पुट्टन्ना कनागल की अंतिम फिल्म 'मसनदा हूवु' से कन्नड़ सिनेमा जगत में अपने अभिनय की शुरुआत की थी। उन्होंने कई कन्नड़ टीवी शो में भूमिका निभाई थी। बंगलुरु मेट्रो की घोषणाओं में भी वास्तारे की ही आवाज है। अपर्णा कन्नड़ रियलिटी टीवी शो 'बिग बॉस' में भी नजर आई थीं। साथ ही उन्होंने लोकप्रिय कॉमेडी शो 'माजा टॉकीज' में 'वरालक्ष्मी' के तौर पर अपनी भूमिका निभाई थी और लोगों ने भी उन्हें सराहा था। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरामैया सहित फिल्म, टेलीविजन, साहित्यिक जगत और राजनीतिक हस्तियों ने वास्तारे के निधन पर दुख जताया। सिद्दरामैया ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''अभिनेत्री एवं प्रसिद्ध प्रस्तोता अपर्णा के निधन की खबर सुनकर दुःख हुआ। कन्नड़ चैनलों और सरकारी समारोहों के कार्यक्रमों में कन्नड़ भाषा में बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुति देकर राज्य के घर-घर में मशहूर बहुमुखी प्रतिभा की धनी अपर्णा वास्तारे बहुत जल्द ही हमें छोड़कर चली गईं।''

न्यायालय ने कन्नड समाचार चैनल के प्रसारण पर प्रतिबंध लगाने संबंधी आदेश पर रोक लगाई

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को कर्नाटक उच्च न्यायालय के उस आदेश पर रोक लगा दी, जिसमें कन्नड़ समाचार चैनल 'पावर टीवी' के प्रसारण पर प्रतिबंध लगाया गया था। न्यायालय ने कहा कि यह मामला 'पूरी तरह राजनीतिक प्रतिशोध' से प्रेरित नजर आता है। प्रधान न्यायाधीश डी. वाई. चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे. बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने कहा कि समाचार चैनल के खिलाफ मामला प्रथमदृष्टया चैनल को राज्य में राजनीतिक हस्तियों से जुड़े 'सेक्स स्कैंडल' के आरोपों को प्रसारित करने से रोकने के उद्देश्य से दर्ज किया गया है।

'मेसर्स पावर स्मार्ट मीडिया प्राइवेट लिमिटेड' द्वारा दायर याचिका पर केंद्र और अन्य को नोटिस जारी करते हुए पीठ ने उच्च न्यायालय के आदेश पर सोमवार तक रोक लगा दी और मामले की अगली सुनवाई निर्धारित की। पीठ ने कहा कि न्यायालय अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा करेगा और चैनल को अपना प्रसारण जारी रखने का अधिकार है जिसे रोका नहीं जाना चाहिए था। केंद्र की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि यह मामला मूल लाइसेंसधारक द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को अनधिकृत रूप से लाइसेंस देने से संबंधित है। पीठ ने कहा कि केंद्र निश्चित रूप से कारण बताओ नोटिस जारी करने के बाद इस प्रक्रिया को आगे बढ़ा सकता है। इसने कहा, ''जितना अधिक हम आपको सुनते हैं, उतना ही हमें विश्वास होता है कि यह राजनीतिक प्रतिशोध है, मैं बहुत ईमानदारी से यह कहना चाहता हूं। यही कारण है कि हम अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए इच्छुक हैं।'' पीठ ने कहा कि चैनल राज्य में 'सेक्स स्कैंडल' से संबंधित कुछ आरोपों को प्रसारित करना चाहता था।

चैनल ने जद (एस) नेता प्रज्वल रेवन्ना और अन्य से जुड़े हाल के सेक्स स्कैंडल आरोपों से संबंधित समाचार कथित तौर पर प्रसारित किया था। चैनल ने कर्नाटक उच्च न्यायालय की खंडपीठ के आदेश को लेकर अप्रसन्नता जाहिर की। खंडपीठ ने चैनल के प्रसारण के खिलाफ एकल पीठ द्वारा पारित स्थगन आदेश में हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया था।

उच्च न्यायालय ने जद (एस) के विधानपरिषद सदस्य एच एम रमेश गौड़ा और अन्य द्वारा दायर याचिकाओं पर यह आदेश पारित किया था। उच्च न्यायालय की एकल पीठ ने 26 जून को चैनल के संचालन पर रोक लगा दी थी। केंद्र ने चैनल को उसके लाइसेंस से संबंधित कुछ आरोपों के संबंध में कारण बताओ नोटिस जारी किया था।

कर्नाटक में 'गारंटियों' की वजह से विकास कार्यों के लिए धन जुटाना मुश्किल हो गया है: रायरेड्डी

बेंगलूरु/भाषा। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरामैया के आर्थिक सलाहकार बसवराज रायरेड्डी ने कहा है कि राज्य सरकार की पांच गारंटियों पर भारी धनराशि खर्च करने से विकास कार्यों के लिए धन मुहैया करा पाना मुश्किल हो गया है। कोप्पल जिले के येलबुर्गा से कांग्रेस विधायक रायरेड्डी ने अपने विधानसभा क्षेत्र के मंगलुरु गांव में एक झील से संबंधित कार्य के उद्घाटन के बाद किसानों की सभा में यह बात कही।

रायरेड्डी ने कहा, मुख्यमंत्री ने मुझे अपना आर्थिक सलाहकार बनाया है और मैं उनसे रोजाना बातचीत करता हूं, इसलिए इस (झील परियोजना के लिए) पैसा जारी हुआ है, अन्यथा यह जारी नहीं होता... असंभव। पूरे राज्य में विकास का यही एकमात्र काम हो रहा है, क्योंकि गारंटियां पूरी करने में ही बहुत सारा पैसा खर्च हो रहा है। हमें गारंटियों को पूरा करने के लिए 60,000-65,000 करोड़ रुपये खर्च करने होंगे। आंतरिक वित्तीय हालात को देखते हुए मुझे पता है कि यह कितना मुश्किल है। विपक्षी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और जनता दल (सेक्युलर) राज्य की कांग्रेस सरकार पर कोई भी विकास कार्य नहीं करने का आरोप लगा रहे हैं।

वाल्मीकि कॉर्पोरेशन अनियमितता मामले में ईडी से जांच की जरूरत नहीं थी : डीके शिवकुमार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी के शिवकुमार ने शुक्रवार को कहा कि कर्नाटक महर्षि वाल्मीकि अनुसूचित जनजाति विकास निगम में कथित वित्तीय अनियमितताओं की प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) से जांच की कोई जरूरत नहीं थी क्योंकि राज्य सरकार द्वारा गठित विशेष जांच दल (एसआईटी) मामले की जांच कर रहा है। शिवकुमार कांग्रेस की राज्य इकाई के प्रमुख भी हैं। उन्होंने कर्नाटक महर्षि वाल्मीकि अनुसूचित जनजाति विकास निगम लिमिटेड में अनियमितताओं से जुड़े धनशोधन मामले की जांच के तहत पूर्व मंत्री बी नागेंद्र को एसेंजी द्वारा हिरासत में लिए जाने के बारे में पूछे गए सवाल के जवाब में यह बात कही।

उन्होंने संवाददाताओं से कहा,'' हम (राज्य सरकार) एसआईटी के माध्यम से जांच कर रहे हैं, इसकी (ईडी जांच) कोई जरूरत नहीं थी, लेकिन वे जांच कर रहे हैं। मैं इसके बारे में पता करूंगा और फिर इस पर कुछ कहूंगा।'' कथित अनियमितताओं के मद्देनजर नागेंद्र ने छह जून को अनुसूचित जनजाति कल्याण मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया था। ईडी ने पिछले दो दिनों में नागेंद्र और सत्तारूढ़ कांग्रेस के विधायक बसनगौड़ा दद्दल से जुड़े परिसरों सहित कई परिसरों पर छापे मारे थे। दद्दल कर्नाटक महर्षि वाल्मीकि अनुसूचित जनजाति विकास निगम के अध्यक्ष भी हैं।

शिवकुमार ने मैसूरु शहरी विकास प्राधिकरण द्वारा भूमि के कथित धोखाधड़ीपूर्ण आवंटन जिसमें मुख्यमंत्री सिद्दरामैया की पत्नी को दिया गया भूखंड शामिल है, को लेकर मैसूरु में भाजपा के विरोध पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, ''मैसूरु में वे (भाजपा) राजनीति कर रहे हैं क्योंकि इसमें (आरोपों में) कोई सच्चाई नहीं है। जब समय आएगा, हम इसका जवाब देंगे।'' शिवकुमार ने कहा कि कोई घोटाला नहीं हुआ है। उन्होंने कहा, ''जो कुछ भी हुआ है, वह भाजपा के कार्यकाल में हुआ है...। लोकसभा चुनाव जीतने के बाद वह बताना चाहते हैं कि कर्नाटक में सब कुछ ठीक नहीं है।''

कर्नाटक में एससी, एसटी निधि का दुरुपयोग राहुल गांधी के दोहरे मानदंड को उजागर करता है: भाजपा

नई दिल्ली। भाजपा ने शुक्रवार को कर्नाटक की कांग्रेस सरकार पर आरोप लगाया कि वह राज्य में चुनाव के दौरान राहुल गांधी द्वारा किए गए वादों को पूरा करने के लिए अनुसूचित जाति (एससी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी) के कल्याण से संबंधित कोष का इस्तेमाल कर रही है।

कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि कर्नाटक में कांग्रेस सरकार जो कर रही है वह संविधान का उल्लंघन है और इस पर कार्रवाई की जानी चाहिए। यह दावा करते हुए कि गांधी के दोहरे मानदंड का खुलासा हो गया है, मेघवाल ने कहा, ''कर्नाटक में लोगों को धोखा दिया जा रहा है।'' उन्होंने कहा कि एक तरफ राहुल गांधी संविधान की प्रति लेकर घूम रहे हैं, वहीं राज्य में संवैधानिक मूल्यों का उल्लंघन हो रहा है। कानून मंत्री ने एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए दावा किया कि एससी और एसटी कल्याण के लिए आवंटित 39,121 करोड़ रुपये में से 14,730 करोड़ रुपये से अधिक की राशि उन गारंटी पर खर्च कर दी गई है जिनका कांग्रेस ने 2023 के विधानसभा चुनाव के दौरान वादा किया था। मेघवाल ने कांग्रेस पर आरोप लगाया कि उसने हालिया लोकसभा चुनाव के दौरान फर्जी विमर्श गढ़ा। उन्होंने यह बात विपक्ष के इस आरोप के स्पष्ट संदर्भ में कही कि मोदी सरकार बड़ा जनादेश प्राप्त करके संविधान को बदलना चाहती थी। उन्होंने कहा, वे कुछ सीट जीतने में भले ही सफल हो गए हों, लेकिन लोगों का दिल कभी नहीं जीत सकते।

पोक्सो मामले में येडीयुरप्पा को अदालत में 15 जुलाई को व्यक्तिगत पेशी से छूट

बेंगलूरु। कर्नाटक उच्च न्यायालय ने शुक्रवार को पूर्व मुख्यमंत्री बी.एस. येडीयुरप्पा द्वारा उनके खिलाफ 'पॉक्सो' मामले को रद्द करने की मांग वाली याचिका पर सुनवाई 26 जुलाई तक के लिए स्थगित कर दी और वरिष्ठ भाजपा नेता को इस मामले के संबंध में 15 जुलाई को बेंगलूरु की अदालत में व्यक्तिगत रूप से पेश होने से छूट दे दी। यहां पोक्सो अधिनियम मामलों के लिए फास्ट ट्रैक अदालत-1 ने चार जुलाई को 81 वर्षीय बुजुर्ग नेता को 15 जुलाई को पेश होने के लिए समन जारी किया था। मामले की जांच कर रहे आपराध जांच विभाग (सीआईडी) ने 27 जून को फास्ट ट्रैक अदालत में उनके खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया। एक दिन बाद, उच्च न्यायालय ने अभियोजन पक्ष को प्राथमिकी को रद्द करने की मांग वाली उनकी याचिका पर आपत्तियां दर्ज करने की अनुमति देने के बाद सीआईडी को येडीयुरप्पा को गिरफ्तार करने से रोकने के अपने अंतरिम आदेश को बढ़ा दिया था और फिर आगे की सुनवाई दो सप्ताह के लिए स्थगित कर दी थी, जो आज समाप्त हो गई। येडीयुरप्पा के खिलाफ एक नाबालिग लड़की के यौन उत्पीड़न के आरोपों की जांच कर रही सीआईडी ने आरोपपत्र में आरोप लगाया है कि उन्होंने और तीन अन्य आरोपियों ने कथित पीड़िता और उसकी मां को चुप रहने के लिए पैसे दिए थे।

ईडी ने धनशोधन मामले की जांच के सिलसिले में कर्नाटक के पूर्व मंत्री बी नागेंद्र को हिरासत में लिया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। कर्नाटक महर्षि वाल्मीकि अनुसूचित जनजाति विकास निगम लिमिटेड में कथित अनियमितताओं से जुड़े धनशोधन मामले की जांच के लिए प्रवर्तन निदेशालय ने शुक्रवार को पूर्व मंत्री बी नागेंद्र को हिरासत में ले लिया। आधिकारिक सूत्रों ने यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया कि कांग्रेस विधायक को पूछताछ के लिए उनके आवास से ईडी कार्यालय ले जाया गया है। अनुसूचित जनजाति कल्याण मंत्री नागेंद्र ने घोटाले के सिलसिले में लगे आरोपों के बाद छह जून को अपने पद से इस्तीफा दे दिया था।

ईडी कार्यालय ले जाए जाते समय नागेंद्र ने संवाददाताओं से कहा, ''मुझे मेरे घर से ले जाया जा रहा है...मुझे कुछ भी नहीं पता।'' ईडी ने पिछले दो दिनों में कर्नाटक के पूर्व मंत्री नागेंद्र और सत्तारूढ़ कांग्रेस विधायक बसनगौड़ा दद्दल के परिसरो सहित कई स्थानों पर तलाशी ली है। सूत्रों ने बताया कि एजेंसी ने धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत दर्ज मामले में कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र में करीब 20 स्थानों पर छापेमारी की।

कर्नाटक महर्षि वाल्मीकि अनुसूचित जनजाति विकास निगम लिमिटेड में धन का अवैध हस्तांतरण का मामला तब सामने आया था जब इसके लेखा अधीक्षक चंद्रशेखरन पी ने 26 मई को आत्महत्या कर ली थी।

घटनास्थल से पी. द्वारा लिखा गया एक सुसाइड नोट भी बरामद हुआ था, जिसमें उन्होंने दावा किया था कि निगम के बैंक खाते से उसके 187 करोड़ रुपए का अनाधिकृत हस्तांतरण किया गया है। उसमें से 88.62 करोड़ रुपए अवैध रूप से विभिन्न खातों में भेजे गए। ये बैंक खाते कथित रूप से प्रसिद्ध आईटी कंपनियों और हैदराबाद में स्थित एक सहकारी बैंक के हैं। चंद्रशेखरन ने सुसाइड नोट में निगम के निलंबित किए गए प्रबंध निदेशक जे जी पद्मनाभ, लेखा अधिकारी परशुराम जी दुरुगनवर और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की मुख्य प्रबंधक सुचिस्मिता रावल का नाम शामिल किया था। उन्होंने यह भी दावा किया था कि कि पूर्व मंत्री बी नागेंद्र ने धन हस्तांतरित करने के लिए मौखिक आदेश जारी किए थे।

राज्य सरकार ने इस मामले की जांच के लिए आपराधिक जांच विभाग (सीआईडी) में आर्थिक अपराध के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक मनीष खरबीकर की अध्यक्षता में एक एसआईटी का गठन किया है। एसआईटी ने मंगलवार को इस मामले की जांच के सिलसिले में नागेंद्र और दद्दल से पूछताछ की थी।

वाल्मीकि निगम घोटाला

एसआईटी ने आरोपी के 3.3 करोड़ रुपये की कार जब्त की

बेंगलूरु। महर्षि वाल्मीकि अनुसूचित जनजाति विकास निगम घोटाले की जांच कर रही एसआईटी हैदराबाद के एक कार डीलर से 3.3 करोड़ रुपये वसूलने की तैयारी में है।

एसआईटी इस रकम को इसलिए रिकवर करने की कोशिश में है, क्योंकि यह पैसा महर्षि वाल्मीकि अनुसूचित जनजाति निगम का है। एसआईटी ने 13 जून को हैदराबाद से सत्यनारायण वर्मा (36) को गिरफ्तार किया। पुलिस ने उसके कब्जे से एक बड़ी रकम जब्त की, जो कथित तौर पर वाल्मीकि निगम की है। पुलिस के अनुसार सत्यनारायण वर्मा पूरे घोटाले में बिचौलिया है। उसकी भूमिका इसमें शामिल लोगों के अलग-अलग खातों में पैसे जमा कराने की थी। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से एक लेम्बोर्गिनी भी बरामद की है। इस कार को वर्मा ने हैदराबाद में एक डीलर से 3.3 करोड़ रुपये में खरीदी थी। पुलिस ने जांच के बाद कार को डीलर के पास वापस करने और भुगतान की गई राशि को अदालत के खाते में स्थानांतरित करने के लिए कोर्ट का रुख किया है। पुलिस सूत्रों की मानें तो कोर्ट की अनुमति के बाद डीलर को कार सौंप दी जाएगी और 3.3 करोड़ की राशि वापस ले ली जाएगी। बता दें कि महर्षि वाल्मीकि अनुसूचित जनजाति विकास निगम घोटाले की जांच के लिए प्रदेश सरकार ने एसआईटी गठित की है। इस मामले में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की ओर से एफआईआर दर्ज कराई गई। अब मामले में एसआईटी, सीबीआई और ईडी जांच कर रही है।

निर्बाध बिजली आपूर्ति के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहेः मुख्यमंत्री शर्मा

छत्तीसगढ़ सरकार ने राजस्थान के बिजलीघरों के लिए कोयले की आपूर्ति हेतु हसदेव अरण्य कोलफील्ड में संचालित परसा ईस्ट एवं कांता बासन (पीईकेबी) कोल ब्लॉक की 91.21 हेक्टेयर वन भूमि का उपयोग करने की अनुमति प्रदान की दी है जिसके लिए छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का समस्त राजस्थान परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राज्य को छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा कोयला खंड की भूमि का उपयोग करने की अनुमति दिए जाने पर अपने समकक्ष विष्णु देव साय को धन्यवाद देते हुए शुक्रवार को कहा कि राज्य सरकार निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री शर्मा ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट कर कहा, सतत विद्युत आपूर्ति को सुनिश्चित करने हेतु राजस्थान सरकार प्रतिबद्ध है।

उन्होंने कहा, छत्तीसगढ़ सरकार ने राजस्थान के बिजलीघरों के लिए कोयले की आपूर्ति हेतु हसदेव अरण्य कोलफील्ड में संचालित परसा ईस्ट एवं कांता बासन (पीईकेबी) कोल ब्लॉक की 91.21 हेक्टेयर वन भूमि का उपयोग करने की अनुमति प्रदान की दी है जिसके लिए छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का समस्त राजस्थान परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद। उन्होंने कहा कि 'आपणो अग्रणी राजस्थान' के संकल्प के अनुरूप राजस्थान में निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने की दिशा में हमारी सरकार निरंतर प्रयासरत है।

शर्मा ने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार के इस फैसले से राज्य की 4340 मेगावाट क्षमता वाली तापीय विद्युत परियोजनाओं को कोयले की आपूर्ति सुनिश्चित किये जाने में काफी मदद मिलेगी। इसके साथ ही शर्मा ने मुख्यमंत्री साय से आग्रह किया है कि पीईकेबी कोयला खंड से खनन कार्य निरंतर जारी रखने तथा वित्त वर्ष 2024-25 में 18 एमटीपीए की उत्पादन क्षमता प्राप्त करने के लिए आवश्यक 108 हेक्टेयर भूमि पर वृक्षों की कटाई करवाकर, और वित्त वर्ष 2025-26 से अगले छह वर्षों के खनन कार्यों हेतु आवश्यक 411 हेक्टेयर भूमि पर वृक्षों की कटाई के पश्चात, उक्त भूमि को राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम (आरवीयूएन) को हस्तांतरित करने की व्यवस्था सुनिश्चित करें। साथ ही उन्होंने परसा कोयला खंड पर खनन कार्य प्रारंभ करने हेतु संबंधित भूमि पर वृक्षों की कटाई करवाकर उक्त भूमि को आरवीयूएन को हस्तांतरित करने की व्यवस्था करने की मांग है।

राजस्थान में किसानों का आर्थिक सशक्तिकरण हमारा संकल्पः भजनलाल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शुक्रवार को कहा कि राज्य सरकार किसानों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने और उनके घरों में खुशहाली लाने के लिए प्रतिबद्धता के साथ काम कर रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने बजट में कृषक कल्याण के लिए 96 हजार करोड़ रुपये से अधिक का प्रावधान किया है। वह परिवर्तित बजट (2024-25) में कृषि संबंधी घोषणाओं के लिए किसानों द्वारा आयोजित अभिनन्दन और आभार समारोह को सम्बोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने किसानों को अन्नदाता करार देते हुए कहा कि वे करोड़ों देशवासियों का पेट भरने के साथ ही देश और राज्य की अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प के अनुरूप राज्य सरकार किसानों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने और उनके घरों में खुशहाली लाने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। आधिकारिक बयान के अनुसार मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार भी किसानों को खुशहाल बनाने के लिए समर्पित भाव से कार्य कर रही है। शर्मा ने कहा, हमने सरकार का गठन होते ही पूर्वी राजस्थान के लिए अति महत्वपूर्ण ईआरसीपी योजना के लिए केंद्र और मध्य प्रदेश सरकार के साथ ऐतिहासिक समझौता किया। साथ ही, शेखावाटी क्षेत्र की प्यास बुझाने के लिए यमुना जल समझौते को भी मूर्त रूप दिया, जबकि पूववर्ती सरकार ने इस संबंध में केंद्र और हरियाणा सरकार से कभी पत्र व्यवहार तक नहीं किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि किसान सम्मान निधि को छह हजार से बढ़ाकर आठ हजार रुपए करने, गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य बढ़ाने तथा पशुपालकों के लिए गोपाल क्रेडिट कार्ड के माध्यम से एक लाख रुपए तक का ऋण देने जैसे निर्णय सरकार की किसान एवं पशुपालक हितैषी नीति के प्रतीक हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि देश में सबसे लम्बे समय तक शासन करने वालों ने कभी भी किसानों की चिंता नहीं की और गांव तथा शहर में भेदभाव किया। उन्होंने कहा कि लेकिन 2014 के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने किसानों के दर्द को समझा और उनके जीवन स्तर में बदलाव के संकल्प के साथ कई महत्वपूर्ण योजनाएं शुरू कीं। शर्मा ने कहा कि किसान परिवारों के आर्थिक सशक्तीकरण का संकल्प पूरा करने के लिए राज्य के परिवर्तित बजट (2024-25) में कृषि विकास एवं कृषक कल्याण के लिए 96 हजार करोड़ रुपये से भी अधिक का प्रावधान किया गया है। उनके अनुसार, साथ ही 'राजस्थान इरीगेशन वाटर ग्रिड' मिशन के अन्तर्गत 50 हजार करोड़ रुपये तथा 'रन ऑफ वाटर ग्रिड' के अन्तर्गत 30 हजार करोड़ रुपये से अधिक के कार्य करवाये जायेंगे।

उनका कहना था कि इसके साथ ही राजस्थान कृषि विकास योजना के तहत 650 करोड़ रुपए के कार्य कराए जाएंगे।

मारपीट में घायल हुए भाजपा कार्यकर्ता की इलाज के दौरान मौत : पुलिस

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। कोटपूतली-बहरोड़ जिले में आठ लोगों ने भारतीय जनता पार्टी के एक स्थानीय नेता और व्यवसायी को सरियों व लाठियों से बुरी तरह पीटा जिनकी शुक्रवार को जयपुर में मौत हो गई। पुलिस ने यह जानकारी दी। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (कोटपूतली-बहरोड़) नेम सिंह चौहान ने कहा कि यासीन खान बृहस्पतिवार को जयपुर से अलवर लौट रहे थे। आरोपियों ने उनकी कार रुकवा ली और उन पर सरियों तथा लाठियों से हमला कर दिया। बुरी तरह से घायल यासीन को जयपुर के अस्पताल में भर्ती करवाया गया।

उन्होंने बताया, उन्हें जयपुर के एसएमएस अस्पताल में भर्ती कराया गया था जहां आज उन्होंने दम तोड़ दिया। घटना कोटपूतली-बहरोड़ के नारायणपुर थाना क्षेत्र के विजयपुरा गांव के पास की है। थानाधिकारी शंभु मीणा ने कहा कि यासीन दो अन्य लोगों-जितेंद्र शर्मा और परमेंद्र शर्मा के साथ एक कार में अलवर की ओर जा रहे थे। तभी आठ आरोपियों ने उनकी कार रुकवा ली और यासीन को पीटा।

उन्होंने कहा,'आरोपी दो एसयूवी में थे और यासीन की कार का पीछा कर रहे थे। विजयपुरा गांव के पास उन्होंने कार रुकवा कर यासीन को बाहर निकाला। घटना में परमेंद्र को भी मामूली चोटें आईं। उन्होंने कहा, आरोपियों का एकमात्र लक्ष्य यासीन था।

थानाधिकारी ने कहा कि यासीन को प्राथमिक इलाज के लिए नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया और वहां से उन्हें आगे के इलाज के लिए जयपुर के एसएमएस अस्पताल भेजा गया जहां उनकी मौत हो गई। मीणा ने कहा कि यासीन मेव समुदाय से थे और अलवर के रहने वाले थे। आरोपी भी उसी समुदाय और जिले के हैं।

उन्होंने कहा,उनमें कोई पुरानी दुश्मनी थी। सभी आरोपी फरार हैं और उनकी तलाश के लिए अलग-अलग टीमें गठित की गई हैं। तिजारा (अलवर) से भाजपा के विधायक बाबा बालकनाथ ने कहा कि घटना स्तब्ध करने वाली है।उन्होंने कहा कि यासीन भाजपा कार्यकर्ता था।

वरिष्ठ सहायक 10 हजार रुपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार

जयपुर। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की टीम ने शुक्रवार को सवाई माधोपुर में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के एक वरिष्ठ सहायक को 10 हजार रुपये की कथित रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार कर लिया। ब्यूरो के महानिदेशक डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा ने बताया कि विभाग के वरिष्ठ सहायक हरिओम गोयल को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने बताया कि शिकायतकर्ता ने शिकायत की कि उसके पिताजी के पीएफ खाते में जमा पैसे निकलवाने तथा सेवानिवृति संबंधी कार्यों को करवाने की एवज में आरोपी वरिष्ठ सहायक गोयल द्वारा 10 हजार रुपये की रिश्वत राशि मांग कर परेशान किया जा रहा था। मेहरड़ा ने बताया कि ब्यूरो की टीम ने शिकायत का सत्यापन कर शुक्रवार को आरोपी को शिकायतकर्ता से 10 हजार रुपये की रिश्वत राशि लेते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार किया। उन्होंने बताया कि आरोपी से पूछताछ व आगे की कार्रवाई की जा रही है।

सघन आबादी क्षेत्र में आ रही औद्योगिक इकाईयों का कराया जाएगा परीक्षण : राठौड़

जयपुर। राजस्थान के उद्योग मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने शुक्रवार को राज्य विधानसभा में कहा कि प्रदेश में सघन आबादी क्षेत्र में आ रहे सभी औद्योगिक क्षेत्रों का परीक्षण कराकर सभी स्टेकहॉल्डर्स के हितों को ध्यान में रखते हुए समाधान का प्रयास किया जाएगा। राठौड़ शून्यकाल में मालवीय नगर विधायक कालीचरण सराफ द्वारा इस संबंध में पर्ची के माध्यम से उठाये गए मामले पर जवाब दे रहे थे। उन्होंने बताया कि जयपुर स्थित बाइस गोदाम, सुदर्शनपुरा, सुदर्शनपुरा विस्तार एवं करतारपुरा औद्योगिक क्षेत्र ग्रीन, व्हाइट और ऑरेंज श्रेणी में आते हैं। राज्य में ऐसे कई शहर हैं जिनमें पुरानी औद्योगिक इकाईयां अब शहर के बीच में आ गई हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे मामलों में कार्यवाही में चुनौती यह है कि रीको के पास जमीन लीज पर आती है जिसके कारण रीको पर भू उपयोग परिवर्तन को लेकर पाबंदी है। साथ ही सर्वोच्च न्यायालय ने भी एक प्रकरण में रीको पर भू उपयोग परिवर्तन पर रोक लगाई हुई है।

भीलवाड़ा जिले में नए औद्योगिक क्षेत्र के लिए भूमि आवंटन को मंजूरी

जयपुर। राजस्थान सरकार ने भीलवाड़ा जिले में नया औद्योगिक क्षेत्र स्थापित करने के लिए भूमि आवंटन को मंजूरी दे दी है। आधिकारिक बयान के अनुसार, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भीलवाड़ा जिले में नए औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना के लिए राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं विनियोजन निगम लिमिटेड को भूमि आवंटन के प्रस्ताव को मंजूरी दी है। प्रस्ताव के अनुसार, भीलवाड़ा जिले की आसींद तहसील के निम्बाहेड़ा में 99.72 हैक्टेयर भूमि आवंटित की जाएगी। ये भूमि राजस्थान भू-राजस्व (औद्योगिक क्षेत्र आवंटन) नियम-1959 के तहत आवंटित की जाएगी।

विश्वविद्यालय युवाओं को नवाचारों से जोड़ते हुए शोध की मौलिक भारतीय दृष्टि से करें संपन्न : मिश्र

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जोधपुर। राजस्थान के राज्यपाल और कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा है कि प्रौद्योगिकी शिक्षा के तहत विश्वविद्यालय युवाओं को नवाचारों से जोड़ते हुए शोध की मौलिक भारतीय दृष्टि से संपन्न करे। मिश्र यहां एम.बी.एम विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि तकनीकी शिक्षा का उद्देश्य छात्रों में निहित अद्वितीय क्षमताओं को पहचान कर, उन्हें भविष्य के अवसरों के लिए तैयार करना है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अर्जित ज्ञान का उपयोग राष्ट्र और समाज के विकास के साथ ही मानवता के कल्याण में करें। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रबंधन करना हमारी प्राथमिकता है। इस पहल के तहत सभी विश्वविद्यालय ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए विशेष कदम उठाए है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय समय पर दीक्षांत समारोह आयोजित कर विद्यार्थियों को समय पर उपाधियां प्रदान करें। इससे विद्यार्थी भविष्य में और अधिक ऊर्जा के साथ अपना सर्वस्व देने के लिए तत्पर रहेंगे।

मिश्र ने कहा कि शिक्षण में जो भी प्रौद्योगिकी विकसित करें वह युगानुकूल हो। उसका उपयोग मानव कल्याण के लिए करें। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी वैदिक भारत के सिद्धांतों को आधार बनाकर ऐसे नवाचार करें जो प्रकृति के अनुकूल हो। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी शिक्षण संस्थान तकनीकी शिक्षा में मानवीय मूल्यों का समावेश करें, जिससे विद्यार्थी न केवल भविष्य के लिए अच्छे इन्सान और बेहतर नागरिक बनेंगे, बल्कि सांस्कृतिक रूप में भी और अधिक संपन्न होंगे।

उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति देश को कौशल विकास से जोड़ने के साथ ही मौलिक शोध एवं अनुसंधान के लिए प्रेरित करने वाली है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्स) का है, इसका उपयोग मानवता के कल्याण से जुड़े विषयों में हो।

उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे धरती पर जलवायु परिवर्तन जन्य विभिन्न प्रकार के संकटों को सुलझाने में अपना योगदान दें। साथ ही, नेट ज़ीरो के लक्ष्य को कैसे प्राप्त करें, इस पर भी तकनीकी शिक्षा आधारित हो। इसके लिए गैर पारम्परिक ऊर्जा के स्रोतों, नवीन प्रयोगों के लिए शोध एवं अनुसंधान करें। साथ ही इलेक्ट्रीक व्हीकल, लिथियम बैटरी, ग्रीन हाइड्रोजन ईंधन, सौर व पवन ऊर्जा, नाभिकीय संवर्धन के निजी एवं सरकारी क्षेत्रों में नवीन नवाचार हों। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि आप चक्रवात, सुखा, बाढ़, भूस्खलन जैसे संकटों में अभियांत्रिकी के उपयोग से आपदाओं के समुचित प्रबंधन में संवाहक बनें।

मिश्र ने कहा कि यह विश्वविद्यालय देश के चुनिन्दा विश्वविद्यालय की सूची में शामिल हैं, जहां पेट्रोलियम में स्नातक पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुआ है। यह अच्छी पहल है। इससे पेट्रोलियम रिफाईनरी में भी युवाओं को अवसर मिलेंगे। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय में केन्द्र सरकार की परियोजना के सामरिक दृष्टि के महत्व के तहत 5जी स्पेक्ट्रम प्रयोगशाला प्रारम्भ की गयी है। उन्होंने कहा कि 5जी से सम्बंधित नये नवाचारों, डिजिटल क्रांति में 5जी के प्रयोगों का लाभ विद्यार्थियों को मिलेगा। साथ ही, विश्वविद्यालय में गैर पारम्परिक ऊर्जा के स्त्रोतों के अध्ययन के लिए सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना की गई, ताकि परम्परागत पाठ्यक्रमों के साथ-साथ तकनीकी क्षेत्र में होने वाले नये पाठ्यक्रमों से भी विद्यार्थी जुड़ सकेगें। समारोह में राज्यपाल कलराज मिश्र ने कुल 19 विद्यार्थियों को गोल्ड मेडल प्रदान किए। जिसमें 13 गोल्ड मेडल यूजी के विद्यार्थियों को, चार गोल्ड मेडल पीजी के विद्यार्थियों को एवं दो गोल्ड मेडल एमसीए के विद्यार्थियों को प्रदान किए गए। साथ वर्ष 2022 एवं 2023 में उत्तीर्ण कुल 680 विद्यार्थियों को स्नातक में उपाधियां प्रदान की गई। इसी प्रकार कुल 167 विद्यार्थियों को स्नातकोत्तर में, 28 विद्यार्थियों को बी आर्किटेक्चर में, 52 विद्यार्थियों को एमसीए में एवं 11 विद्यार्थियों को पी.एच.डी की उपाधि प्रदान की गई।

मिश्र ने जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के नए परिसर में स्थित नवनिर्मित संविधान स्तम्भ का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि संविधान हमारी उदात्त जीवन परम्पराओं का संवाहक है।

विधानसभा के बजट सत्र में सदन में नहीं आएंगे किरोड़ी मीणा

जयपुर। सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता और विधायक किरोड़ी लाल मीणा विधानसभा के मौजूदा बजट सत्र में सदन में नहीं आएंगे। सदन ने शुक्रवार को उन्हें सदन की बैठकों से अनुपस्थित रहने की अनुमति दे दी। शून्यकाल की शुरुआत में विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने सदन को सूचित किया कि विधायक किरोड़ी लाल मीणा ने विधानसभा के द्वितीय सत्र में अपरिहार्य कारणों से सदन की बैठकों से अनुपस्थित रहने की अनुमति मांगी है। उन्होंने ध्वनिमत से मंजूरी मिलने के बाद विधायक को यह अनुमति देने की घोषणा की।

उल्लेखनीय है कि कृषि मंत्री किरोड़ी लाल मीणा ने राज्य में लोकसभा चुनावों में भाजपा के निराशाजनक प्रदर्शन के बाद हाल ही में मंत्री पद से इस्तीफा देने की घोषणा की थी। हालांकि उनके इस्तीफे को आधिकारिक रूप से अभी स्वीकार नहीं किया गया है। मीणा विधानसभा के तीन जुलाई को शुरू हुए बजट सत्र में भाग लेने नहीं आ रहे हैं।

नागौर और धौलपुर जिले में भारी बारिश

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के नागौर व धौलपुर जिले में शुक्रवार सुबह साढ़े आठ बजे तक के चौबीस घंटे में भारी बारिश दर्ज की गई। जयपुर मौसम केंद्र के अनुसार पिछले 24 घंटे में राज्य में कुछ स्थानों पर मेघ गर्जन के साथ हल्की से मध्यम वर्षा तथा नागौर व धौलपुर जिले में भारी वर्षा दर्ज की गई है। सर्वाधिक बारिश नागौर के परबतसर में 89 मिलीमीटर व धौलपुर के सैपऊ में 65 मिलीमीटर दर्ज की गई है।

जयपुर मौसम केंद्र के अनुसार शुक्रवार को राज्य के उत्तरी व पूर्वी भागों में मेघ गर्जन के साथ बारिश की गतिविधियां जारी रहने तथा दक्षिणी व पश्चिमी भागों में बारिश की गतिविधियों में कमी रहने की प्रबल संभावना है। वहीं जयपुर, भरतपुर संभाग व शेखावाटी क्षेत्र में कहीं-कहीं मध्यम से तेज बारिश व एक दो स्थानों पर भारी बारिश होने की संभावना है। इसी तरह कोटा, जयपुर व भरतपुर संभाग के कुछ भागों में आगामी दो-तीन दिन मध्यम बारिश होने की संभावना है। 16 जुलाई से कोटा, उदयपुर संभाग में कहीं-कहीं भारी बारिश होने की संभावना है।

राज्य के बीकानेर संभाग के कुछ भागों में आगामी दो-तीन दिन मध्यम बारिश तथा जोधपुर संभाग के अधिकांश भागों में आगामी तीन-चार दिन मौसम मुख्यतः शुष्क रहने की संभावना है।

सीआईएसएफ कर्मी को थप्पड़ मारने वाली महिला कर्मी गिरफ्तार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान में जयपुर हवाई अड्डे पर सुरक्षा जांच में तैनात केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के एक अधिकारी को थप्पड़ मारने के आरोप में एक विमानन कंपनी की महिला कर्मी को बृहस्पतिवार को गिरफ्तार कर लिया गया जबकि कंपनी ने इसे यौन उत्पीड़न का गंभीर मामला बताया। सीसीटीवी वीडियो क्लिप में सीआईएसएफ अधिकारी महिला से बात करते हुए दिखाई दे रहा है। वीडियो में दिख रहा है कि महिला ने दो कदम आगे बढ़कर सीआईएसएफ कर्मी को अचानक थप्पड़ मार दिया। इसके बाद एक महिला कांस्टेबल उसे एक तरफ ले गई।

पुलिस ने सीआईएसएफ अधिकारी की शिकायत के आधार पर अनुराधा रानी के खिलाफ मारपीट का मामला दर्ज किया है, वहीं विमानन कंपनी ने भी स्थानीय पुलिस से संपर्क किया और कहा कि वह तत्काल कानूनी कार्रवाई कर रही है। अधिकारियों ने बताया कि स्थानीय अदालत ने महिला को न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। विमानन कंपनी 'स्पाइस जेट' के प्रवक्ता ने एक बयान में कहा कि उसकी कर्मचारी के साथ अनुचित भाषा इस्तेमाल की गई थी और सीआईएसएफ कर्मी ने महिला को ड्यूटी के बाद उसके घर पर मिलने के लिए भी कहा था। पुलिस ने शुरू में कहा था कि रानी खाद्य पर्यवेक्षक (फूड सुपरवाइजर) के रूप में काम करती है, लेकिन विमानन कंपनी ने उसे महिला सुरक्षा कर्मचारी बताया।

पुलिस उपायुक्त (पूर्व) कावेंद्र सिंह ने कहा, हम

मामले की जांच कर रहे हैं, जिसके बाद उचित कार्रवाई की जाएगी। सीआईएसएफ अधिकारियों ने बताया कि अनुराधा रानी सुबह करीब चार बजे अन्य कर्मचारियों के साथ 'वाहन द्वार' से हवाई अड्डे में प्रवेश कर रही थी तभी सीआईएसएफ के सहायक उप निरीक्षक गिरिराज प्रसाद ने उसे वह द्वार का उपयोग करने की वैध अनुमति न होने के कारण रोक दिया।

सीआईएसएफ अधिकारियों ने बताया कि इसके बाद महिला को कंपनी के चालक दल के सदस्यों के लिए बने पास के प्रवेश द्वार पर जांच से गुजरने के लिए कहा गया, लेकिन उस समय वहां कोई महिला सीआईएसएफ कर्मी मौजूद नहीं थी।

जयपुर हवाई अड्डा थाना प्रभारी राम लाल ने बताया कि एएसआई ने सुरक्षा जांच के लिए एक महिला सहकर्मी को बुलाया, लेकिन बहस बढ़ गई और स्पाइसजेट कर्मचारी ने उसे थप्पड़ मार दिया। उन्होंने कहा कि खाद्य पर्यवेक्षक के खिलाफ भारत न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 121 (1) (लोक सेवक को उसके कर्तव्य से रोकना और चोट पहुंचाना) और 132 (लोक सेवक पर हमला करना) के तहत मामला दर्ज किया गया है।

थाना प्रभारी ने बताया कि एएसआई की शिकायत के आधार पर अनुराधा रानी को गिरफ्तार कर लिया गया है और मामले की जांच की जा रही है। स्पाइस जेट के प्रवक्ता ने एक बयान में कहा कि महिला कर्मचारी के पास हवाई अड्डे में प्रवेश के लिए देश के नागरिक उड्डयन सुरक्षा नियामक 'ब्यूरो ऑफ सिविल एविएशन सिक्योरिटी' (बीसीएएस) द्वारा जारी वैध पास था।

बयान में कहा गया, सीआईएसएफ कर्मी ने उसके साथ अनुचित और अस्वीकार्य भाषा का इस्तेमाल किया और उसे ड्यूटी के बाद उसके घर आकर मिलने के लिए भी कहा। बयान के अनुसार, स्पाइसजेट अपनी महिला कर्मचारी के खिलाफ यौन उत्पीड़न के इस गंभीर मामले में तत्काल कानूनी कार्रवाई कर रही है और उसने स्थानीय पुलिस से संपर्क किया है।

बयान में कहा गया, हम अपनी कर्मचारी के साथ मजबूती से खड़े हैं और उसे पूरा सहयोग देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। पुलिस ने बताया कि महिला को गिरफ्तार कर लिया गया है और उसका बयान दर्ज किया जा रहा है। महिला ने भी शिकायत दर्ज कराई है। एएसआई के खिलाफ महिला द्वारा लगाए गए यौन उत्पीड़न के आरोपों के बारे में पूछे जाने पर सीआईएसएफ अधिकारियों ने कहा कि यह आरोप बाद में सोच विचार कर लगाया गया, क्योंकि उन्होंने आपस में समझौता से इनकार कर दिया था और पुलिस में शिकायत दर्ज कराने का फैसला किया था। उन्होंने कहा कि घटना की गहन जांच की जा रही है और सीसीटीवी फुटेज से पता चला है कि महिला ने वर्दी पहने अधिकारी पर बिना किसी उकसावे के हमला किया।

भाजपा अलग सोच वाली पार्टी, इसे कांग्रेस की गलतियों से बचना चाहिए : गडकरी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

पणजी/भाषा। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने शुक्रवार को कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अलग सोच वाली पार्टी है और इसलिए वह बार-बार जनता का विश्वास जीत रही है। साथ ही उन्होंने पार्टी को अतीत में कांग्रेस द्वारा की गई उन गलतियों को दोहराने से बचने को लेकर आगाह किया जिनकी वजह से उसे (कांग्रेस को) सत्ता से बाहर होना पड़ा।

लोकसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के बहुमत प्राप्त नहीं कर पाने के करीब एक महीने बाद गडकरी ने कहा, अगर हम वही करते रहेंगे जो कांग्रेस करती थी, तो उनके (सत्ता से) जाने और हमारे आने का कोई मतलब नहीं है। साथ ही गडकरी ने जाति आधारित राजनीति के चलन की आलोचना की और कहा ''जो करेगा जात की बात उसे पड़ेगी कसके लात''।

गडकरी पणजी के निकट भाजपा की गोवा कार्यकारिणी की बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में पार्टी की राज्य इकाई के अध्यक्ष सदानंद तनावडे और मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत सहित अन्य नेता शामिल हुए। केंद्रीय मंत्री ने अपने 40 मिनट के भाषण में अपने गुरु और पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी की उस टिप्पणी कि ''भाजपा एक अलग सोच वाली

पार्टी है'' का उल्लेख किया।

भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा, आडवाणी जी कहा करते थे कि हम एक अलग सोच वाली पार्टी हैं। हमें यह समझना होगा कि हम अन्य पार्टियों से कितने भिन्न हैं।

नागपुर से लोकसभा सदस्य ने कहा कि कांग्रेस की गलतियों के कारण जनता ने भाजपा को चुना। साथ ही उन्होंने अपनी पार्टी को वही गलतियां करने से बचने को लेकर आगाह किया।

गडकरी ने कहा, अगर हम वही गलतियां करते हैं तो उनके जाने और हमारे आने का कोई मतलब नहीं है। उन्होंने कहा, इसलिए, आने वाले दिनों में पार्टी कार्यकर्ताओं को यह पता होना चाहिए कि राजनीति सामाजिक और आर्थिक सुधार लाने का एक साधन है। गडकरी ने जोर देकर कहा, हमें (भाजपा को) भ्रष्टाचार मुक्त देश बनाना है और इसके लिए हमारे पास एक योजना होनी चाहिए।

महाराष्ट्र की राजनीति का जिक्र करते हुए गडकरी ने तर्क दिया कि उनके गृह राज्य में जाति के आधार पर राजनीति करने का चलन है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा, मैंने इस चलन का अनुसरण नहीं करने का निर्णय किया है। मैंने लोगों से कहा है कि मैं जाति-आधारित राजनीति में नहीं पड़ूंगा। जो करेगा जात की बात, उसे पड़ेगी कसके लात। गडकरी ने कहा कि एक व्यक्ति की पहचान उसके मूल्यों से होती है न कि उसकी जाति से।

भाजपा की गोवा कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए गडकरी ने बैठक में शामिल होने वाले सभी नेताओं से हर निर्वाचन क्षेत्र का दौरा करने और संगठन को मजबूत बनाने का आग्रह किया, ताकि पार्टी 2027 के विधानसभा चुनावों के बाद सत्ता बरकरार रख सके।

बिहार में विशेष दर्जे की मांग को लेकर राजनीतिक बयानबाजी फिर शुरू

पटना/भाषा। बिहार में सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) और विपक्षी महागठबंधन के बीच शुक्रवार को राज्य को विशेष दर्जा देने की मांग को लेकर एकबार फिर तीखी नोकझोंक हुई। संसद के बजट सत्र से पहले यह मामला तूल पकड़ता दिख रहा है।

बिहार में विशेष दर्जा की लंबे समय से चली आ रही यह मांग सबसे पहले झारखंड के गठन के तुरंत बाद की गई थी, हालांकि केंद्र सरकार का मानना है कि 14वें वित्त आयोग द्वारा प्रावधान को खत्म कर दिए जाने के बाद से विशेष दर्जा दिया जाना अब संभव नहीं है। झारखंड बनने के बाद राज्य का खनिज संपदा वाला इलाका नवगठित राज्य में चला गया था।

कांग्रेस की वरिष्ठ नेता और पूर्व लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार ने भाजपा-जदयू गठबंधन पर निशाना साधते हुए कहा, इससे बड़ी विडंबना और क्या हो सकती है कि केंद्र में शासन करने वाली भाजपा, सहयोगी पर निर्भर होने के बावजूद जदयू द्वारा उठाई गई मांग को स्वीकार नहीं कर रही है। मीरा कुमार का इशारा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता वाले जनता दल यूनाइटेड (जदयू) की ओर था।

जापान, मलेशिया को इस साल 40 टन आम निर्यात करेगा उत्तर प्रदेश: मुख्यमंत्री आदित्यनाथ

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

लखनऊ/भाषा। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को कहा कि राज्य से इस साल जापान और मलेशिया को 40 टन आम का निर्यात किया जाएगा। लंबे समय बाद लखनऊ का दशहरी आम भी अमेरिका को निर्यात किया जा रहा है।

आदित्यनाथ ने कहा कि देश में दशहरी आम का दाम 60 से 100 रुपये प्रति किलो के बीच है लेकिन अमेरिकी बाजार में पहुंचने के बाद इसका दाम भारतीय मुद्रा में 900 रुपये प्रति किलो तक हो जाता है। इससे आम उत्पादकों को भी अपनी उपज का अच्छा मूल्य मिलने में मदद मिलेगी। आधिकारिक बयान के मुताबिक, आदित्यनाथ ने यहां अवध शिल्प ग्राम में उत्तर प्रदेश आम महोत्सव- 2024 की शुरुआत करते हुए कहा, ''उत्तर प्रदेश के किसान 3.15 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में 58 लाख टन आम का उत्पादन करते हैं। देश के कुल आम उत्पादन में 25 से 30 प्रतिशत योगदान उत्तर प्रदेश का है।'' उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने केंद्र के सहयोग से प्रदेश के किसानों के लिए सहारनपुर, अमरोहा, लखनऊ और वाराणसी में चार 'पैक हाउस' बनाए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा, ''उत्तर प्रदेश आम उत्पादन में देश में अग्रणी है लेकिन अब हमें बढ़ती हुई आबादी के अनुरूप मात्रा तथा गुणवत्ता दोनों को बनाए रखने के लिए लगातार काम करना होगा।''

हल्द्वानी की हर्षिका बनीं 'मीरा', कान्हा से रचाई शादी

हल्द्वानी/भाषा। उत्तराखंड के हल्द्वानी में 21 वर्षीय एक युवती ने बृहस्पतिवार को एक समारोह में भगवान कृष्ण की मूर्ति के साथ विवाह रचाया। इस विवाह की चारों ओर चर्चा हो रही है । भगवान कृष्ण को वर के तौर पर पाने के लिए पिछले 15 सालों से करवा चौथ का व्रत कर रही हर्षिका पंत की सुबह साढ़े दस बजे गाजे बाजे के साथ बारात आई। कुमाऊंनी रीति रिवाज के अनुसार भगवान कृष्ण का दरवाजे पर स्वागत किया गया, फिर वरमाला हुई और सात फेरे हुए।

यहां आयोजित विवाह समारोह में शामिल अतिथियों के लिए खानपान से लेकर अन्य व्यवस्थाएं भी की गयी थीं। विदाई होने के बाद युवती हर्षिका कान्हा की मूर्ति को लेकर कार से रिश्तेदार के यहां पहुंची। विवाह समारोह में पहुंचे लोगों ने दावत खाई और शगुन का टीका लगाकर हर्षिका को सुखमय जीवन का आशीर्वाद दिया। रस्मों के दौरान हर्षिका ने वृंदावन से लाई गई श्रीकृष्ण की प्रतिमा के साथ सात जन्मों तक साथ रहने की कसमें खाईं और अपनी मांग में कान्हा के नाम का सिंदूर भरा। 11 जुलाई को धूमधाम से हुई शादी से पहले बुधवार को घर में मेहंदी और हल्दी का कार्यक्रम भी हुआ जिसमें सभी रिश्तेदार और आसपास के लोग शामिल हुए। हर्षिका के पिता पूरन चंद्र पंत ने कहा कि बेटी की भगवान कृष्ण से शादी करवा दी है और अब भगवान कृष्ण उनके दामाद हैं।

उन्होंने कहा कि आज से उनके घर में भगवान कृष्ण विराजमान रहेंगे। हर्षिका के पिता ने बताया की शादी पंडित मनोज जोशी व चन्द्रशेखर तिवारी द्वारा वैदिक, सनातन रीति-रिवाज के साथ विधि-विधान से कराई गई। उन्होंने बताया कि शादी भगवान श्री कृष्ण का गोत्र वृक्षणी तथा कन्या का गोत्र भारश्रे गोत्राचारण कर संक्षिप्त विधि से की गई। इस दौरान कन्यादान माता-पिता द्वारा किया गया। शादी में महादान, शय्यादान भी किया गया। विवाह समारोह में शामिल हुए भूपेश कनौजिया ने बताया कि शादी बहुत ही भव्य रूप से हुई।

मुर्मू ने एमईएस अधिकारियों से कहा

अवसंरचना निर्माण में जलवायु परिवर्तन संबंधी अनुकूलन पर ध्यान दें

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को 'मिलिट्री इंजीनियरिंग सर्विसेज' (एमईएस) के परिवीक्षाधीन अधिकारियों से कहा कि वह अवसंरचना के निर्माण के दौरान जलवायु परिवर्तन से संबंधित अनुकूलन और न्यूनीकरण को ध्यान में रखें।

यहां राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति से मुलाकात करने पहुंचे अधिकारियों को संबोधित करते हुए मुर्मू ने कहा कि एमईएस देश की सुरक्षा से जुड़ी महत्वपूर्ण इकाइयों में से एक है क्योंकि यह न केवल भारतीय सेना की तीनों सेनाओं को अपनी सेवाएं प्रदान करती है बल्कि रक्षा मंत्रालय की कई अन्य इकाइयों को भी अपनी सेवा देती है।

राष्ट्रपति ने एमईएस अधिकारियों से कहा कि अवसंरचना का निर्माण करते समय, उन्हें जलवायु परिवर्तन से संबंधित अनुकूलन और न्यूनीकरण को भी ध्यान में रखना होगा। राष्ट्रपति कार्यालय द्वारा जारी एक बयान के अनुसार, ''उन्होंने कहा कि वे जो काम करेंगे, उसका कार्बन फुटप्रिंट न्यूनतम होना चाहिए। उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि एमईएस इस दिशा में प्रयास कर रहा है।'' मुर्मू ने कहा कि एमईएस का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि ''हमारे रक्षा बलों के पास मजबूत बुनियादी ढांचा और अच्छी सुविधाएं बनी रहें। इसलिए एमईएस अधिकारियों की सफलता की कसौटी, विश्वसनीयता और गुणवत्ता के मानकों पर खरा उतरने के लिए उनके द्वारा उपलब्ध कराए गए बुनियादी ढांचे या सुविधाएं होंगी।'' राष्ट्रपति ने अधिकारियों को हमेशा सतर्क रहने की सलाह देते हुए कहा कि उनकी कार्यकुशलता और नैतिकता से देश की सुरक्षा को मजबूती मिलेगी।

कांग्रेस का पलटवार: चार जून इतिहास में 'मोदीमुक्ति दिवस' के रूप में दर्ज होगा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस ने शुक्रवार को आरोप लगाया कि आपातकाल को 'संविधान हत्या दिवस' के रूप में मनाने का केंद्र सरकार का कदम सुर्खियां बटोरने की कवायद भर है और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को 'हेडलाइन मैनेज' करना पड़ रहा है क्योंकि खाद्य मुद्रास्फीति गत जून महीने में बढ़कर 9.55 प्रतिशत हो गई है।

पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यह भी कहा कि चार जून, 2024 का दिन इतिहास में 'मोदीमुक्ति दिवस' के रूप में दर्ज होगा तथा देश की जनता आठ नवंबर के दिन को 'आजीविका हत्या दिवस' के रूप में मनाएगी क्योंकि वर्ष 2016 में इसी दिन नोटबंदी की घोषणा की गई थी।

केंद्र सरकार ने 25 जून को 'संविधान हत्या दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया है, जिस दिन 1975 में आपातकाल की घोषणा की गई थी। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि 'संविधान हत्या दिवस' 25 जून को मनाया जाना हमें याद दिलाएगा कि जब संविधान को रौंदा गया था, तो क्या हुआ था। रमेश ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''नॉन-बायोलॉजिकल प्रधानमंत्री द्वारा पाखंड के जरिये सुर्खियां बटोरने की एक और कवायद की गई है, जबकि उन्होंने भारत के लोगों द्वारा चार जून, 2024 को व्यक्तिगत, राजनीतिक और नैतिक हार सुनिश्चित किए जाने से पहले 10 वर्षों तक अघोषित आपातकाल लगाया था।'' उन्होंने कि चार जून, 2024 को इतिहास में ''मोदीमुक्ति दिवस'' के रूप में दर्ज किया जाएगा।

नीतीश के करीबी सहयोगी ने अनंत अंबानी की शादी में शामिल होने पर लालू पर तंज कसा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

पटना/भाषा। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के करीबी सहयोगी ने शुक्रवार को अनंत अंबानी की शादी में शामिल होने के लिए रवाना होने पर राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद और उनके परिवार पर तंज कसा। बिहार के ग्रामीण कार्य मंत्री अशोक चौधरी पत्रकारों द्वारा लालू प्रसाद, उनकी पत्नी राबड़ी देवी, बड़ी पुत्री मीसा भारती, दोनों पुत्र तेज प्रताप यादव और तेजस्वी यादव के मुंबई रवाना होने के बारे में पूछे गए सवालों का जवाब दे रहे थे।

चौधरी ने कहा कि राजद सुप्रीमो लंबे समय तक बिहार के मुख्यमंत्री रहे हैं और इसलिए उन्हें निमंत्रण मिलना कोई असामान्य बात नहीं है। वरिष्ठ जद(यू) नेता चौधरी ने कहा, लेकिन हमें इन लोगों की कथनी और करनी पर गौर करना चाहिए। उनके सहयोगी राहुल गांधी अंबानी और अडानी पर हमला करते रहते हैं। राजद नेता भी अपनी राजनीतिक रैलियों में ऐसा ही करते हैं। प्रसाद के छोटे बेटे और उनके राजनीतिक उत्तराधिकारी माने जाने वाले पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने पत्रकारों से कहा था कि उन्हें रिलायंस समूह के प्रमुख मुकेश अंबानी के बेटे की शादी में आमंत्रित किया गया है

और वे अपनी शुभकामनाएं देने जा रहे हैं। चौधरी ने विपक्ष के इन आरोपों को भी खारिज कर दिया कि मुख्यमंत्री सार्वजनिक समारोह में अधिकारियों के पैर छूने की बात कर अपनी लाचारी प्रदर्शित कर रहे हैं। मंत्री ने राजद के शीर्ष नेताओं के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामलों का परोक्ष जिक्र करते हुए कहा, यह मुख्यमंत्री की विनम्रता और बिहार के विकास के प्रति उनकी चिंता है। उनके ऐसा करने का उद्देश्य अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के लिए राजी करना है कि परियोजनाएं समय पर पूरी हो जाएं। उन्हें अपने लिए धन संचय करने की कोई परवाह नहीं है। नीतीश कुमार ने बुधवार को एक निजी कंपनी के प्रतिनिधि से पटना में एक सड़क परियोजना में तेजी लाने को कहा था और यहां तक कि परियोजना में तेजी लाने के लिए उनके पैर छूने की पेशकश भी की थी।

देश के सभी सीबीएसई विद्यालयों में असम की 'जल दूत' पहल होगी लागू: हिमंत

गुवाहाटी/भाषा। जल संरक्षण में विद्यार्थियों की भूमिका को मान्यता देने वाले असम सरकार के 'जल दूत' कार्यक्रम का अब देशभर में संचालित सीबीएसई के विद्यालयों में अनुकरण किया जाएगा। मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

इस संबंध में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) की ओर से जारी परिपत्र को सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर साझा करते हुए शर्मा ने कहा, '' असम की एक और अनूठी पहल लोगों की नजर में आयी है।'' उन्होंने कहा, ''सीबीएसई ने अपने सभी विद्यालयों में असम सरकार के कार्यक्रम 'जल दूत' को लागू करने का निर्देश दिया है। यह व्यावहारिक कार्यक्रम जल संरक्षण की समुदाय की कोशिशों से विद्यार्थियों को जोड़ता है।''

केंद्र सरकार के'जल शक्ति अभियान: कैच द रेन' अभियान के तहत जल दूत कार्यक्रम, वर्षा जल संचयन, जल संरक्षण, गहन वनरोपण और अन्य संबद्ध गतिविधियों पर केंद्रित है।

तेंदुलकर ने एंडरसन की प्रशंसा करते हुए कहा, आपको गेंदबाजी करते हुए देखना आनंदित करता था

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। इंग्लैंड के महान गेंदबाज जेम्स एंडरसन ने शुक्रवार को अपने दो दशक से अधिक लंबे करियर का समापन किया और इस मौके पर भारत के महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने अपने 'पुराने प्रतिद्वंद्वी' की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्हें गेंदबाजी करते हुए देखना आनंदित करता था। एंडरसन (41 वर्ष) ने 188 टेस्ट में कुल 704 विकेट झटके हैं और 32 बार पांच विकेट हासिल करने का कारनामा किया। इंग्लैंड ने लॉर्ड्स में तीन मैच की शृंखला के पहले टेस्ट में वेस्टइंडीज को पारी और 114 रन से हराया।

तेंदुलकर ने 'एक्स' पर लिखा, ''जिमी आपने अपने 22 साल के शानदार स्पैल से खेल प्रेमियों को मंत्रमुग्ध किया। ''

उन्होंने लिखा, ''आपको गेंदबाजी करते हुए देखना खुशी प्रदान करता था। आप जिस गति, सटीकता, स्विंग और फिटनेस के साथ गेंदबाजी करते, वह अद्भुत रहा। आपने अपने खेल से कई पीढ़ियों को प्रेरित किया है।'' तेंदुलकर ने 2013 में क्रिकेट से संन्यास ले लिया था। उन्होंने एंडरसन को पेशेवर क्रिकेट की भागदौड़ से दूर अपने परिवार के साथ समय बिताने की शुभकामनायें दीं।

अगरतला स्टेशन से सात बांग्लादेशी गिरफ्तार

अगरतला/भाषा। भारत में बगैर वैध दस्तावेजों के प्रवेश करने के आरोप में अगरतला रेलवे स्टेशन से सात बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए अगरतला स्टेशन पर निगरानी बढ़ा दी गई और कोलकाता जाने वाली ट्रेन में सवार होने जा रहे एक समूह को रोक लिया गया।

अगरतला राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी) के प्रभारी अधिकारी तपस दास ने बताया, वे (बांग्लादेशी नागरिक) भारत में यात्रा करने के लिए कोई वैध दस्तावेज नहीं दिखा सके। हमने सात लोगों को गिरफ्तार किया, जिसमें तीन पुरुष और चार महिलाएं शामिल हैं।

दास ने बताया कि उनके पास से बांग्लादेशी दस्तावेज, मोबाइल फोन और भारतीय मुद्रा के नोट बरामद किए गए। उन्होंने बताया, बांग्लादेशी नागरिकों की योजना बेंगलुरु, कोलकाता और दिल्ली जैसे शहरों में जाने की थी।

बिहार में पिछले 24 घंटे में 12 जिलों में वज्रपात के कारण 21 लोगों की मौत

पटना/भाषा। बिहार के 12 जिलों में पिछले 24 घंटों में वज्रपात की चपेट में आकर 21 लोगों की मौत हो गई है। मुख्यमंत्री कार्यालय ने यह जानकारी दी। मुख्यमंत्री कार्यालय द्वारा शुक्रवार को जारी की गयी एक विज्ञप्ति के अनुसार पिछले 24 घंटे में वज्रपात की चपेट में आकर मधुबनी में छह, औरंगाबाद में चार, पटना में दो, रोहतास, भोजपुर, जहानाबाद, सारण, कैमूर, गोपालगंज, लखीसराय, मधेपुरा और सुपौल जिलों में एक-एक व्यक्ति की मौत हो गई है।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने वज्रपात से हुई में इन मौतों पर गहरी सवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि वह आपदा की इस घड़ी में प्रभावित परिवारों के साथ हैं। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को मृतकों के परिवारों को आज ही चार-चार लाख रूपये अनुग्रह राशि देने का निर्देश दिये हैं। मुख्यमंत्री ने अपील की है कि लोग खराब मौसम में पूरी तरह से सतर्कता बरतें और वज्रपात से बचने के लिए आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा समय-समय पर जारी किए गए सुझावों का अनुपालन करें । उन्होंने लोगों से कहा कि वे खराब मौसम के दौरान घरों में रहे और सुरक्षित रहें।

गंभीर का एकमात्र लक्ष्य हर हाल में जीत दर्ज करना होता है: आवेश खान

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

हरारे/भाषा। भारतीय तेज गेंदबाज आवेश खान ने शुक्रवार को यहां कहा कि राष्ट्रीय टीम की नवनियुक्त कोच गौतम गंभीर का एकमात्र लक्ष्य हर हाल में जीत हासिल करना और खिलाड़ियों से उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करवाना होता है।

गंभीर को इस सप्ताह के शुरू में राहुल द्रविड़ की जगह भारतीय टीम का नया मुख्य कोच नियुक्त किया गया। वह श्रीलंका के खिलाफ सीमित ओवरों की शृंखला से अपनी नई पारी की शुरुआत

करेंगे। आवेश आईपीएल में गंभीर के मेंटोर (मार्गदर्शक) रहते हुए लखनऊ सुपर जॉइंट्स की तरफ से खेल चुके हैं। इस तेज गेंदबाज ने जिंबॉब्वे के खिलाफ शनिवार को होने वाले चौथे टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच से पहले बीसीसीआई से कहा,''मैंने उनसे जो कुछ भी सीखा, वह इस मानसिकता के बारे में है कि आपको हमेशा अपने प्रतिद्वंद्वी से बेहतर प्रदर्शन करना चाहिए और अपना शत प्रतिशत योगदान देना चाहिए।'' उन्होंने कहा,''वह टीम बैठकों और आमने-सामने की बातचीत में बहुत कम बोलते हैं लेकिन क्या करना है इसको लेकर अपनी बात स्पष्ट रूप से रखते हैं। वह आपके सामने कुछ चुनौती रखते हैं और खिलाड़ियों को भूमिकाएं सौंपते हैं। वह हमेशा 'टीम कोच' रहे हैं। वह हर हाल में जीतना चाहते हैं और वह चाहते हैं कि हर खिलाड़ी अपना शत प्रतिशत योगदान दे।'' आवेश ने अभी तक तीन मैच में छह विकेट लिए हैं और उन्होंने कहा कि वह अपनी गेंदबाजी का पूरा लुत्फ उठा रहे हैं। उन्होंने कहा,'' हम यहां अलग-अलग विकेट पर खेले हैं। हमने पहले दो मैच एक ही विकेट पर खेले थे। पहले मैच में उससे अच्छी उछाल मिल रही थी लेकिन दूसरे मैच में वह सपाट हो गया था। परिस्थितियां अच्छी हैं और क्योंकि यह मैदान खुला है इसलिए गेंद थोड़ा स्विंग भी हो रही है।''

हम हर मैच जीतना चाहते हैं: कप्तान हरमनप्रीत कौर

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कप्तान हरमनप्रीत कौर का मानना है कि भारतीय महिला टीम हर मैच को जीतने के इरादे से मैदान पर उतरती है और इस महीने के अंत में पाकिस्तान के खिलाफ एशिया कप के मैच के दौरान भी उसका यही लक्ष्य होगा।

भारत ने हाल ही में घरेलू सरजमीं पर दक्षिण अफ्रीका को तीन मैचों की वनडे शृंखला और एकमात्र टेस्ट में हराने के बाद टी20 शृंखला को 1-1 की बराबरी पर खत्म किया। दक्षिण अफ्रीका पर मिली जीत से भारतीय टीम का हौसला बढ़ा हुआ है। हरमनप्रीत ने स्टार स्पोर्ट्स से कहा, ''अभी हमारा दृष्टिकोण कुछ ऐसा है कि हम सभी मैचों को समान महत्व दे रहे हैं। सभी हर मैच को जीतने की कोशिश करते हैं और हमें लगता है कि एक टीम में यही होना चाहिए।

टीम में हर कोई यही महसूस कर रहा है।'' भारतीय टीम अब 19 जुलाई से शुरू होने वाले एशिया कप में चुनौती पेश करेगी। एशिया कप की मेजबानी श्रीलंका कर रहा है और भारतीय टीम दांबुला में चिर-परिचित पाकिस्तान के खिलाफ अपना अभियान शुरू करेगी। हरमनप्रीत ने कहा कि कप्तान के तौर पर यह उनकी जिम्मेदारी है कि वह ऐसे मैचों के दौरान अपनी टीम पर दबाव हावी नहीं होने दे।

उन्होंने कहा, ''जब आप पाकिस्तान के खिलाफ खेलते हैं तो दोनों देशों में एक अलग माहौल होता है। दोनों देश चाहते हैं कि उनकी टीम जीते।'' भारतीय कप्तान ने कहा, ''एक खिलाड़ी के रूप में हमारे लिए बहुत दबाव है। लेकिन एक कप्तान के रूप में यह मेरी जिम्मेदारी है कि मैं अपनी टीम को उस माहौल में तनाव से दूर रखूं ताकि वे यह न सोचें कि हम पाकिस्तान के खिलाफ खेल रहे हैं या यह दबाव है।'' भारत और पाकिस्तान के बीच खेले जाने वाला कोई भी मुकाबला दबाव से भरा होता है लेकिन हरमनप्रीत ने कहा कि वह इसे किसी अन्य मैच की तरह ही लेती है। मध्यक्रम की बल्लेबाज जेमिमा रोड्रिग्स ने कहा कि टीम महिला एशिया कप में अपनी संभावनाओं को लेकर उत्साहित है। दायें हाथ की इस बल्लेबाज ने कहा, '' टीम में उत्साह बहुत अधिक है। यह एक अच्छा एहसास है, लेकिन उससे भी अधिक यह जानना बहुत प्रेरणादायक है कि हर बार जब हम मैदान पर उतरते हैं, तो हम जानते हैं कि हमें टीम के हर खिलाड़ी का समर्थन प्राप्त है।''

सुविचार

ज़िन्दगी की हकीकत को बस इतना ही जाना है, दर्द में अकेले हैं और खुशियों में सारा जमाना है।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

अधिक सक्षम बल का निर्माण

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ), सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) में जवानों के 10 प्रतिशत पद पूर्व अग्निवीरों के लिए आरक्षित करने और उन्हें आयु सीमा में छूट देने की घोषणा उन युवाओं के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होगी, जो अग्निवीर बनने के बाद अन्य बलों का हिस्सा बनना चाहते हैं। जून 2022 में जब अग्निपथ योजना लाई गई थी तो इसके विरोध में स्वर उठे थे। आज भी रक्षा विशेषज्ञ इस योजना के दोनों पहलुओं को लेकर राय जाहिर करते हैं। बेशक भारत के लाखों युवाओं का सपना है कि वे सेना में भर्ती होकर देश की सेवा करें। अगर परमवीर चक्र, महावीर चक्र समेत विभिन्न वीरता पुरस्कार विजेताओं के बारे में जानने की कोशिश करें तो पाएंगे कि उनमें से ज्यादातर योद्धाओं के बचपन का सपना था कि वे सेना की वर्दी पहनकर सरहद पर जाएं। देश के कुछ इलाके तो ऐसे हैं, जो सैनिकों की वीरगाथाओं के कारण राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान रखते हैं। राजस्थान में शेखावाटी क्षेत्र के कई गांवों में नौजवान रोज़ाना सुबह-शाम दौड़ लगाते मिल जाएंगे, क्योंकि उनका सपना है सैनिक बनना। अग्निपथ योजना के कारण उनके मन में भी कई सवाल उठे थे। जो युवा सैनिक बनना चाहता है, उसके मन में बलिदान की भावना यकीनन होती है। इसके साथ वह अपने भविष्य को लेकर निश्चिंत भी होना चाहता है। हालांकि वरिष्ठ रक्षा विशेषज्ञ कई बार यह स्पष्ट कर चुके हैं कि सेना रोजगार देने की स्कीम नहीं है। अगर किसी को रोजगार ही चाहिए तो कई विकल्प मौजूद हैं। सेना का काम है- देश की रक्षा करना, दुश्मन को शिकस्त देना, युद्ध जीतना। अगर इस उद्देश्य के लिए उसे कुछ बदलाव करने होंगे तो वह जरूर करेगी।

भारतीय सेना में बदलाव पहले भी होते रहे हैं। जहां तक अग्निपथ का सवाल है, तो कितनी प्रभावी सिद्ध होगी, यह जानने के लिए कुछ साल इंतजार करना चाहिए। जब सीआईएसएफ, बीएसएफ और सीआरपीएफ के जवानों की भर्तियों में पूर्व अग्निवीरों को इतनी छूट दी जा रही है तो इससे उनका आत्मविश्वास निश्चित रूप से बढ़ेगा। चूंकि उनके पास सेना का अनुभव होगा, शारीरिक परीक्षा में भी छूट दी जाएगी, आयु सीमा में लाभ दिया जाएगा, तो स्वाभाविक रूप से उनके चयन की संभावना काफी ज्यादा होगी। इससे बल को प्रशिक्षित और अधिक अनुशासित कर्मी मिलेंगे। चयन के बाद जब उनका प्रशिक्षण होगा तो उसमें उन्हें काफी आसानी होगी। आज देश-दुनिया का रक्षा परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। नई चुनौतियां पैदा हो रही हैं। पचास वर्ष पहले जिस तरह युद्ध होते थे, अब वैसे नहीं होते। हर वर्ष नई तकनीक आ रही है। अगर भारत-पाक सरहद पर तस्करी की समस्या को देखें तो पहले पाकिस्तान की ओर से तस्कर चोरी-छिपे घुसने की कोशिशें करते थे। आज भी ऐसे मामले सामने आते हैं, लेकिन अब ड्रोन का इस्तेमाल किया जाने लगा है। अगर हम राष्ट्रीय सुरक्षा दशकों पुराने तौर-तरीकों से ही करेंगे तो मौजूदा चुनौतियों का पूरी शक्ति व सामर्थ्य से सामना नहीं कर पाएंगे। देश को मजबूत सेना की जरूरत हमेशा रहेगी। इससे बिल्कुल इन्कार नहीं किया जा सकता। उसके साथ अत्याधुनिक तकनीक का महत्त्व बढ़ता जाएगा। भारत की सुरक्षा के समक्ष चीन और पाकिस्तान सबसे बड़ी चुनौतियां हैं। दोनों में इतना साहस तो नहीं है कि वे भारत से परंपरागत ढंग से युद्ध करें। चीन एलएसी पर उकसाने की कोशिशें करेगा और पाकिस्तान आतंकवादी भेजता रहेगा। इसके मद्देनजर हमारा सैन्य बल ऐसा होना चाहिए, जो चीन की उद्दंडता का सख्ती से जवाब दे और तकनीकी नजर इतनी पैनी होनी चाहिए, जो घुसपैठ कर रहे आतंकवादी की पहचान कर उसे वहीं ढेर कर दे। इसके लिए सेना में 'नए जोश' को शामिल करते हुए तकनीकी क्षेत्र में शोध को बढ़ावा देना होगा। अब कोशिश यह होनी चाहिए कि अग्निवीरों के प्रदर्शन का अध्ययन किया जाए। जहां जरूरी हो, योजना में बदलाव/सुधार होना चाहिए। पूर्व अग्निवीरों के लिए अन्य भर्तियों में भी नियमों को आसान किया जाए।

ट्वीटर टॉक

25जून 1975 वह काला दिवस था जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के तानाशाही मानसिकता ने हमारे संविधान में निहित लोकतंत्र की हत्या कर देश पर 'आपातकाल' थोपा था। प्रत्येक वर्ष 25जून को 'संविधान हत्या दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया है।

-जेपी नड्डा

प्रधानमंत्री मोदी के प्रेरणादायी मार्गदर्शन में महिलाओं के उत्थान व नारी शक्ति का जीवन आसान बनाने हेतु वैवेकिक अनुदान कोष से स्वीकृति प्रदान की है। हम नारी सशक्तिकरण के संकल्प को लेकर महिलाओं को हर क्षेत्र में सशक्त करने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

-राज्यवर्धनसिंह राठौड़

कांग्रेस ने 25 जून 1975 को आपातकाल लगाकर स्वतंत्र भारत को फिर से गुलाम बनाने का 'अधम प्रयास' किया था। भारत सरकार द्वारा 25 जून को संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाए जाने का निर्णय उन असंख्य देशभक्तों का सम्मान है

-गजेन्द्र सिंह शेखावत

प्रेरक प्रसंग

ठोकर का ज्ञान

एक बार मनोविज्ञान के शिक्षक मानसिक मजबूती पर समझा रहे थे कि 'मान लीजिए आप चाय का कप हाथ में लिए खड़े हैं और कोई आपको धक्का दे देता है, तो क्या होता है?' 'आपके कप से चाय छलक जाती है।' अगर आप से पूछा जाए कि 'आप के कप से चाय क्यों छलकी? तो आप का उत्तर होगा 'क्योंकि अमुक ने मुझे धक्का दिया।' सही उत्तर ये है कि आपके कप में चाय थी इसलिए छलकी। आप के कप से वही छलकेगा जो उसमें है। मान लीजिये कप में चांदी के सिक्के होते तो? इसी तरह जब ज़िंदगी में हमें धक्के लगते हैं लोगों के व्यवहार से, तो उस समय हमारी वास्तविकता ही छलकती है। आप का सच उस समय तक सामने नहीं आता, जब तक आपको धक्का न लगे, तो देखना ये है कि जब आपको धक्का लगा तो क्या छलका? क्या धैर्य, मौन, कृतज्ञता, स्वाभिमान, निश्चिंतता, मानवता, गरिमा या क्रोध, कड़वाहट, पागलपन, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा इत्यादि निर्णय हमारे वश में हैं।

सामयिक

रूस और ऑस्ट्रिया की यात्राओं से भारत की नई उड़ान

ललित गर्ग

मो.: 9811051133

भारत की रूस से दोस्ती तो बहुत पुरानी है, लेकिन अमरीका, ऑस्ट्रिया या अन्य नए देशों से दोस्ती का यह मतलब नहीं है कि अपने पुराने साथियों से दूर हो जाएं। इजरायल और फिलिस्तीन के मामले में भी यह देखा जा सकता है। इजरायल से नई दोस्ती के बावजूद फिलिस्तीन पर हमारी रणनीति नहीं बदली है। उसी तरह रूस से अच्छे संबंध का यह मतलब नहीं कि यूक्रेन के मामले में उसे क्लीन चिट दे दें। यही वजह है कि राष्ट्रपति पुतिन को मोदी ने शांति का पाठ पढ़ाने में कोई हिचक नहीं दिखाई। भारत की इस भूमिका के बीच अब अमरीका भी यह कहने में संकोच नहीं कर रहा है कि भारत को यूक्रेन युद्ध रोकने की पहल करनी चाहिए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रूस और ऑस्ट्रिया की यात्रा के निष्कर्षों के साथ-साथ इसके वैश्विक निहितार्थ भी तलाशे जा रहे हैं। इन दोनों देशों की राजकीय यात्रा अनेक दृष्टियों से नई उम्मीदों को पंख लगाने के साथ भारत को शक्तिशाली बनाने वाली होगी। दोनों देशों की यात्रा के दौरान हुए विभिन्न समझौते भारत की तकनीकी एवं सामरिक जरूरतों को पूरा करने में अहम कदम साबित होंगे। सैन्य उत्पाद, व्यापार व उद्योग के साथ-साथ प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में रूस और ऑस्ट्रिया के साथ द्विपक्षीय सहयोग ने नई उम्मीदें जगाई हैं। इन यात्राओं के दौरान प्रधानमंत्री ने जो प्रयास किए वे मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भरता के प्रयास, नये भारत-सशक्त भारत एवं सतत विकास की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होंगे। निश्चित ही प्रधानमंत्री मोदी के प्रति इन दोनों देशों में जो सम्मानभावना देखने को मिली, उससे यही कहा जा सकता है कि मोदी विश्व-नेता के रूप में स्वतंत्र पहचान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहे हैं, जो भारत के लिये शुभ है। निश्चित तौर पर वैश्विक राजनीति में अपनी चमक के साथ आगे बढ़ते भारत के लिये रूस की यात्रा कई मायनों में बहुत उपयोगी एवं दूरगामी रही। इस यात्रा के दौरान भारत और रूस के बीच हुई 22वीं द्विपक्षीय बैठक में हुए नए समझौते काफी अहम हैं। रूस के युद्ध में फंसे होने के कारण रक्षा जरूरतों से संबंधित आपूर्ति में बाधा होना हमारे लिए चिंता की बात थी लेकिन मेक इन इंडिया के तहत भारत में ही रक्षा उपकरणों के स्पेयर पार्ट्स का प्लांट लगाने पर सहमति जताकर पुतिन ने बड़ी चिंता का समाधान कर दिया है। दोनों देशों के बीच का व्यापार 2030 तक 65 अरब डॉलर से बढ़ाकर 100 अरब डॉलर तक करने पर भी सहमति बनी है। यह भारत-रूस के विशेष रिश्ते को और मजबूत करने वाले होंगे। भारत-रूस की दोस्ती की गर्माहट से चीन एवं पाकिस्तान की बौखलाहट भी देखने को मिली है। यूक्रेन और गाजा में युद्धों की पृष्ठभूमि के बीच प्रधानमंत्री मोदी की रूस और ऑस्ट्रिया की यात्रा पर दुनिया की नजरे लगी रही। एक ध्रुवीय विश्व व्यवस्था बनाए रखने की कोशिश कर रहे अमरीका और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में अपना हित देख रहे रूस के बीच भारत की स्थिति एवं उसकी बढ़ती ताकत का भी विश्लेषण किया जा रहा है। मास्को में प्रधानमंत्री मोदी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के गले मिलने पर यूक्रेन की नाराजगी के बावजूद अमरीका की सधी प्रतिक्रिया सामने आयी कि इससे उसके भारत से रिश्तों पर कोई असर नहीं होगा। निश्चित ही इससे यह साफ हो जाता है कि दुनिया अब एक या दो ध्रुवीय नहीं रही। अमेरीका यह जान रहा है कि चीन के तानाशाही भरे रवैये से निपटने के लिए भारत का साथ आवश्यक है। वास्तव में इस आवश्यकता ने भी अमेरीका में भारत की अहमियत बढ़ाने का काम किया है। यह अहमियत यही बता रही है कि अब भारत का समय आ गया है। वास्तव में आज अमेरीका ही नहीं, विश्व का हर प्रमुख देश भारत को अपने साथ रखना आवश्यक समझ रहा है। कहना न होगा कि वैश्विक मंच पर योग का विषय हो, या अहिंसा का या फिर आतंकवाद से निपटने का, जलवायु परिवर्तन का मसला हो या फिर जी-20 देशों की अध्यक्षता की बात, भारत, दुनिया को नई दिशा दे रहा है, नई उम्मीदें जगा रहा है।

एक नई ताकत एवं सशक्त अर्थ-व्यवस्था के साथ एक नया ध्रुव बनकर उभर रहा भारत समूची दुनिया की नजरों का ताज बना हुआ है। भारत अब बिना किसी दबाव के किसी भी अन्य ताकतवर देश की नाराजगी मोल लेने का हौसला रखता है। शीतयुद्ध के दौर में दो ध्रुवीय विश्व व्यवस्था के बाद एक ध्रुवीय व्यवस्था का अनुभव दुनिया को मिल चुका है। अब बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में ही संभावनाएं देखी जा रही हैं। ग्लोबल साउथ की आवाज बन भारत वैश्विक भूमिका को खुलकर प्रदर्शित भी कर रहा है। वैसे भी भारत एक बड़े देश के पाले में कभी नहीं रहा। अनेक संकटों से घिरा होकर भी भारत अपनी बात बुलन्दी के साथ दुनिया के सामने रखता रहा है, नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री के तीनों कार्यकाल में भारत ने अपने शक्तिशाली होने का भान कराया है।

भारत की रूस से दोस्ती तो बहुत पुरानी है, लेकिन अमरीका, ऑस्ट्रिया या अन्य नए देशों से दोस्ती का यह मतलब नहीं है कि अपने पुराने साथियों से दूर हो जाएं। इजरायल और फिलिस्तीन के मामले में भी यह देखा जा सकता है। इजरायल से नई दोस्ती के बावजूद फिलिस्तीन पर हमारी रणनीति नहीं बदली है। उसी तरह रूस से अच्छे संबंध का यह मतलब नहीं कि यूक्रेन के मामले में उसे क्लीन चिट दे दें। यही वजह है कि राष्ट्रपति पुतिन को मोदी ने शांति का पाठ पढ़ाने में कोई हिचक नहीं दिखाई। भारत की इस भूमिका के बीच अब अमरीका भी यह कहने में संकोच नहीं कर रहा है कि भारत को यूक्रेन युद्ध रोकने की पहल करनी चाहिए। फिलहाल शांति के पक्षधर अन्य देश भारत के साथ मिलकर रास्ता खोजने की पहल कर रहे हैं। ऑस्ट्रिया का रूस और यूक्रेन के बीच संभावित समझौता वार्ता का मंच बनने की इच्छा जाहिर करना यही बताता है।

भारत अहिंसा एवं शांति का हिमायती का देश है और मानता है कि युद्ध से किसी भी समस्या का हल नहीं हो सकता। युद्ध केवल बर्बादी और तबाही लेकर ही आता है। रूस व यूक्रेन के बीच जो सीमा विवाद है वह इन देशों के बीच का मामला है और भारत शुरू से ही कहता रहा है कि इस समस्या का हल केवल बातचीत से ही होना चाहिए। श्री मोदी ने रूस की यात्रा के दौरान भी भारत का यही रुख सामने रखा और स्पष्ट किया कि किसी भी झगड़े को निपटाने का रास्ता केवल वार्तालाप ही हो सकता है। श्री मोदी ने रूस से आस्ट्रिया पहुंच कर भी इस रुख को और खोला और कहा कि भोले-भाले लोगों की हत्या कभी भी स्वीकार्य नहीं हो सकती। इजराइल-फिलिस्तीन युद्ध के सन्दर्भ में इस तथ्य को अमेरिका को ही सबसे पहले समझना चाहिए।

प्रधानमंत्री मोदी की रूस यात्रा से क्या चीन की बढ़ती महत्त्वाकांक्षाओं पर असर पडेगा? क्योंकि रूस एवं चीन के बीच बढ़ती मित्रता एवं प्रगाढ़ता समूची दुनिया के लिये एक चिन्ता का सबब है। भले ही अमरीका की ताकत को देखते हुए रूस ने चीन से निकटता बनाई हो, लेकिन भारत से उसकी दोस्ती इन सबसे ऊपर है। फिर भी चीन एवं पाकिस्तान भारत के दुश्मन ही रहे हैं। इन हालातों के बीच मोदी की रूस और ऑस्ट्रिया यात्रा भारत के भाग्य के लिए नये सूर्य का उदय कही जा सकती है। प्रधानमंत्री मोदी की जितनी महत्वपूर्ण यात्रा रूस की रही, उतनी ही महत्वपूर्ण ऑस्ट्रिया की यात्रा भी रही। मोदी ने पाकिस्तान के साथ चीन को भी निशाने पर लेते हुए पुतिन से कहा कि चीन जहां पाकिस्तान के आतंकवाद को सहयोग-समर्थन और संरक्षण देने से बाज नहीं आ रहा है, वहीं चीन अपनी विस्तारवादी नीतियों के चलते एशिया ही नहीं, पूरे विश्व के लिए खतरा बन गया है। अब मोदी की इन बातों का पुतिन पर क्या असर होगा, यह भविष्य के गर्भ में है।

जहां तक रूस से मित्रता का सवाल है तो यह भारत का परखा हुआ सच्चा मित्र है और भारत यह दोस्ती कभी नहीं छोड़ सकता। पिछले दो दशकों में हमारे सम्बन्ध अमेरिका से भी मधुर हुए हैं परन्तु हमारी विदेश नीति पूरी तरह स्वतन्त्र है और दुनिया का कोई भी देश इसे प्रभावित नहीं कर सकता। भारत के द्विपक्षीय सम्बन्ध किस देश के साथ कैसे हैं यह केवल भारत ही तय करेगा। अमेरिका हमें रूस-यूक्रेन के बारे में क्या समझायेगा? भारत पर दुनिया का बढ़ता भरोसा इस बात का परिचायक है कि भारत विश्व की एक महाबड़ी शक्ति बनने की राह पर अग्रसर है और भारत शांति एवं अयुद्ध का हिमायती है। हम तो पहले ही यह कह चुके हैं कि भारत बुद्ध-महावीर-गांधी का देश है और इसकी विदेश नीति भी इनसे प्रेरणा लेकर ही तय होती रही है। बदलते वैश्विक सन्दर्भों के बावजूद भारत आपसी शान्ति, अहिंसा, युद्धमुक्त विश्व-संरचना व सह अस्तित्व पर ही विश्वास रखता है। दुनिया की महाशक्तियों द्वारा भारत को तवज्जो देने के पीछे जिन वजहों को देखा जा रहा है, उनमें व्यापारिक प्रगति के साथ शांति एवं अमन-चैन की दुनिया बनाना भी मुख्य है। निश्चित ही मोदी की रूस और ऑस्ट्रिया यात्रा भारत के लिये 'सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना' एवं 'परिवर्तनकारी क्षण' साबित होगा।

नजरिया

राष्ट्रपति एर्दोगन ने सिर्फ सीरियाई संघर्ष का इस्तेमाल किया

मनीष राय

पिछले कुछ समय से सीरिया के साथ मेल-मिलाप की दिशा में तुर्की के कदमों को लेकर सीरिया के विपक्ष के कब्जे वाले क्षेत्रों में तनाव बढ़ रहा है। तुर्की में सीरियाई लोगों के खिलाफ हालिया हिंसा ने उत्प्रेरक के रूप में काम किया और उत्तर-पश्चिमी सीरिया के विपक्ष के कब्जे वाले इलाकों में जवाबी दंगों को जन्म दिया। सैकड़ों सीरियाई प्रदर्शनकारी, जिनमें से कुछ हथियारबंद थे, विरोध में सड़कों पर उतर आए। कुछ लोगों ने तुर्की के झंडे फाड़ दिए, पत्थर फेंके और तुर्की के वाणिज्यिक ट्रकों को निशाना बनाया। हाल के दिनों में गुस्सा उबल पड़ा है और सड़कों पर तुर्की विरोधी भावनाएं साफ नजर आ रही हैं। उत्तरी सीरिया में तुर्की-नियंत्रित क्षेत्रों में कई लोग तुर्की सुरक्षा बलों की वापसी की मांग कर रहे हैं, जिससे पहले से ही अस्थिर स्थिति और खराब हो गई है। कुछ स्थानों पर तुर्की-प्रशिक्षित सीरियाई विपक्षी बलों ने तुर्की के बख्तरबंद वाहनों पर गोलीबारी की, जिससे तुर्की को नियंत्रण बनाए रखने के लिए क्षेत्र में अतिरिक्त सैनिकों को तैनात करना पड़ा। युद्ध पर नजर रखने वाली संस्था सीरियन ऑब्जर्वेटरी ऑफ ह्यूमन राइट्स के अनुसार, टकराव के परिणामस्वरूप तुर्क सैनिकों के साथ गोलीबारी में कई लोग मारे गए। तुर्की के राष्ट्रपति एर्दोगन ने हाल ही में कहा था कि सीरिया के साथ संबंध स्थापित न करने का कोई कारण नहीं है। उन्होंने पत्रकारों से बात करते हुए इस बात पर भी जोर दिया कि अंकारा की सीरिया के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने की कोई योजना या लक्ष्य नहीं है। उन्होंने जो कहा वह 2011 में सीरियाई संघर्ष शुरू होने के बाद से सीरिया में तुर्क जो कर रहे हैं उसके बिल्कुल विपरीत है।

अब कई वरिष्ठ सीरियाई विपक्षी नेताओं का मानना है कि अंकारा ने सीरियाई क्रांति से नाता तोड़ लिया है। सीरियाई संघर्ष की शुरुआत के बाद से तुर्की सीरियाई विपक्षी गुटो के मुख्य समर्थकों में से एक रहा है और उसने सीरियाई राष्ट्रपति बशर अल-असद को उखाड़ फेंकने का समर्थन किया है। लेकिन, हकीकत में तुर्कों ने हमेशा अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए सीरियाई संघर्ष का इस्तेमाल किया। तुर्की के राष्ट्रपति एर्दोगन ने 2016 के बाद से कई मौकों पर सीरियाई विपक्ष को बेचा, जिससे असद शासन को तुर्की समर्थित समूहों द्वारा नियंत्रित कई क्षेत्रों पर फिर से कब्जा करने की अनुमति मिल गई है। सीरियाई गृहयुद्ध में अंकारा की प्रारंभिक नीति स्पष्ट रूप से उदारवादी सीरियाई विपक्ष के समर्थन में थी। हालाँकि, तुर्की ने 2012 और 2013 में तुर्की के रास्ते सीरिया जाने वाले विदेशी जेहादी लड़ाकों के लिए अपनी सीमाएँ खोल दीं और आईएसआईएस सहित चरमपंथी समूहों को बढ़ावा दिया। आईएसआईएस के उद्भव ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को परेशान कर दिया और बदले में उन्होंने तुर्की समर्थित विद्रोहियों के लिए समर्थन कम कर दिया और कुर्द पीपुल्स डिफेंस यूनिट्स (वाईपीजी) जैसे इस्लामिक स्टेट से लड़ने वाले समूहों की मदद करने पर ध्यान केंद्रित किया। इसके बाद तुर्की ने सीरिया में अपनी नीति को फिर से समायोजित किया और ज्यादातर अरब सीरियाई विद्रोहियों को कुर्दों से लड़ने के लिए प्रेरित किया। पूरे संघर्ष के दौरान फ्री सीरियन आर्मी (एफएसए) एक सशस्त्र विपक्षी समूह रहा है जो ज्यादातर तुर्की के साथ जुड़ा हुआ है और सबसे ज्यादा उस पर निर्भर है।

2015 के बाद, जब तुर्की ने उत्तरी सीरिया में बफर जोन बनाकर पीवाईडी/वाईपीजी के नेतृत्व वाले सीरियाई कुर्दों को रोकने की अपनी रणनीति पर कदम बढ़ाया। इसने अपने हाइब्रिड सैन्य अभियानों में एफएसए समूहों को अनियमित बलों के रूप में इस्तेमाल किया: ऑपरेशन यूफ्रेट्स शील्ड, 2016, ऑपरेशन ओलिव ब्रांच, 2018, और ऑपरेशन पीस स्प्रिंग, 2019। इन समूहों का नाम बदलकर सीरियाई राष्ट्रीय सेना (एसएनए) कर दिया गया। तुर्की सैन्य अभियानों में अपनी भागीदारी के बदले में तुर्की एसएनए को प्रशिक्षण, वेतन और हथियार प्रदान करता है। ये समूह तुर्की के साथ सहयोग करने और यूफ्रेट्स नदी के पूर्व में कुर्द बलों के खिलाफ तुर्की के अभियानों का समर्थन करने में भी सहज थे।

आज तुर्की केवल अपने बड़े रणनीतिक हितों की पूर्ति के लिए बशर-अल-असद की सीरियाई सरकार के साथ संबंधों के एक नए युग के लिए तैयार है। इस बीच, सीरियाई विपक्ष, तुर्की के लिए महज एक दिखावा मात्र प्रतीत होता है। इस बात की संभावना नहीं है कि विपक्ष स्पष्ट और विशिष्ट प्रतिबद्धताओं और सीरिया में संभावित राजनीतिक और संवैधानिक परिवर्तन से संबंधित मुद्दों के लिए क्षेत्रीय राजनीतिक आवरण के बिना तुर्की और सीरिया के बीच समझौते को स्वीकार करेगा। लेकिन तुर्की अपने उच्च-स्तरीय हितों को सीरियाई विपक्ष जैसे महत्वहीन समूहों द्वारा शासित होने की अनुमति नहीं देगा।

बदले में तुर्की एसएनए को प्रशिक्षण, वेतन और हथियार प्रदान करता है। ये समूह तुर्की के साथ सहयोग करने और यूफ्रेट्स नदी के पूर्व में कुर्द बलों के खिलाफ तुर्की के अभियानों का समर्थन करने में भी सहज थे।

बदले में उन्हें उत्तर-पश्चिमी सीरिया के कुछ हिस्सों में अपनी स्थिति मजबूत करने और उनकी रक्षा करने में तुर्की का समर्थन मिल रहा था। इतना ही नहीं, तुर्कों ने इन सीरियाई विपक्षी समूहों को लीबिया और नागोर्नो-काराबाख जैसी जगहों पर भी इस्तेमाल किया। दुर्भाग्य से, इन समूहों को यह एहसास नहीं हुआ कि वे तुर्कों के हाथों में खेल रहे हैं और यह केवल समय की बात है कि उन्हें अंकारा द्वारा भी बेच दिया जाएगा। तुर्की ने सीरिया में फूट डालो और राज करो की नीति अपनाई जिसमें आवश्यकताओं के अनुसार उन्होंने सीरियाई लोगों को एक दूसरे के खिलाफ मैदान में उतारा। संक्षेप में, अपने लाभ के लिए सीरियाई गृहयुद्ध में 'क्रांतिकारी' कारण को पुनर्जीवित करने की तुर्की की दृष्टि को सीरियाई विपक्षी समूहों पर संस्थागत नियंत्रण के माध्यम से प्रभावी ढंग से क्रियान्वित किया गया है।

आज तुर्की केवल अपने बड़े रणनीतिक हितों की पूर्ति के लिए बशर-अल-असद की सीरियाई सरकार के साथ संबंधों के एक नए युग के लिए तैयार है। इस बीच, सीरियाई विपक्ष, तुर्की के लिए महज एक दिखावा मात्र प्रतीत होता है। इस बात की संभावना नहीं है कि विपक्ष स्पष्ट और विशिष्ट प्रतिबद्धताओं और सीरिया में संभावित राजनीतिक और संवैधानिक परिवर्तन से संबंधित मुद्दों के लिए क्षेत्रीय राजनीतिक आवरण के बिना तुर्की और सीरिया के बीच समझौते को स्वीकार करेगा। लेकिन तुर्की अपने उच्च-स्तरीय हितों को सीरियाई विपक्ष जैसे महत्वहीन समूहों द्वारा शासित होने की अनुमति नहीं देगा।

अंकारा प्रमुख सीरियाई विपक्षी सशस्त्र गुटों को नियंत्रित करने की कोशिश करेगा और संभवतः उन लोगों को खत्म कर देगा जिन पर उसे अपने नए एजेंडे का विरोध करने का संदेह है। इस समय विपक्षी समूहों के लिए सबसे उपयुक्त विकल्प उत्तरी सीरिया में कुर्दों के साथ मिलकर एक संयुक्त राजनीतिक और सैन्य कमान बनाना है। इससे अरब और कुर्द विपक्षी समूहों को सीरियाई क्षेत्र के लगभग 35-40 प्रतिशत और कुल आबादी के एक बड़े हिस्से पर नियंत्रण मिल जाएगा। पिछले युद्ध के वर्षों के दौरान अरबों और कुर्दों के बीच विकसित हुई दुश्मनी के बावजूद ऐसा गठबंधन बनाना पारस्परिक रूप से फायदेमंद होगा यदि विकल्प उनका राजनीतिक अंत है। संयुक्त राज्य अमेरिका संभवतः इस गठबंधन का समर्थन करने पर भी विचार करेगा, विशेष रूप से कुर्दों को एकजुट करने और उन्हें सीरियाई वार्ता समिति में शामिल करने के अतीत के प्रयासों के साथ-साथ कुर्द और विपक्ष-नियंत्रित के बीच व्यापार के पुनरुद्धार के लिए इसके आह्वान को देखते हुए।

(साभार : प्रभा साक्षी)

महत्त्वपूर्ण

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Adityan at Deviyin Kanmani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006. Editor : Bhupendra Kumar (Responsible for selection of news under PRB Act.). Group Editor - Shreekant Parashar. Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any suchmanner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.**Regn No.RNI No. : TNHIN / 2013 / 52520**

पाठकों से अनुरोध है कि इस प्रकाशन में प्रकाशित किए जाने वाले किसी भी तरह के विज्ञापन (वैवाहिक, वर्गीकृत, टेंड़र एवं सजावटी इत्यादि) पर कोई भी कार्यवाही, प्रतिबद्धता या धनराशि का व्यय करने से पूर्व इन विज्ञापनों के बारे में समस्त जानकारी वह स्वयं प्राप्त कर लें। दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह उत्पादों की गुणवत्ता तथा सेवाओं के लिए विज्ञापनदाताओं द्वारा किए जा रहे किसी प्रकार के दावों के लिए जिम्मेदार नहीं है। अगर विज्ञापनदाता विज्ञापन में किया जा रहा दावा पूरा नहीं करता है तो दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह के संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक या मालिकान को पाठक किसी भी रूप में उत्तरदाई नहीं बना सकता।- **दक्षिण भारत राष्ट्रमत**

जारी

नई दिल्ली में शुक्रवार को नीति आयोग के उपाध्यक्ष सुमन बेरी ने एसडीजी इंडिया इंडेक्स 2023-24 जारी करते हुए।

क्रिकेटर, फिल्मकार, सिलेब्रिटी अनंत अंबानी की विवाह समारोह में शामिल होने के लिए मुंबई पहुंचे

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मुंबई। जॉन सीना से लेकर रजनीकांत तक हॉलीवुड और भारतीय फिल्म जगत के जाने-माने कलाकार, अमेरिकी मीडिया की दिग्गज हस्ती किम करदाशियां और उनकी बहन क्लो करदाशियां तथा महेंद्र सिंह धोनी जैसे क्रिकेटर उन शीर्ष सिलेब्रिटी मेहमानों में शामिल हैं जो एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति एवं उद्योगपति मुकेश अंबानी के सबसे छोटे बेटे अनंत अंबानी के आज यानी शुक्रवार को होने वाले विवाह समारोह में शामिल होने के लिए मुंबई पहुंचे हैं। अनंत अंबानी दवा जगत के दिग्गज उद्योगपति वीरेन और शैला मर्चेंट की बेटी राधिका मर्चेंट के साथ शुक्रवार को सात फेरे लेंगे। शादी मुंबई के 'जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर' में होगी और बाद के दिनों में प्रीतिभोजों का आयोजन किया जाएगा।

करदाशियां बहनों का बृहस्पतिवार को देर रात ताज महल होटल में रेड कार्पेट स्वागत किया गया। उन्होंने विवाह समारोह से पहले मुंबई की व्यस्त सड़कों पर ऑटो रिक्शा की सवारी की। जॉन सीना और रैपर रेमा के अलावा ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर एवं बोरिस जॉनसन भी बृहस्पतिवार रात भारत पहुंचे। लाल और सुनहरे रंग की शेरवानी पहने अनंत अपने पिता मुकेश, मां नीता, बहन ईशा एवं उनके पति आनंद पीरामल, भाई आकाश एवं उनकी पत्नी श्लोका मेहता तथा उनके बच्चों के साथ कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे।

अनंत ने सुनहरी कढ़ाई वाली बंद गले की शेरवानी एवं पायजामा और उसके साथ स्नीकर पहने। न केवल अंबानी परिवार ने दूल्हे, बल्कि मेहमानों ने भी डिजाइनर भारतीय पोशाक पहनीं। जॉन सीना नीले रंग की बंदगला शेरवानी में समारोह स्थल पहुंचे। रजनीकांत, उनकी बेटी सौंदर्या और उनके पति एवं बेटे ने पारंपरिक तमिल परिधान पहने। धोनी अपनी पत्नी साक्षी और बेटी जीवा के साथ सुनहरे पीले रंग की पारंपरिक पोशाक पहनकर समारोह में पहुंचे।

अनिल कपूर ने बंदगला पहना जबकि संजय दत्त ने भारी कढ़ाई वाली काली शेरवानी पहनी। निर्देशक-निर्माता करण जौहर, फिल्म अभिनेता वरुण धवन, वेंकटेश, संगीत निर्देशक ए आर रहमान और उनकी पत्नी, जैकी श्रॉफ, राजकुमार राव और अनन्या पांडे पारंपरिक भारतीय परिधानों में नजर आए। सारा अली खान अपने भाई इब्राहिम के साथ आईं, जबकि जाह्नवी कपूर अपने कथित प्रेमी शिखर पहाड़िया के साथ समारोह में पहुंचीं। प्रियंका चोपड़ा जोनास अपने पति निक के साथ विवाह समारोह स्थल पहुंची। क्रिकेटर हार्दिक पांड्या भी भारतीय पारंपरिक परिधान में पहुंचे। पूर्व क्रिकेटर के. श्रीकांत भी समारोह में शामिल हुए।

विवाह समारोह तीन दिन का कार्यक्रम है। लग्न विधि शुक्रवार को होगी जबकि शनिवार और रविवार को 'रिसेप्शन' होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शनिवार को समारोह में शामिल होने की संभावना है। विवाह समारोह की जानकारी रखने वाले सूत्रों ने बताया कि मेहमानों की सूची में भारतीय और विदेशी हस्तियां, नेता और कॉरपोरेट दिग्गज शामिल हैं। सूत्रों का कहना है कि विवाह समारोह समारोह में करदाशियां बहनों, बोरिस जॉनसन, टोनी ब्लेयर, कलाकार जेफ कून्स, अमेरिका के पूर्व विदेश मंत्री जॉन केरी, कनाडा के पूर्व प्रधानमंत्री स्टीफन हार्पर समेत अन्य लोगों के शादी में शामिल होने की उम्मीद है। शादी समारोह में अमिताभ बच्चन, सलमान खान, शाहरुख खान, अक्षय कुमार, आमिर खान, दीपिका पादुकोण और आलिया भट्ट समेत बॉलीवुड की कई दिग्गज हस्तियां शिरकत करेंगी।

अनंत अंबानी की शादी में कार्दशियन मुंबई पहुंचीं

मुंबई। एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति मुकेश अंबानी के बेटे अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की शादी में शामिल होने के लिए अमेरिकी मीडिया की दिग्गज हस्ती किम कार्दशियन अपनी बहन क्लो कार्दशियन के साथ शुक्रवार को मुंबई पहुंच गईं। अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट आज जुलाई को मुंबई में विवाह बंधन में बंधेंगे। सोशल मीडिया पर प्रसारित एक वीडियो के अनुसार, 43 वर्षीय किम और 40 वर्षीय क्लो अपने कर्मचारियों और सुरक्षाकर्मियों के साथ शुक्रवार सुबह मुंबई पहुंचीं। एक वीडियो में किम हवाई अड्डे से बाहर निकलते हुए और बाहर इंतजार कर रहे पत्रकारों का अभिवादन करते हुए नजर आ रही हैं, जबकि क्लो उनके पीछे थीं। उन्होंने एक वीडियो के कैप्शन में लिखा, हम पहुंच गए हैं।

मीडिया में आयी खबरों के मुताबिक, किम ने भारत पहुंचने के बाद सोशल मीडिया मंच 'इंस्टाग्राम' पर कई वीडियो और तस्वीरें भी साझा कीं। किम और क्लो, दोनों पहली बार भारत की यात्रा पर आई हैं। किम द्वारा 'इंस्टाग्राम' पर साझा वीडियो के अनुसार, होटल के कर्माचारियों ने किम और क्लो का गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्होंने किम के माथे पर टीका लगाया और उन्हें एक शॉल के साथ-साथ फूलों का गुलदस्ता भी भेंट किया। जिसके बाद किम ने उनका धन्यवाद किया। मुकेश अंबानी के सबसे छोटे बेटे अनंत अंबानी दवा जगत के दिग्गज उद्योगपति वीरेन और शैला मर्चेंट की बेटी राधिका मर्चेंट के साथ आज सात फेरे लेंगे।

प्रचंड विश्वासमत हासिल करने में विफल, ओली बनेंगे नेपाल के नए प्रधानमंत्री

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

काठमांडू। नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दाहाल 'प्रचंड' शुक्रवार को संसद में विश्वासमत हासिल नहीं कर पाए। पिछले सप्ताह उनकी सरकार से कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल-यूनिफाइड मार्क्सवादी लेनिनवादी (सीपीएन-यूएमएल) ने अपना समर्थन वापस ले लिया था। इस घटनाक्रम के बाद पूर्व प्रधानमंत्री के. पी. शर्मा ओली के नेतृत्व में नयी सरकार के गठन का मार्ग प्रशस्त हो गया है। देश की 275 सदस्यीय प्रतिनिधि सभा में 69 वर्षीय प्रचंड को 63 वोट मिले, जबकि विश्वासमत प्रस्ताव के विरोध में 194 वोट पड़े। विश्वासमत हासिल करने के लिए कम से कम 138 वोट की जरूरत थी। प्रतिनिधि सभा के 258 सदस्यों ने मतदान में भाग लिया, जबकि एक सदस्य अनुपस्थित रहा।

नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी-माओइस्ट सेंटर (सीपीएन-एमसी) के अध्यक्ष प्रचंड 25 दिसंबर, 2022 को पद संभालने के बाद चार बार विश्वासमत हासिल करने में सफल रहे, लेकिन इस बार उन्हें असफलता मिली। प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष देव राज घिमिरे ने प्रचंड के विश्वासमत प्रस्ताव को संविधान के अनुच्छेद 100 खंड 2 के अनुसार मतदान के लिए रखा। मतदान पूरा होने के बाद उन्होंने घोषणा की कि प्रधानमंत्री प्रचंड विश्वासमत हासिल करने में असफल रहे। अध्यक्ष घिमिरे अब राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल को सूचित करेंगे, जो संविधान के अनुच्छेद 76 खंड 2 के अनुसार दो या दो से अधिक राजनीतिक दलों को नयी सरकार के लिए दावा पेश करने के लिए आमंत्रित करेंगे। इससे नेपाली कांग्रेस और सीपीएन-यूएमएल के लिए नयी गठबंधन सरकार बनाने का मार्ग प्रशस्त हो गया है।

पूर्व प्रधानमंत्री के. पी. शर्मा ओली के नेतृत्व वाली सीपीएन-यूएमएल ने सदन में सबसे बड़ी पार्टी नेपाली कांग्रेस के साथ सत्ता-साझेदारी समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद पिछले सप्ताह प्रचंड के नेतृत्व वाली सरकार से समर्थन वापस ले लिया था। नेपाली कांग्रेस के पास प्रतिनिधि सभा में 89 सीट हैं, जबकि सीपीएन-यूएमएल के पास 78 सीट हैं। इस तरह दोनों की संयुक्त संख्या 167 है, जो निचले सदन में बहुमत के लिए आवश्यक 138 से कहीं अधिक है।देउबा और ओली ने प्रचंड के नेतृत्व वाली सरकार को अपदस्थ करने और नयी गठबंधन सरकार बनाने के लिए सोमवार को सात सूत्री समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। समझौते के अनुसार, ओली और देउबा प्रतिनिधि सभा की शेष अवधि के दौरान बारी-बारी से प्रधानमंत्री पद साझा करेंगे। पहले चरण में ओली डेढ़ साल के लिए प्रधानमंत्री बनेंगे और उसके बाद बाकी अवधि के लिए देउबा प्रधानमंत्री रहेंगे।

'काकुड़ा' में दोहरी भूमिका में नजर आएंगी सोनाक्षी

मुंबई/एजेन्सी

सोनाक्षी सिन्हा इस साल सितंबर में बॉलीवुड में बतौर एक्टर 14 साल पूरे करने वाली हैं। इन सालों में उन्होंने कई तरह की भूमिकाएँ निभाईं, लेकिन 2024 में ही उन्होंने अपनी बहुचर्चित वेब सीरीज़ हीरामंडी में पहली बार दोहरी भूमिका निभाई। और अब यह पता चला है कि उनकी हालिया रिलीज़ काकुड़ा में भी उनकी दोहरी भूमिका है। ककुड़ा एक हॉरर कॉमेडी है, जिसका निर्देशन मुंज्या (2024) फेम आदित्य सरपोतदार ने किया है। सीधे ज़ी5 पर रिलीज़ हुई, यह एक ऐसे गाँव में सेट है जहाँ एक बौना भूत रहता है। भूत एक नवविवाहित व्यक्ति, सनी (साकिब सलाम द्वारा अभिनीत) पर हमला करता है। वह 13 दिनों में मरने वाला है। सब कुछ सहने के लिए तैयार नहीं, उसकी पत्नी इंदिरा उर्फ ङ्कङ्कइंदु (सोनाक्षी सिन्हा) एक भूत शिकारी, विक्टर जेकब्स (रितेश देशमुख) से मदद मांगती है।

फिल्म में बहुत जल्द ही दर्शकों को पता चलता है कि इंदु की एक जुड़वाँ बहन है जिसका नाम गोमती है। जुड़वाँ बहनों का यह पहलू एक दिलचस्प पहलू बन जाता है और खास तौर पर फिल्म के दूसरे भाग में एक महत्वपूर्ण कथानक बिंदु बन जाता है। इस बीच, हीरामंडी में सोनाक्षी सिन्हा ने रेहाना और उनकी बेटी फरीदन की भूमिका निभाई। लेकिन संजय लीला भंसाली द्वारा निर्देशित इस नेटफ्लिक्स शो में दोनों किरदार कभी एक साथ नहीं दिखाई देते। ककुड़ा में ऐसा नहीं है और कई दृश्यों में स्क्रीन पर दो सोनाक्षी दिखाई देती हैं।

काकुड़ा सोनाक्षी सिन्हा की अपने लंबे समय के बॉयफ्रेंड और अभिनेता ज़हीर इकबाल से शादी के बाद पहली रिलीज़ भी है। यह शादी सितारों से सजी एक शादी थी और बिहार में विरोध प्रदर्शनों और माइक्रोब्लॉगिंग प्लेटफ़ॉर्म एक्स पर ज़हीर पर भाई लव सिन्हा की टिप्पणियों के कारण कुछ विवादों में भी रही, जिसे बाद में उन्होंने हटा दिया। हीरामंडी से पहले, सोनाक्षी सिन्हा की 2024 की पहली रिलीज़ बड़े मियाँ छोटे मियाँ थी, जिसमें वह सहायक भूमिका में नज़र आई थीं। उनकी आने वाली रिलीज़ निकिता रॉय एंड द बुक ऑफ़ डार्कनेस है, जिसका निर्देशन उनके भाई कुश सिन्हा ने किया है।

'सरफिरा' का हिस्सा बनकर गर्व महसूस कर रहे हैं अक्षय कुमार

मुंबई/एजेन्सी

बॉलीवुड अभिनेता अक्षय कुमार फिल्म सरफिरा में काम कर गर्व महसूस कर रहे हैं।अक्षय कुमार, परेश रावल, राधिका मदान और सीमा बिस्वास जैसे शानदार कलाकारों से सजी सरफिरा कैप्टन गोपीनाथ की किताब सिंपलीफ्लाई से प्रेरित है।

यह फिल्म ग्रामीण महाराष्ट्र में एक शिक्षक के बेटे वीर जगन्नाथ म्हात्रे (अक्षय कुमार) की यात्रा का अनुसरण करती है, जो भारत में हवाई यात्रा में क्रांति लाने के लिए सभी बाधाओं को पार करता है। सुधा और शालिनी उषादेवी द्वारा लिखित, पूजा तोलानी के संवाद और जी.वी. प्रकाश कुमार संगीतमय, सरफिरा का निर्माण अरुणा भाटिया (केप ऑफ गुड फिल्म्स), साउथ सुपरस्टार सूर्या और ज्योतिका (2डी एंटरटेनमेंट) और विक्रम मल्होत्रा ङ्कङ्क(अबुंदंतिया एंटरटेनमेंट) द्वारा किया गया है। फिल्म सरफिरा आज रिलीज हो गयी है।

अक्षय कुमार ने इंस्टाग्राम पर लिखा,'सरफिरा' का मतलब पागल होता है और पीछे मुड़कर देखने पर मुझे लगता है कि यदि मैंने यह फिल्म नहीं की होती तो मैं पागल होता। तो मुझे खुशी है कि मैंने ऐसा किया।यह यात्रा लगभग तीन साल पहले शुरू हुई थी और अंततः यह आप सभी के गवाह बनने और उम्मीद है कि इसे संजोयेंगे। सरफिरा एक सपने और उस सपने को पूरा करने की जिद की कहानी है, जिससे हम सब सीख सकते हैं। मुझे इस फिल्म का हिस्सा होने पर बहुत गर्व है और खुशी है कि सरफिरा मेरी 150वीं फिल्म है। मुझे उम्मीद है कि आपको इसे जल्द ही सिनेमाघरों में देखने का मौका मिलेगा। सरफिरा अब तुम्हारा है।

'बैड कॉप' में गला काटने वाले सीन पर घबरा गए थे अनुराग कश्यप

मुंबई/एजेन्सी

अनुराग कश्यप डायरेक्टर के साथ-साथ एक्टर भी हैं। वह इन दिनों वेब सीरीज 'बैड कॉप' को मिल रहा पॉजिटिव फीडबैक एन्जॉय कर रहे हैं। शो के डायरेक्टर आदित्य दत्त ने खुलासा किया कि अनुराग को एक मर्डर सीन शूट करने में काफी परेशानी आई थी। मर्डर सीन अक्सर चुनौतीपूर्ण होते हैं और उन्हें शूट करने के लिए एक्टर्स और क्रू दोनों को काफी हिम्मत जुटानी पड़ती है। अनुराग कश्यप को ऐसा ही एक सीन शूट करने में परेशानी आई।

सीरीज के डायरेक्टर आदित्य दत्त ने कहा कि एक सीन में अनुराग को किसी दूसरे का गला काटना था, लेकिन उन्हें इस सीन को शूट करने में परेशानी हो रही थी। मैं उन्हें याद दिलाने की कोशिश कर रहा था कि बतौर डायरेक्टर उनके कई फिल्मों में खून-खराबा होता है, ताकि वह ये सीन आसानी से कर सकें, लेकिन वह कहते रहे कि शूटिंग करना और सीन को खुद से करना अलग-अलग बातें होती है। आदित्य ने आगे बताया कि ऐसा करने से पहले अनुराग को घबराहट होने लगती थी और मुझे उन्हें बैठाकर बताना पड़ता था कि यह सिर्फ शूटिंग है, ताकि वह इसे बहुत आसानी से कर पाएं, क्योंकि उन्होंने 'रमन राघव' या 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' या फिर अपनी दूसरी फिल्मों में ऐसे वीभत्स सीन शूट किए हैं। एक दूसरे को मारना, गोली मारना, काटना जैसे हिंसा वाले सीन इन फिल्मों में रहे हैं। लेकिन जब आप उनके (अनुराग कश्यप) हाथ में चाकू थमाकर कहते हैं, इसका एक्ट करो और इस आदमी का गला काट दो या कोई चीज काट दो, तो वह घबराने लगते हैं।

'बैड कॉप' डिज्नी+ हॉटस्टार पर स्ट्रीम हो रही है। 'बैड कॉप' 2017 के जर्मन शो 'बैड कॉप: क्रिमिनल गट' की हिंदी रीमेक है। अनुराग कश्यप के ऑन कैमरा प्रोजेक्ट की बात करें तो वह 'देव डी', 'गुलाल', 'शागिर्द', 'गैंग', 'ब्लैक फ्राइडे', 'अकीरा' जैसी फिल्मों में नजर आ चुके हैं।

'नाथ कृष्ण और गौरी की कहानी' में नेगेटिव रोल निभाएंगी सत्यमवदा सिंह

मुंबई/एजेन्सी

टीवी एक्ट्रेस सत्यमवदा सिंह 'नाथ कृष्ण और गौरी की कहानी' शो में नेगेटिव रोल में नजर आएंगी। वह जीनत का किरदार निभाएंगी। एक्ट्रेस 'चांद जलने लगा' सीरियल की भूमिका के लिए घर-घर में जानी जाती हैं। सत्यमवदा ने कहा कि मैं जीनत का किरदार निभाने के लिए एक्साइटेड हूं। वह मजाकिया, खूबसूरत और मनमौजी लड़की है। यह कॉमिक टाइमिंग वाला एक नेगेटिव रोल है। मैं इस तरह के किरदार का लंबे समय से इंतजार कर रही थी। एक्ट्रेस ने कहा कि वह इस नए सफर को एक्सप्लोर करने के लिए एक्साइटेड हैं। सत्यमवदा ने बताया कि वह फिल्म निर्माता संजय लीला भंसाली की सीरीज 'हीरामंडी: द डायमंड बाजार' में सोनाक्षी सिन्हा, मनीषा कोइराला, अदिति राव हैदरी, संजीदा शेख और शर्मिन सहगल जैसे किरदारों को निभाना चाहती हैं। उन्होंने आगे कहा कि संजय लीला भंसाली सर की 'हीरामंडी' देखने के बाद, मैंने स्क्रीन पर एक मुस्लिम महिला का किरदार निभाने का मन बनाया। मेरी एक और इच्छा है कि मैं उनके प्रोजेक्ट में लीड रोल निभाऊं।

उन्होंने कहा कि मुझे खुशी है कि मुझे टीवी शो में एक मुस्लिम महिला की भूमिका निभाने का मौका मिलेगा। इससे पहले, मैंने गुलजार सर के नाटक में एक मुस्लिम किरदार अदा किया था, इसलिए मुझे यकीन है कि मैं इस नए किरदार को शानदार ढंग से निभा पाऊंगी। 'नाथ कृष्ण और गौरी की कहानी' में चाहत पांडे, अलीशा पंवार और रेयांश वीर चड्ढा भी हैं।

अपकमिंग एपिसोड बलूचिस्तान, पाकिस्तान पर बेस्ड होने के कारण एक नया मोड़ लेने वाला है। एक्ट्रेस की बात करें तो सत्यमवदा सिंह ने मॉडलिंग के साथ अपने करियर की शुरुआत की। उन्होंने 'ग्लैडरैग्स मेगा मॉडल', 'मिस कल्चर वर्ल्ड' इंडिया, 'मिस उत्तर प्रदेश' और 'मिस दिल्ली' जैसे ब्यूटी सौंदर्य कॉम्पिटिशन जीते। इसमें 'मोस्ट फोटोजेनिक' खिताब भी शामिल है। उन्होंने 2014 में शो 'लापतागंज' के साथ अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत की थी फिर 'चिड़िया घर' और 'कृष्ण कन्हैया' जैसे अन्य टीवी सीरियल्स में भी अहम भूमिका निभाई थी।

राम चरण ने 'गेम चेंजर' की शूटिंग पूरी कर कहा- 'खेल बदलने वाला है'

मुंबई/एजेन्सी

पैन इंडिया स्टार राम चरण ने आंध्र प्रदेश के राजमुंदरी में अपकमिंग फिल्म 'गेम चेंजर' की शूटिंग पूरी कर ली है। उन्होंने इस बात की जानकारी अपने इंस्टाग्राम पर दो तस्वीरों का एक कोलाज साझा कर दी। पहली तस्वीर में राम चरण को हेलीकॉप्टर की ओर बढ़ते हुए देखा जा सकता है, जबकि दूसरी तस्वीर शूटिंग खत्म होने के बाद की है। एक्टर ने इन तस्वीरों को शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा, खेल बदलने वाला है! गेम चेंजर की शूटिंग पूरी हो गई है... अब सिनेमाघरों में मिलते हैं। राम चरण के इस पोस्ट को सामंथा रूथ प्रभु और आलिम हकीम जैसी हस्तियों ने लाइक किया है।

यह एक पॉलिटिकल एक्शन थ्रिलर फिल्म है, राम चरण इसके फाइनल शेड्यूल की शूटिंग आंध्र प्रदेश के राजमुंदरी में कर रहे थे। इसका निर्देशन एस. शंकर ने किया है। वहीं निर्माण श्री वेंकटेश्वर क्रिएशंस ने किया है। इस फिल्म में राम चरण के साथ कियारा आडवाणी, जयराम, अंजलि, एसजे सूर्या, श्रीकांत, सुनील, समुथिरकानी और नासर लीड रोल में हैं। 'गेम चेंजर' में एक्टर तिहरे किरदार यानि ट्रिपल रोल में नजर आएंगे। 'गेम चेंजर' की रिलीजि डेट का अभी खुलासा नहीं हुआ है, लेकिन बताया जा रहा है कि यह पांच भाषाओं तेलुगु, तमिल, हिंदी, कन्नड़ और मलयालम में रिलीज की जाएगी। वर्कफ्रंट की बात करें तो, राम चरण जल्द फिल्म 'गेम चेंजर' के अलावा 'आरसी 16' और 'आरसी 17' में भी नजर आएंगे। 'आरसी 16' एक स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म है, जिसमें वह एक्ट्रेस जाह्नवी कपूर के अपोजिट नजर आएंगे। इसका निर्देशन बुच्ची बाबू करेंगे। इस फिल्म में कन्नड़ सुपरस्टार शिवा राजकुमार भी दिखाई देंगे। फिल्म का संगीत एआर रहमान ने तैयार कर लिया है। वहीं 'आरसी 17' की घोषणा राम चरण ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर होली के मौके पर की थी। फिल्म की कहानी जाने-माने निर्देशक सुकुमार ही लिख रहे हैं, जो ब्लॉकबस्टर फिल्म 'पुष्पा' का निर्देशन कर चुके हैं और इन दिनों अल्लू अर्जुन स्टारर 'पुष्पा 2' को लेकर सुर्खियों में हैं। यह 'रंगस्थलम' के बाद दोनों की दूसरी फिल्म होगी।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
www.dakshinbharat.com
epaper.dakshinbharat.com

चेन्नई | शनिवार | 13-07-2024 /dakshinbharat /dakshinbharat DAKSHIN BHARAT RASHTRAMAT HINDI DAILY

RNI No. : TNHIN/2013/52520
Regn No. : TN/CCN/613/2014-2016
posted at Patrika Channel,
Egmore RMS, Chennai-8

शहर के आदिनाथ जैन श्वेतांबर संघ चिकपेट के तत्वावधान में संभवनाथ जैन मंदिर वीवी पुरम में गच्छाधिपति आचार्यश्री जयानंदसूरीश्वरजी के आज्ञानुवर्तिनी साध्वीश्री संघवणश्रीजी की सुशिष्या साध्वीजीश्री मणिप्रभाश्रीजी का चातुर्मास प्रवेश सकल संघ के अति उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ।

सम्यकी पाप करते समय परिणाम का विचार करता है : युवाचार्य महेंद्रऋषि

नार्थ टाऊन स्थानक भवन में धर्मसभा का आयोजन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई । शहर के नार्थ टाऊन स्थानक भवन में विराजित श्रमण संघीय युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी महाराज ने शुक्रवार को प्रवचन में कहा कि बोधि का मिलना अत्यंत मुश्किल है। लेकिन ज्ञानी कहते हैं तीन चीजें करने से बोधि सहज सुलभ हो सकती है। उन्होंने कहा सम्यक दर्शन में रुचि रखो, यह आपके लिए बहुत हितकारी है। यह कई पापों से बचाने वाला है। जो व्यक्ति मिथ्यात्व में लीन हैं, उसे पाप का मतलब ही नहीं मालुम होता। वह हंस- हंस कर पाप करता है। उसे समझ में ही नहीं आएगा कि पाप कर रहा हूं। उसे जब सजा मिलती है, तब उसे समझ में आता है। उन्होंने कहा जो सम्यकी है, वह पाप करते समय परिणाम का विचार करता है। जो सम्यक दर्शन में लगा हुआ है, वह कभी फल की इच्छा नहीं करता है। अगर वह किसी फल की इच्छा करता है तो जन्म मरण का चक्कर बांध लेता है। साधना जितनी हो सके, करो लेकिन उसमें सौदेबाज़ी नहीं होनी चाहिए, वह अनियाणा है।

युवाचार्यश्री ने कहा, धर्म का उदय और हमारी भाव अवस्था यानी अध्यवसाय और कर्म के परिणाम लेश्या है। लेश्याएं छः होती है। कृष्णा से लेकर शुक्ल लेश्या तक रंगों के नाम दिए गए हैं। इनमें तीन लेश्याएं प्रशस्त है। इन्हें शुभ माना गया है। वैसे ही तीन अप्रशस्त है। अपने छोटे से प्रयोजन के लिए भयंकर आरंभ सारंभ करना कृष्णा लेश्या है। कृष्णा लेश्या करने वाले को स्वार्थ के अलावा कुछ दिखाई नहीं देता। जो एक तरह से शक्ति का दुरुपयोग कर आने वाले लोगों के लाभ को वंचित कर देता है, वह नील लेश्या है। वह पेड़ की जड़ को नहीं काटता लेकिन बड़ी टहनी को काट देता है।

नील लेश्या मुख्य स्रोत को खत्म कर देता है। थोड़े के लिए बहुत ज्यादा आरंभ सारंभ कर पाप करे, वह नील लेश्या है। जो अप्रत्यक्ष रूप से हिंसा, पाप करता है, वह कापोत लेश्या है। जो छोटे से फलों के लिए एक टहनी काट देता है, वह तेजोलेश्या वाला है। अपने लिए जितना आवश्यक है, उतना कर लेना, पद्मा लेश्या है। शुक्ला लेश्या वाले को कुछ चाहिए ही नहीं होता है। उसे मिल गया तो ठीक, नहीं तो कोई अफसोस नहीं, कोई आरंभ सारंभ नहीं, भावों में भी वैसे ही हैं। अप्रशस्त लेश्या हमारी गति को बिगाड़ने वाली है। निंदा, प्रशंसा, लाभ अलाभ हो, किसी के प्रति राग-द्वेष नहीं, वह शुक्ल लेश्या है। शुक्ल लेश्या का जो पालन करता है, उसे शत प्रतिशत बोधि सुलभ रहती है। इस तरह वह आत्मलीन होकर अंतिम समय को सुधार सकता है। आप भव भ्रमण के चक्कर को खत्म करने का प्रयास करो। प्रिंस कोर्टयार्ड संघ के प्रवीण तालेड़ा ने अपने वक्तव्य में सबसे सोमवार प्रातः 9 बजे चातुर्मास मंगल प्रवेश में ज्यादा से ज्यादा जुड़ने की विनंती की।

उन्होंने कहा इस अवसर को हमें ऐतिहासिक बनाना है। युवाचार्यश्री की निश्रा में 13 और 14 जुलाई को प्रातः 9.15 से एवं 15 जुलाई को प्रातः 7 से 8 बजे तक प्रिंस कोर्टयार्ड संघ में भक्तामर जाप का आयोजन होगा।

अनिश्चितकालीन पावर कट से परेशान है पुंजल की जनता

चेन्नई। शहर के पुंजल इलाके में पिछले कई महिनों से पावर कट की समस्या अनवरत बनी हुई है। निवासी अशोक मोदी ने बताया कि पिछले कई दिनों से इस इलाके में अनिश्चितकालीन पावर कट की समस्या है जिससे इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों के व्यवसाय पर व्यापक असर पड़ रहा है । उन्होंने बताया कि अनिश्चितकालीन पावर कट की समस्या को लेकर वह इस संबंध में बिजली विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को कई बार फोन पर अवगत करवा चुके हैं परंतु उनकी ओर से अभी तक इस संबंध में कोई ठोस कार्यवाही नहीं की गई तथा समस्या जस की तस बनी हुई है। मोदी ने बताया कि इलाके में प्रवासी काफी संख्या में बसे हुए हैं एवं अनेक व्यवसाय में लगे हुए हैं। पावर कट की अनिश्चितकालीन समस्या के कारण न केवल व्यवसाय अपितु यहां पर रहने वाले बच्चों की शिक्षा पर भी इसका गंभीर असर पड़ रहा है, बच्चे रात में ठीक से पढ़ाई नहीं कर पा रहे हैं उन्होंने बताया कि समस्या और दुष्कर तब हो जाती है जब इलाके में बारिश होती है बारिश के समय में इलाके में मच्छरों का प्रकोप बढ़ जाता है जिससे मच्छर जनित रोग जैसे मलेरिया, डेंग, चिकनगुनिया होने की संभावना बढ़ जाती है, रात में नींद पूरी न हो पाने के कारण कई लोगो को गंभीर बीमारियां हो रही है। मोदी ने विद्युत विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों से अनिश्चितकालीन पावर कट की समस्या तत्काल संज्ञान लेकर इस समस्या से निजात दिलवाने की गुहार लगाई है।

'प्रवचन ही जीवन की राह बदलने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है'

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर के आदिनाथ जैन श्वेतांबर संघ चिकपेट के तत्वावधान में संभवनाथ जैन मंदिर वीवी पुरम में गच्छाधिपति आचार्यश्री जयानंदसूरीश्वरजी के आज्ञानुवर्तिनी साध्वीश्री संघवणश्रीजी की सुशिष्या साध्वीजीश्री मणिप्रभाश्रीजी का चातुर्मास प्रवेश सकल संघ के अति उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ। ज्ञातव्य है कि साध्वीश्री का 24 वर्ष पूर्व चातुर्मास हुआ था और इस बार 12 दीक्षित साध्वीजी पहली बार चातुर्मास के लिए बेंगलूरु आ रही है जिससे भी उनके सांसारिक परिवारजन, युवतियों में अधिक उत्साह है। साध्वीश्री को बधाकर प्रवेश करवाने का लाभ सुखीदेवी रमेशकुमार हरण परिवार एवं गुरुपूजन का लाभ राणमल गुणेशमल रांका परिवार ने लिया। इस मौके पर साध्वीश्री ने कहा कि प्रवचन ही जीवन की राह बदलने का सर्वश्रेष्ठ उपाय हैं। आज की युवा पीढ़ी को अगर धर्म से जोड़े रखना है तो हमें उन्हें उनकी ही समझ में शिविर, वांचना, प्रवचन आदि के माध्यम से समझाना होगा।

सृजन व नेहरू विद्यालय के तत्वावधान में आयोजित हुए हिन्दी भाषा के अनेक कार्यक्रम

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। सृजन एसोसिएशन कोयंबटूर और नेहरु विद्यालय ने संयुक्त रुप से स्कूल एवं कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए हिंदी भाषा से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के तहत चित्रकला, आशु कविता, भाषण, परिच्छेद संशोधन, एकल गान एंव नुक्कड़ नाटक कुल 6 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें 3 वर्गों में शहर के 13 विद्यालियों के 160 से अधिक प्रतिभागियों का बांटा गया। सृजन के अध्यक्ष श्रीगोपाल माहेश्वरी, उपाध्यक्ष गुलाब मेहता, सह सचिव सस्नेहा बैद, कार्यसमिति सदस्य घीसुलाल हिंगड, उत्तम पुंगलिया, कोषाध्यक्ष संतोष मूंदडा एंव नेहरु विद्यालय के संतोष उपस्थित रहे। भाषण प्रतियोगिता में सभी प्रतिभागियों ने बडे जोश के साथ अपनी बात को रखा। एकल गान मे भी सभी प्रतिभागियों ने अपनी मधुर आवाज से समां बांध दिया। अंत मे सभी वर्ग के प्रथम, द्वितीय एंव तृतीय स्थान के विजेता विधार्थियो को सृजन पदाधिकारियों/सदस्यो एंव नेहरू विधालय के पदाधिकारियों के कर कमलो से ट्रॉफी एंव पुरस्कार प्रदान किये गये। सृजन के उपाध्यक्ष गुलाब मेहता ने सृजन संस्था की गतिविधियों की जानकारी दी एंव अंत मे स्नेहा बैद ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन ज्ञापित किया।

आंध्र प्रदेश में सड़क हादसा , बाइक सवार तीन प्रवासी श्रमिकों की मौत

तिरुपति ।आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले स्थित सत्यवेदु में कार बाइक की भिड़ंत में तीन प्रवासी श्रमिकों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। हादसा तिरुपति जिले के सत्यवेदु बुद्धिनेडु कांड्रिगा मंडल के पारलापल्ली के पास हुआ। हादसे में बाइक सवार तीन की मौके पर ही मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शवों को पोस्टमार्टम के लिए श्रीकालाहस्ती एरिया अस्पताल में पहुंचाया।

बताया जा रहा है कि मृतक अलाथुर के पास एक इंडस्ट्री में काम करते थे। पुलिस के मुताबिक कालाहस्ती से लौटते वक्त यह हादसा हुआ। इससे पहले शुक्रवार सुबह ऐसी ही दर्दनाक खबर कर्नाटक से आई थी।

माहेश्वरी महिलाओं का माहेश्वरी भवन में 'आनंद मेला' 20 को

मानवसेवा के सहयोगार्थ आयोजित किया जा रहा है आयोजन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। स्थानीय माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा 'आनन्द मेला उत्थान 2024' का आयोजन 20 जुलाई को ओकलीपुरम स्थित माहेश्वरी भवन में प्रातः 10 बजे से आयोजित किया जा रहा है। इस संदर्भ में आयोजित पत्रकार वार्ता में संगठन की अध्यक्ष श्वेता बिहानी ने बताया कि इस मेले में डायमंड के गहने, डिज़ाइनर राखियाँ, घरेलू सजावट का सामान,रसायन मुक्त मेकअप का सामान, साबुन एवं घरेलू उत्पाद सामग्री के लगभग 80 स्टॉल लगाए जाएंगे जिसमें आने वाले ग्राहक एक ही छत के नीचे खरीददारी का आनंद ले सकते हैं। उन्होंने बताया कि इस बार मेले के प्रायोजक पंचकेसरी बड़ेरा ज्वेलर्स हैं जो अपने स्वर्ण आभूषणों की नवीनतम डिजाइनों का भी प्रदर्शन करेंगे।

उन्होंने बताया कि इस प्रदर्शनी से होने वाली आय का उपयोग मानवसेवा के कार्यों में किया जाएगा, संभवत: नेत्र जांच शिविर लगाने की योजना है। उन्होंने बताया कि इस निशुल्क प्रवेश वाली प्रदर्शनी में आंगुतकों के लिए लक्की ड्रॉ का आकर्षण भी रखा गया है।

बिहानी ने बताया कि बिग बुल डेल्टा कम्पनी की प्रभुख रुचि अग्रवाल इस आनंद मेले का शुभारंभ करेंगी। इसके अलावा माहेश्वरी सभा सहित अन्य समाज के वरिष्ठ सदस्य शामिल होंगे। आनंद मेले का मुख्य उद्देश्य महिला उद्यमियों को एक व्यवसायिक मंच उपलब्ध कराना है ताकि वे ऐसे मेलों में अपने उत्पादों व सेवाओं का प्रदर्शन कर सके।

उन्होंने बताया कि बहुत ही रियायती दरों पर स्टॉल दिए गए है तथा जरुरतमंद महिला उद्यमियों को बिना शुल्क लिए ही स्टॉल भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

मंत्री निर्मला कांकाणी ने कन्नड़ भाषा में मेले के बारे में जानकारी दी। कांकाणी व सुनीता मूंदड़ा ने बताया कि लगभग सभी स्टॉल बुक हो चुके है और इस बार स्टॉलों की व्यवस्थित व्यवस्था की जा रही है ताकि आने जाने वालों को सुविधा हो। ज्ञातव्य है कि 32 वर्ष पूर्व गठित यह महिला संगठन शुरुआत से ही मानवसेवा, सामाजिक सेवा व सहयोग सेवा के कार्य करते आ रहा है और अपने काम से एक अच्छा नाम कमाया है। वर्तमान में माहेश्वरी महिला संगठन में करीब 670 सदस्याएं शामिल है।

उ. कोरियाई खतरे को लेकर अमेरिका व द. कोरिया ने संयुक्त परमाणु प्रतिरोध दिशानिर्देश पर हस्ताक्षर किए

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

सियोल। उत्तर कोरिया के कारण बढ़ते परमाणु खतरे को लेकर अमेरिका और दक्षिण कोरिया ने पहली बार संयुक्त परमाणु प्रतिरोध दिशानिर्देश पर हस्ताक्षर किये हैं। उत्तर कोरिया की ओर से बढ़ते परमाणु खतरे की आशंका के मद्देनजर प्रतिरोध को और अधिक सशक्त बनाने के लिए यह एक अहम और बुनियादी कदम है वाशिंगटन में बृहस्पतिवार को उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के शिखर सम्मेलन से इतर राष्ट्रपति जो बाइडन और दक्षिण कोरियाई राष्ट्रपति यून सुक येओल ने 'संयुक्त परमाणु परामर्शदात्री समूह' बनाने के एक साल बाद दोनों देशों के गठबंधन की सराहना करते हुए इसे 'जबरदस्त प्रगति' करार दिया। दक्षिण कोरियाई राष्ट्रपति कार्यालय के मुताबिक, दोनों नेताओं ने कोरियाई प्रायद्वीप में परमाणु प्रतिरोध और परमाणु संचालन के लिए 'यूएस-आरओके दिशानिर्देश' को मंजूरी दी, जिस पर दोनों देशों के रक्षा अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को दिन में ही हस्ताक्षर कर दिये थे।

आरओके का मतलब कोरिया गणराज्य (रिपब्लिक ऑफ कोरिया) है, जो दक्षिण कोरिया का आधिकारिक नाम है। पिछले साल अमेरिका और दक्षिण कोरिया ने परमाणु संचालन पर संचार को मजबूत करने और विभिन्न आकस्मिक स्थितियों में अमेरिकी परमाणु हथियारों और दक्षिण कोरियाई पारंपरिक हथियारों को एकीकृत करने के तरीके पर चर्चा करने के लिए 'परामर्शदात्री निकाय' की शुरुआत की थी।

अमेरिका ने लंबे समय से दक्षिण कोरिया पर हमला होने पर उसकी रक्षा के लिए परमाणु हथियारों सहित अपनी सभी क्षमताओं का उपयोग करने का वादा किया है, लेकिन उसे संदेह है कि उसके पास इस बात की योजना नहीं है कि वह अपने एशियाई सहयोगी के लिए अपनी विस्तारित निरोधात्मक कार्रवाई कैसे करेगा।

परामर्शदात्री संस्था की स्थापना इसलिए की गई, क्योंकि उत्तर कोरिया ने अपनी मिसाइल परीक्षण गतिविधियों को काफी अधिक बढ़ा दिया है और संभावित संघर्षों में परमाणु हथियारों का उपयोग करने की खुलेआम धमकी दी है। दक्षिण कोरिया के पास कोई परमाणु हथियार नहीं है।

यूएई ने भारतीय मूल के 84 वर्षीय डॉक्टर के नाम पर सड़क का नाम रखा

दुबई। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की राजधानी अबू धाबी में एक सड़क का नाम भारतीय मूल के 84 वर्षीय डॉक्टर के नाम पर रखा गया है। यह देश के स्वास्थ्य क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान के प्रति श्रद्धांजलि है। नगर पालिका और परिवहन विभाग (डीएमटी) ने डॉ. जॉर्ज मैथ्यू के योगदान को मान्यता देने के लिए अबू धाबी में एक सड़क का नाम उनके नाम पर रखा है। यह नाम, यूएई के दूरदर्शी लोगों का सम्मान : स्मृति मार्ग परियोजना के तहत दिया गया है। इस परियोजना का उद्देश्य उन व्यक्तियों को सम्मानित करना है जिन्होंने देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अल मफराक में शेख शाकबूथ मेडिकल सिटी के पास की सड़क अब 'जॉर्ज मैथ्यू स्ट्रीट' के नाम से जानी जाएगी। अपनी यात्रा के बारे में बताते हुए डॉ. मैथ्यू ने कहा, जब मैं पहली बार यूएई पहुंचा था, तब बुनियादी ढांचे का विकास हो रहा था। राष्ट्रपिता दिवंगत शेख जायद बिन सुल्तान अल नाहयान से प्रेरित होकर मैंने लोगों की मदद करने के लिए खुद को समर्पित कर दिया। मैं बहुत आभारी हूं कि मेरे प्रयासों को मान्यता मिली है।

डॉ. मैथ्यू 1967 में 26 वर्ष की आयु में संयुक्त अरब अमीरात पहुंचे। शुरू में वह अमेरिका जाने की तैयारी कर रहे थे, लेकिन एक मिशनरी मित्र द्वारा अल आइन शहर की सुंदरता का वर्णन सुनकर वे वहीं रहने के लिए राजी हो गए।

नेपाल में 59 यात्रियों को ला रहा विमान 'रनवे' पर फिसला, कोई हताहत नहीं

काठमांडू, 12 जुलाई (भाषा) नेपाल की निजी विमानन कंपनी 'बुद्ध एयर' का एक विमान बृहस्पतिवार की रात लुम्बिनी प्रांत में उतरते समय 'रनवे' पर फिसल गया। एक मीडिया खबर के अनुसार वाहन में 59 लोग सवार थे। घटना में किसी भी यात्री के घायल होने की कोई खबर नहीं है। 'काठमांडू पोस्ट' समाचार पत्र ने रूपान्देही जिला पुलिस प्रवक्ता मनोहर प्रसाद भट्टा के हवाले से बताया कि 'बुद्ध एयर' विमान संख्या 805 बृहस्पतिवार रात लुम्बिनी प्रांत के सिद्धार्थनगर स्थित गौतमबुद्ध हवाई अड्डे पर उतरते समय कीचड़ में फंस गया, जिसके बाद वह 'रनवे' से फिसल गया। उन्होंने बताया कि चालक दल के चार सदस्यों समेत विमान में सवार सभी 59 यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। पुलिस ने बताया कि विमान रनवे पर है और हवाई अड्डा अभी बंद है। 'बुद्ध एयर' ललितपुर की एक निजी एयरलाइन है। यह नेपाल के भीतर घरेलू उड़ानों के साथ-साथ भारत, मुख्य रूप से वाराणसी के लिए अंतरराष्ट्रीय उड़ानें संचालित करती है।

भारत की जनसंख्या 2060 के दशक के शुरु में 1.7 अरब तक पहुंच जाएगी: संयुक्त राष्ट्र

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र ने कहा है कि भारत की जनसंख्या 2060 के दशक की शुरुआत में लगभग 1.7 अरब तक पहुंच जाने का अनुमान है और इसके बाद इसमें 12 प्रतिशत की कमी आएगी, लेकिन इसके बावजूद यह पूरी शताब्दी के दौरान विश्व में सबसे अधिक आबादी वाला देश बना रहेगा। बृहस्पतिवार को यहां जारी 'वर्ल्ड पॉपुलेशन प्रॉस्पेक्ट्स 2024' रिपोर्ट में कहा गया है कि आने वाले 50-60 वर्षों के दौरान दुनिया की जनसंख्या में वृद्धि जारी रहने का अनुमान है और 2024 में यह 8.2 अरब तक पहुंच जाएगी, जबकि 2080 के दशक के मध्य तक लगभग दुनिया की आबादी लगभग 10.3 अरब हो जाएगी। हालांकि, चरम स्थिति पर पहुंचने के बाद वैश्विक जनसंख्या में धीरे-धीरे गिरावट आने का अनुमान है और यह सदी के अंत तक घटकर 10.2 अरब रह जाएगी।

भारत पिछले साल चीन को पीछे छोड़कर विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बन गया था और 2100 तक यह इसी स्थान पर बना रहेगा। विश्व निकाय के आर्थिक एवं सामाजिक मामलों के विभाग (डीईएसए) के जनसंख्या प्रभाग द्वारा प्रकाशित संयुक्त राष्ट्र रिपोर्ट में कहा गया है, इस शताब्दी में भारत के सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बने रहने की संभावना है, हालांकि 2060 के दशक की शुरुआत में इसकी आबादी लगभग 1.7 अरब तक पहुंचने के बाद इसमें 12 प्रतिशत की गिरावट आने का भी अनुमान है। रिपोर्ट के अनुसार भारत की जनसंख्या 2024 में 1.45 अरब तक पहुंच सकती है। वहीं, 2054 में यह बढ़कर 1.69 अरब तक पहुंच जाएगी।

इसके अनुसार, यह भी अनुमान है कि सदी के अंत तक 2100 में भारत की आबादी घटकर 1.5 अरब हो जाएगी, लेकिन इसके बावजूद यह दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश बना रहेगा। भारत की जनसंख्या के अनुमान पर 'पीटीआई-भाषा' द्वारा पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए संयुक्त राष्ट्र डीईएसए के जनसंख्या प्रभाग की वरिष्ठ अधिकारी क्लेयर मेनोजी ने कहा, भारत वर्तमान में जनसंख्या के मामले में दुनिया का सबसे बड़ा देश है और पूरी शताब्दी में इसके शीर्ष पर ही बने रहने का अनुमान है। वर्तमान में भारत की जनसंख्या 1.45 अरब तक पहुंच सकती है और बाद में यह बढ़कर 1.69 अरब भी हो जाएगी।

मेनोजी ने कहा, ऐसा माना जा रहा है कि 2060 के दशक के आसपास भारत की आबादी चरम पर होगी और फिर इसमें धीरे-धीरे कमी आनी शुरू हो जाएगी। ऐसे में सदी के अंत तक भारत की जनसंख्या लगभग 1.5 अरब हो जाएगी, लेकिन फिर भी यह दुनिया में सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला देश बना ही रहेगा। रिपोर्ट में कहा गया है कि चीन की जनसंख्या वर्ष 2054 में घटकर 1.21 अरब तक पहुंच जाएगी। वर्तमान में चीन की आबादी 1.41 अरब है।

इसमें कहा गया, वर्तमान में चीन दुनिया की दूसरी सबसे ज्यादा आबादी वाला देश है, लेकिन 2024 से लेकर 2054 के बीच इसकी जनसंख्या के घटने का अनुमान है, जो इस अंतराल में 20.4 करोड़ तक पहुंच सकती है। इसके अलावा जापान की आबादी 2.1 करोड़, रूस की आबादी एक करोड़ तक रह जाएगी। चीन में प्रजनन के निरंतर निम्न स्तर के कारण यहां सदी के अंत तक किसी भी देश की तुलना में जनसंख्या में सबसे अधिक गिरावट (78.6 करोड़) होने की संभावना है।

रिपोर्ट में बताया गया कि वर्तमान में वैश्विक प्रजनन दर प्रति महिला 2.25 जीवित बच्चा है, जो 1990 के 3.31 जन्म से कम है। इसमें बताया गया कि पाकिस्तान की आबादी साल 2054 तक 38.9 करोड़ पहुंच जाएगी और इसी के साथ पाकिस्तान, अमेरिका को पीछे छोड़कर विश्व का तीसरा सबसे ज्यादा आबादी वाला देश बन जाएगा।

वर्तमान में अमेरिका दुनिया का तीसरा सबसे ज्यादा आबादी वाला देश है और इसकी कुल जनसंख्या 34.5 करोड़ है। वहीं, 2054 में इसकी आबादी 38.4 करोड़ हो जाएगी और यह दुनिया का चौथा सबसे ज्यादा आबादी वाला देश बन जाएगा।

'एक्स' पारदर्शिता का पालन नहीं कर रहा, 'ब्लू टिक' भ्रामक

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

लंदन। यूरोपीय संघ (ईयू) ने शुक्रवार को कहा कि एलन मस्क की कंपनी 'एक्स' के 'ब्लू टिक' मार्क भ्रामक हैं और कंपनी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पारदर्शिता और जवाबदेही के मानदंड को पूरा नहीं कर रही है। यूरोपीय संघ के नए सोशल मीडिया नियमन के प्रभावी होने के बाद से यह किसी प्रौद्योगिकी कंपनी के खिलाफ पहला आरोप है। यूरोपीय आयोग ने 27 देशों के समूह के डिजिटल सेवा अधिनियम के तहत एक्स (जिसे पहले ट्विटर के नाम से जाना जाता था) को लेकर अपनी जांच से प्रारंभिक निष्कर्षों को रेखांकित किया। डीएसए नामक नियम पुस्तिका नियमों का एक व्यापक संकलन है, जिसके तहत प्लेटफॉर्म को उपयोगकर्ताओं की सुरक्षा और अपनी साइट को सुरक्षित करने के लिए अधिक जिम्मेदारी लेने की आवश्यकता होती है। नियमों का पालन नहीं करने पर भारी जुर्माने का भी प्रावधान है।

विनियामकों ने 'एक्स' के 'ब्लू टिक' को लेकर निशाना साधते हुए कहा कि वे ''डार्क पैटर्न का गठन करते हैं जो उद्योग के सर्वोत्तम तौर तरीकों के अनुरूप नहीं हैं और दुर्भावनापूर्ण तत्वों द्वारा उपयोगकर्ताओं को धोखा देने के लिए उपयोग किया जा सकता है। वर्ष 2022 में मस्क द्वारा 'एक्स' को खरीदने के बाद, इसने आठ डॉलर प्रति माह का भुगतान करने वाले किसी भी व्यक्ति को सत्यापन चिह्न जारी करना शुरू किया।

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Adityan at Deviyin Kanmani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006.
Regn No. RNI No. : TNHIN / 2013 / 52520 **Editor : Bhupendra Kumar** (Responsible for selection of news under PRB Act.). Group Editor - Shreekant Parashar.
Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any such manner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.